भइया अपने गांव में

(बुंदेली काव्य)

रचनाकार

पं. बाबूलाल द्विवेदी

संपादक

डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

जानकी प्रकाशन

जानकी प्रसाद स्मृति सेवा समिति ग्राम छिल्ला (बानपुर)

जिला ललितपुर (उत्तर प्रदेश) 284492 भारत

प्रकाशक : जानकी प्रसाद स्मृति सेवा समिति ग्राम छिल्ला (बानपुर) जिला ललितपुर (उत्तर प्रदेश)-284402 के लिए पं. बाबूलाल द्विवेदी द्वारा प्रकाशित मोबाइल नं. 9838303690
ई मेल rn_dwivedi@yahoo.co.in

© : प्रकाशक

प्रकाशन वर्ष : 2011, पहला संस्करण
एक हज़ार प्रतियां

सहयोग राशि : एक सौ पचास रुपए मात्र

अक्षर-संयोजन : डॉ राकेश नारायण द्विवेदी, 245ए, 'शब्दार्णव' नया पटेल नगर, कोंच रोड, उरई (जालौन)
मोबाइल 9236114604

मुद्रक : अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-110 032
e-mail : arpitprinto@yahoo.com

ISBN : 978-81-908912-1-9

BHAIYA APNE GAON MEN
Poetry in Bundeli by Babulal Dwivedi
Edited by Dr Rakesh Narayan Dwivedi

बुंदेली माटी और उसके पुरखों की स्मृति को
सादर समर्पित

अभिमत

(1)

बुंदेली में वैसे भी लिखने की परंपरा क्षीण हो चली है, फिर नई पीढ़ी को ठेठ बुंदेली में लिखने का न तो अभ्यास है और न उनकी रुचि ही है। इसके साथ ही तेजी से हुए शहरीकरण का परिणाम यह हुआ है कि जैसे गांवों की अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज़ लुप्त होते जा रहे हैं, वैसे ही ठेठ बुंदेली की शब्दावली भी लुप्त होती जा रही है। इधर दूरदर्शन, कंप्यूटर, तकनीकी शिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी इसके लिए जिम्मेदार है। किसी भी साहित्यिक भाषा में जीवंतता के अनुपात का माप उसमें प्रयुक्त होने वाली शब्दावली है। इस प्रकार देखा जाए तो बुंदेली की ठेठ शब्दावली की रक्षा की इधर बहुत बड़ी जरूरत हो गई है। इस शब्दावली को बचाने का एकमात्र उपाय उसे रचना की भाषा बनाना है। इस दृष्टि से पं0 बाबूलाल द्विवेदी 'मधुप' जी का यह प्रयास स्तुत्य और सराहनीय है। इन्होंने 'भइया अपने गांव में' शीर्षक से रचे अपने बुंदेली काव्य में लुप्त होती हुई बुंदेली के मानक प्रयोगों द्वारा काल के गाल में विलीन होते जा रहे बुंदेली जीवन, उसकी संस्कृति, उसकी परंपरा और जीवन के विविध पक्षों का जो चित्र खींचा है, वह दस्तावेजी ही नहीं; बुंदेली काव्य परंपरा में एक मानक भी सिद्ध होगा। सच यह भी है कि उनके इन काव्यगत भाषा-प्रयोगों पर विस्तार से चर्चा की जानी चाहिए। इन्हीं पंक्तियों के साथ मेरी उनके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएं। इति शुभम्।

डॉ. रामशंकर द्विवेदी
साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार
एवं पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष,
उरई (जालौन) उ.प्र.

(2)

'भइया अपने गांव में' के कवि पं. बाबूलाल द्विवेदी 'मानस मधुप' अपने देश की स्वतंत्रतापूर्व की उपज हैं। इन्होंने बाल्यकाल से किशोरावस्था तक का जीवन गांव के उस जीवन में जिया; जिसमें ग़रीबी थी, परंतु असंतोष नहीं था; विभिन्न जातियां

थीं, परंतु पारस्परिक कलह और विद्वेष नहीं था; लोग रूखा-सूखा खाकर भी अपनी-अपनी मर्यादा में रहते हुए गांव के वातावरण में सौमनस्य बनाए रखते थे। गांवों में खेल-कूद, लोक-मनोरंजन के पारंपरिक साधन थे; जिनमें पैसे का कोई स्थान नहीं था। तीज-त्योहार भी सब मिल-जुल कर मनाते थे। समाज के शांत परिवेश में ऊहापोह नहीं थी।

देश आज़ाद हुआ, मानो एक अमृतबेल रुप गई परंतु न जाने क्या हुआ कि उसमें कुछ ही वर्षों के बाद चमकीले किंतु विषाक्त फल पंचायत राज चुनाव, आरक्षण और उससे उपजे भ्रष्टाचार आदि लगने लगे। फलस्वरूप समाज में दलबंदी, जातीय भेद-भाव, कलह और प्रतिहिंसा का उन्मेष होने लगा। समाज सदैव उद्वेलित और आशंकित रहने लगा। इस अवस्था की पूर्वावस्था से तुलना के कारण कवि के भावुक मन में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि 'कितै हिरा गए बे नोंने दिन.....।' कहीं-कहीं इस भाव-यात्रा में कुछ इतिहास आदि की बातें भी आ जाती हैं, जो विषय की दृष्टि से अप्रासंगिक और बेमेल सी लगती हैं; परंतु उन्हें परिस्थितियों से खिन्न एवं उदास मन के उच्छवास मानना चाहिए।

कृति के अंत में कवि भावुक होने की अपेक्षा बौद्धिक होता हुआ अधिक प्रतीत होता है। संभवत: यह उसका समाज की चेतना को मार्जन करने का प्रयास है।

मैं श्री द्विवेदी के उत्तरोत्तर विकास एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं तथा आशा करता हूं कि वे बुंदेली की व्यापकता के दृष्टिगत अपनी रचना-यात्रा जारी रखेंगे। शुभाकांक्षी।

डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी,
बुंदेली शब्दकोश एवं लोक साहित्यकार, पूर्व व्याख्याता
टीकमगढ़ (म.प्र.)

(3)

ई विज्ञान, टी वी उर कंप्यूटर के जुग में बुंदेली साहित्य उर संस्कृति की तरफ लोगन कौ झुकाव कछू कम होत दिखा रओ। सबइ जने नौ तेरा के चक्कर में पर कें कोलू के बैल की घांइं पिरत रत। ई महंगाई, बेरुजगारी उर भ्रष्टाचार ने तो आम आदमी की कमर टोर दइ। अब बताव ऐसे में किए लिखबौ-पड़बौ और सकत। एइ सें जा कैनात कइ जात है-

भूल गए राग रंग भूल गए छकड़ी। तीन चीजें याद रइं नौन तेल लकड़ी।।

ई हैरानगती में जो थोरौ-भौत लिखत-पड़त हैं सो भौत बड़ी बात है। कछू दिना सें बुंदेली में भौत काम होत दिखा रओ। पद्य तो आल्हखंड, ईसुरी सें लेकें आजनों

खूब लिखो गओ। और तो और इतै के विश्वविद्यालयन में बुंदेली पड़ाई जान लगी है। आकासवानी उर दूरदरसन के केंद्रन सें ईकौ प्रसारन होन लगो है। निबंध, नाटक, कहानी उर उपन्यास नों बुंदेली में लिखे जान लगे। कैउ पत्रिकां सुद्ध बुंदेली में छपी जान लगीं। अब बताओ ऐसे में हमाए पं0 बाबूलाल जू दुवेदी कैसें पाछें रै सकत ते। संस्कृत के भौत बड़े पंडित होबे के संगै बुंदेली साहित्य उर संस्कृति में जे खूब रचे-बसे हैं। मां बुंदेली की तो उनके ऊपर पूरी किरपा हैइ। भासा, छंद उर ब्यंजना की उनें पकड़ है। छिल्ला जैसे हलके से गांव में रैकें इत्तौ अच्छौ ग्रंथ लिखबौ कछू हंसी खेल नइयां। सांसी कइ जाय तो जौ उनकी एकांत साधना कौ सुफल है। ग्रंथ कौ शीर्षक पड़कें हमें लोककवि ईसुरी की कानात मौ पै आ गई -

ईसुर ओइ नीम में मानत ओइ नीम कौ कीरा

सूरा खों अपनी गांव की गलियां अपने-आप दिखान लगतीं। फिर दुवेदीजू खों अपनो गांव प्यारो काए नइं हुइए। उतै के नदियां, चरवा, पेड, पौरा उर पहरियन में कवि कौ मन रमो रत हुइए, जीकी झांकी ई ग्रंथ में दिखाई दै रई है। कवि ने ई ग्रंथ खों नौ खंडन में कैबे भर के लाने बांटो है, बातें तो जे सब अपने गांवनइ की आंयं। कवि खों सबसें जादां खबर अपने ऊ गांव के बचपन की आउन लगत-

बूँदें गिरीं झलैंयन खेलत सबखों संग सकेलत।
रेता में घरघोला बनरए कोउ मिटा रए ठेलत।।
खो-खो, बचरी कितउं कबड्डी कभउं चंगला खेलत।
बड्डुननो भोरे हलकन जे अपनो भपका पेलत।।
अपनों काम करत ते सबहो रत ते भले सुभाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।।

पैलां तौ गांव के लोगन में देसप्रेम की भावना भरी रत्ती। गांव के आदमी अपने देस के लाने मरवे मिटबे खों तइयार रत्ते। आज कौ आदमी तो अपनों उल्लू सूदौ करबे में जुटो है। आजकल देस में खूब तरक्की हो रई। आदमी आसमान में उड़न लगो। अकेले ई भारी प्रदूसन के कारन आदमी कौ जीबौ कठन हो गओ है। जेई बातें कवि नें कित्ती अच्छी तरां से कई है-

सबने कर लइ खूब तरक्की सरगै गैल लगा लइ।
पानी गओ पाताल फोर कें धरती पोली कर दइ।
चकाचौंद आंखन खों फोरत कान खों हल्ला-गुल्ला।।
जितै देख लो उतइ प्रदूसन हो रओ खुल्लम-खुल्ला।

धरती उगले आग, परत ओजोन की भई फटाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।।

कवि नें ई ग्रंथ में कहावतन कौ खूब प्रयोग करो है। वे इत्ते अच्छे कारीगर हैं कै जिनने बुंदेली कहावतन खों छंदन के सांसे में पूरी तरा सें फिट बैठार दई हैं, जीसें उनकी सोबा में चार चांद लग रए हैं। उनकौ ऐसो एक छंद देखबे लाक है-

कथरी ओड़े खूब पियो घी सबसे हिल-मिल चलियो।
नईं कोउ की औनी-पौनी ठिया सें कभउं न हिलियो।।
परिया कभउं फोरने होवे कुठिया में जिन फोरो।
काईं सी उतारियो जिन तुम, बनो सनेव न टोरो।।
दूद करूला करो 'मधुप' नइं परियो घाल-घलाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में।।

कवि ने अपनो उपनांव 'मधुप' धरकें अपनी कलात्मकता कौ परिचय दओ है। ई उपनांव के प्रयोग करे सें छंद खिले-खिले से दिखान लगे हैं। अपने गांव के नर-नारी भौतइ भोरे-भारे होत हैं, दिन उर रात काम करत में उनके मौ पै राम कौ नांव धरो रत। मौंका पै दूसरन की मदद करबे सें कभउं नइं चूकत। कजंत कउं सांसौ प्रेम देखने होय तौ इन गांव के भइया-बैनन के मन खों टटो कैं देख लो। मधुपजू तौ रात दिना उनई के संगै रै रए। उनसें अच्छो पारखी और को हो सकत-

मठा तीसरौ धौंन बुँदेलन बासन लैकें आ रइं।
मोरी गइया बियानी नइयां बैठी बिथा सुना रइं।।
लैकें संग भरा के चपिया बतरा-बतरा आ-जा रइं।
नाइं न कोउ सें करत बनत ती चाय बे रोजउं आ रइं।।
औसर आंय भावनों पुजरओ फूल मथानी भाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।।

जे क्रियाएं हरां-हरां खतम होत चलीं जा रइं हैं। ई ग्रंथ सें नई पीड़ी के लरका कम सें कम उनके नांव तौ जानतइ रैंय। हंड़िया में हात नइं डारो जात, अकेले सीतई टटोव जात। हमने तौ जौन सीत टटोव सो पूरी तरां सैं चुरो दिखानों। कितउं-कितउं भावन के कारन थोरौ-भौत मात्रन कौ हेर-फेर हो गओ। अकेलें पूरौ ग्रंथ भौतइ नोनों बन गओ है। जीकें बुंदेली कवियन की कतारन में बैठवे कौ सुयोग मिल गओ है, यों खुसयाली होत है- बऊत आपनो गांव? हमें तौ एक और भइया मिल गओ। जो हमाय संगइ संगै चलै, हमाइ ढेर सारी मंगलकामनाएं उनके लानें।

ई ग्रंथ के कछू अंस तौ विश्वविद्यालयन में पड़ाए जा सकत। आसा है कै वे ऐसे कैउ ग्रंथ लिखकें मां बुंदेली कौ भंडार भरत रेंय। ई भावना के संगै तुमाव बड़ौ भइया–

डॉ. दुर्गेश दीक्षित

वरिष्ठ हिंदी, बुंदेली साहित्यकार एवं पूर्व प्राचार्य, कुंडेश्वर (टीकमगढ़)

(4)

लंबी कविताएं लिखने का एक इतिहास रहा है, कुछ समय से लंबी कविताओं के स्थान पर छोटी–छोटी कविताएं लिखने का चलन चल पड़ा था। 'भइया अपने गांव में' शीर्षक रचना इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में बुंदेली बोली में रची प्रथम लंबी रचना है। वस्तुत: कवि की इस लंबी काव्य रचना का उद्देश्य दूरस्थ अंचल में स्थित ग्राम्य जीवन की सजीव एवं नयनाभिराम झांकी उनकी ही बोली–वानी (ग्रामीण बुंदेली) में प्रस्तुत करना प्रतीत होता है। कवि को अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

हरिविष्णु अवस्थी

अध्यक्ष, श्री वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद्, टीकमगढ़

समिति को आर्थिक सहयोग प्रदान कर, जिन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशन आसान किया—

		धनराशि (रु. में)
1. सर्वश्री	भैयालाल तिवारी प्रधानाध्यापक, जूनियर हाई स्कूल, निवासी साढूमल	5,100
2. ,,	मनोज कुमार तिवारी, प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, निवासी साढूमल	5,100
3. ,,	जयराम सिंह लोधी, प्रधान, ग्राम पंचायत, कुआगांव	5,100
4. ,,	रामरक्षपाल सिंह यादव, प्रधान, ग्राम पंचायत बानपुर	1,100
5. ,,	हरचरन नामदेव, अध्यक्ष नामदेव समाज, बानपुर	1,100
6. ,,	मुकुट सिंह लोधी, ग्राम कुआगांव (बानपुर)	500

जानकी प्रसाद स्मृति सेवा समिति परिवार आप सब द्वारा प्रदत्त इस सहयोग और शुभकामनाओं के प्रति हार्दिक आभारी है।

जिउ की बात

1857 ई में सुतंत्रता की पैली लराई की बरसगांठ पै छपी पोथी 'बानपुर विविधा' कौ विमोचन भारत भवन भोपाल में आयोजित जलसा में मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान जू कर रए ते। बुंदेली के जाने माने जनवा बिराजे ते, पोथी में छपी 'भइया अपने गांव में' कवता खों सुनकें वरिष्ठ साहित्तकार उर शासकीय महाविद्यालय छतरपुर के पूर्व प्राचार्य डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंयां' जू ने ई कवता की छकड़ियन खों बड़ो रूप देबे की मनसा जताइ। सबइ बिराजे जनवन ने सोउ थाप देकें अपनी इच्छा प्रगट करी।

सबकी मनसा खों सिर-माथे पै धरकें लिखबे लग गओ। धुन बनी रइ उर तीनक सौ छकड़ी लिख डारी। नोंनीं, करइं, गुरीरीं, जैसी कइ जाबे, जब जितै मौका मिलो सो लिखत रओ। इनइ में सुदार-संवार संगै चलत रओ। धरती के सौ नोंने के नोंने अपने भारत देस के जिउ बुंदेलखंड की ई बोली की सरसता पै आज पच्छम की फिलमन-सिनेमन की उगारी दुनिया की हवा-हिलोरन ने भौतइ बुरओ असर डारो है। अंगरेजी माध्यम सें उर ऊंची पड़ाई-लिखाई करबे बारे कछु लरका-बिटिया सोउ अपनी बोली प्रयोग करन खों अपनो हीन भाव दिखा रए, जा बात मानसिकता सें जुर जात है, जो औरउ जादा खतरनाक है। रस भरे बुंदेली बोलन कौ पतौ नइ पर रओ कै बे कितै बिलात जा रए। आपाधापी की चकाचौंद में पुराने जनवन और बड़े-बूड़न की किसा, कानियां, कैनातें, टउका, बुझउअल बातें बुजत सीं जा रइं। इनसें अलग जब सें नई पैरी भइ, तब सें बा अपनी पुरानी संस्कृति सें कट सी गइ। आजकल आदमी पोथियन के पड़बे सें मौ मोड़त जा रओ, पै ई के संगइ-संगै जा सोउ सांसी है कै पैलउं जैसौ पोथियन में लिखो नइं जा रओ, सेंत-मेंत में स्याबासी बटोरन चाउत।

ई पोथी में अपनो कछू नइयां, जनवन की बातें कैनातें, लोकोक्तियां, मुहावरे पड़कें, सुनकें, जोरकें, मिलाकें जनवन के हातन पोंचा रए। लिखबौ नै कछू पै

छपबौ सब कछू, सो ई खों छपाबे कौ बजन जिनने अपने मूंड़ पै लओ, जिनकौ अपनी मातृ बोली बुंदेली कौ प्रेम-हेम अपुन सब तक बगरो-बगरो फिर रओ, ई पोथी में उनके नांव उर पते छापे जा रए हैं। पोथी में सम्मती-सुझाव लिखकें जिन महानुभावन ने जो सहयोग दओ, सो मैं फूलो नइ समा रओ, उनको भौतइ आभार। चि0 'राजे' के माध्यम सें कोंच निवासी प्रसिद्ध कवि रामरूप स्वर्णकार 'पंकज', उपन्यास-कहानीकार सुरेंद्र नायक, भास्कर सिंह 'माणिक्य' तथा राठ निवासी डॉ. लखनलाल पाल ने अपनी सम्मति दइं, जो स्थानाभाव की मजबूरी सें पोथी में नइं जा पा रइं, हमें जा बात को कष्ट है। संगइ-संगै बुंदेलखंड के और कई वरिष्ठ साहित्तकारन सें हम व्यक्तिगत रूप सें क्षमाप्रार्थी हैं कै उनसें हम ई पोथी के लाने सुजाव-निरदेस ना ले सके। अंत में एक छकड़ी और अपुन सबइ के लानें प्रस्तुत है-

कोउ कबे हारैल की पकरीं लग रइं जे लकरीं सी।
मकरी जैसो तार, तीन सौ छकड़ीं जे अखरीं सी।।
मिसरी जैसौ स्वाद कितउं मीठी जउआ ककरीं सी।
चलत रबें मन्नात रबें हातन-हातन चकरीं सी।।
सबरी बिगरी बात बनें मन माफिक लियो बनाव में।
'मधुप' खों माफी देकें पड़ियो 'भइया अपने गांव में'।।
सबइ खों राम-राम।

जनवन के चरनन कौ चाकर
बाबूलाल द्विवेदी

संपादकीय

'भइया अपने गांव में' बुंदेली बोली में इसी अंचल के बारे में रचित मुक्तकों का संग्रह है। इन मुक्तकों में बुंदेलखंड की विलुप्त होती हुई लोकरीति का सुंदर संगुम्फन हुआ है। ऐसे समय में जहां आधुनिकता और उसकी उत्तरोत्तरता में परंपरा और संस्कृति के अवशेष मात्र बचे हैं, बुंदेली के इन पदों को पढ़कर हम पाते हैं कि हम इस दौर से कितना आगे निकल आए हैं। किसी संस्कृति के मूल स्वरूप का दर्शन आधुनिक समाज में दुष्कर हो गया है। समय परिवर्तनशील है, किंतु समाज उससे भी अधिक वेग से प्रतिपल बदलता जा रहा है। पल भर को भरपूर जी लेने की आकांक्षा मनुष्य में बलवती हो गई है। मनुष्य पुरातन से विच्छिन्न हो रहा है, आधुनिक पीढ़ी का एक वर्ग अपनी धरोहर को संजोने को अवांछित-सा मानने लगा है। ऐसे में इन पदों से गुजरते हुए पाठक को बरबस अपने जिए हुए समय का स्मरण हो आता है।

यह पद बुंदेलखंड के गांवों की संस्कृति को कुछ चुने हुए रूपों के साथ तो प्रस्तुत करते ही है, बुंदेली बोली के माधुर्य और अप्रचलित शब्दों का सुमधुर पाठ भी हमारे सम्मुख रखते है। भारत प्रमुखत: गांवों का देश है, अत: यहां के गांवों की समृद्धि होने पर ही देश की खुशहाली संभव है। बोली का मूल प्रयोग गांवों में हुआ है। भाषा के स्तर पर जो बोली जितनी अधिक संपन्न है और उसमें जितना अधिक साहित्य-सृजन हुआ हो, उससे हमारी राष्ट्रीय भाषाएं उतनी ही समुन्नत होती हैं। यह विदित है कि आधुनिकता के बढ़ते दबाव के बीच बोलियां समाप्त हो रहीं हैं। जिस बोली में व्यक्ति लिखना-पढ़ना बंद कर देते हैं, बोलने के स्तर पर वह बहुत अधिक समय तक ज़िंदा नहीं रह सकती। बोली का वाचिक रूप उसके लिखित रूप से संरक्षित और सुरक्षित रहता है, अन्यथा वह बोली अनेक दबावों के चलते अप्रचलित हो जाती है। आदिवासियों की भाषाओं के विलुप्तीकरण का यह प्रमुख कारण है। वर्तमान में पठनशीलता का पतन हो गया है। पुस्तकों और पत्रिकाओं का मात्रात्मक

प्रकाशन तो बढ़ा है, किंतु यह सर्वमान्य है कि गंभीर पाठक अब बहुत थोड़े ही रह गए हैं। आज की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में जो आंखों के सामने से क्षणिक रूप में गुजरा, उसी पर दृष्टिपात कर पाठक संतृप्त हो रहा है। पढ़ने के तौर-तरीक़े बदल रहे हैं, अब फेसबुक, ट्विटर और अन्य सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट भी पढ़ने के प्रभावी और उपलब्ध माध्यम बन गए हैं। इनसे जुड़ा पाठक तकनीकी की सीमाओं और सुविधाओं तथा सूचनाओं के अंबार के चलते थोड़े समय में ही अधिक पा लेने की चाह में है। इसलिए लिखना और अपनी प्रतिक्रिया देना भी अब त्वरित हो गया है, क्योंकि इन माध्यमों पर उसका भी अवसर सुलभ है। क्षण-प्रतिक्षण आ रहीं सूचनाओं के बीच मूल्यों और संवेदनाओं का ठहराव नहीं हो पा रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि यह ठीक ही है, जो अच्छा होगा, वही टिकेगा; किंतु वास्तव में कुछ जम नहीं रहा है तो क्या इसका अर्थ है कि कुछ अच्छा नहीं लिखा जा रहा है। बात वास्तव में ऐसी नहीं है, अच्छे को देखने की हमारी आदतें छीन ली गई हैं। हमें उपभोक्ता बना दिया गया है। यह विज्ञापन युग है और विज्ञापन का लक्ष्य है कि उपभोक्ता की जेब से पैसे निकालना है, चाहे विधि कोई हो। इसीलिए जब विज्ञापन मोहक अंदाज में किसी उत्पाद की ऐसी विशेषता बताता है जो उसमें है ही नहीं तो भी उपभोक्ता उसके झांसे में आ जाता है। कोई क्रीम किस तरह काले को गोरा कर सकती है, इसे विज्ञापन ही संभव बनाता है। इस तरह के विज्ञापन और विज्ञापनवाद से पार जाने की चुनौती संवेदनशील मनुष्य के लिए बनी हुई है। मनुष्य को संवेदनशील बनाने में साहित्य का महती योगदान होता है।

साहित्य का प्रभाव तब पड़े, जब लेखन और पठन चलता रहे, किंतु पठनीयता का बढ़ता अभाव इस दौर का एक अलग संकट है और यह ऐसा संकट है जो कई तरह की समस्याओं को जन्म देता है। पाठक अब महाकाव्यों और उपन्यासों को भारी भरकम मानता है, रिमोट संस्कृति जो चल पड़ी है। रिमोट के बटन को दबाने के क्रम में जो दर्शक को मिल जाता है, उसी में संतुष्ट होने की विवशता हो गई है। तुर्रा यह कि टेलीविजन के नियंता और प्रसारक दुहाई देते हैं कि जो दर्शक को पसंद है, वही दिखाया जा रहा है। यह वैसे ही है, जैसे सरकारें कहती हैं कि हमें पांच साल के लिए जनता ने चुन के भेजा है अत: हम जो करेंगे वही जनता के लिए आवश्यक और उत्तम है, जिसके परिणाम में महंगाई और भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है; किंतु इन सबसे अलग, इस संग्रह के मुक्तक पाठक को रमाते हैं लेकिन रिमोट की तरह इसका आनंद क्षणिक नहीं होता। यह मुक्तक पढ़कर पाठक सोचने को अभिमुख होता है कि हमारी संस्कृति में बहुत कुछ था, जो पूरी तरह संजोने योग्य है। संग्रह सबके लिए बोधगम्य बने, इसके लिए कुछ अपरिचित-से सात सौ चालीस शब्दों

का प्रसंगानुसार अर्थ दे दिया गया है, प्रयास यह किया गया है कि इस त्वरा-युग में पाठक को शब्दकोष का सहारा न लेना पड़े।

इस संग्रह के पदों को उनमें वर्णित सामान्य प्रवृत्तियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, फिर भी पाठक किसी भी मुक्तक को पढ़कर उसके साथ जुड़ा हुआ पाता है। इससे बुंदेलीतर पाठक के मन में बुंदेली बोली और साहित्य के प्रति ही लगाव उत्पन्न नहीं होगा, अपितु उसे अपने अंचल और आंचलिकता के प्रति भी आकर्षण और गरिमा बोध उत्पन्न होगा। इन पदों में बुंदेली लोक गाथाओं, इतिहास, टहूका, लोकदेवता, कहावतों और लोकोक्तियों, दर्शन-रहस्य, अहाने-अटका, किस्सा-कहानियों का वर्णन-स्मरण हुआ है, जिनके सहारे बुंदेली वर्तन, कृषि संपदा, वाद्य यंत्र, खाद्य पदार्थ, आभूषण इत्यादि की अप्रचलित शब्दावली का लालित्य-दर्शन हो गया है। मनुष्यों की भाँति शब्दों का भी अपना जन्म-स्थान तथा इतिहास होता है। शब्दों की यात्रा देश-विदेश में परस्पर होती रहती है। इस यात्रा में उनका स्वरूप परिवर्तित होना स्वाभाविक है। हिंदी में कितने ही विदेशी शब्दों की स्वीकृति हो गई है, इसी तरह अंग्रेजी में भी हिंदी सहित अन्य भाषाओं के अनेक शब्द मान्य हो चुके हैं। शासन और शासक अपना प्रभाव किसी भाषा पर छोड़ते ही हैं। ऐसे में, कदाचित्; जो भाषा की समझ कम रखते हैं, उनकी तरफ से यह कहा जा सकता है कि बुंदेली या किसी बोली के अप्रचलित शब्दों को आज के पाठक के सामने लाने का क्या तुक है? किंतु अधिकांश विद्वानों की भाँति मेरा मानना है कि हिंदी के पाठकों और श्रोताओं के बीच अपनी बोलियों के शब्दों, उनके बदलते अर्थ, रस, गुण और उसके मूल आशय से संबंधित जितनी जानकारी बढ़ेगी, उतना ही वे जीवन और कला के रस को खींचेंगे। साथ ही हमारी राष्ट्रभाषाएं संपन्नतर होती चलेंगी। आज की अनर्गल, अटपटी हिंगलिश या क़िताबी हिंदी के व्यवहार से दैनंदिन कामकाज भले चल जाए, किंतु ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनने के लिए किसी भाषा को परिचित और विपुल शब्द भण्डार जुटाना होगा।

हम जानते हैं कि भारतीय भाषाएं अपनी-अपनी उपभाषाओं अर्थात् बोलियों के अपरिमित भण्डार और संप्रेषणीयता के कारण रसपूर्ण एवं क्षमता संपन्न हैं, किंतु हमारी त्वरा और आलस्य ने उसे अभी तक पाठकों के सम्मुख पूरी तरह प्रस्तुत करने का काम नहीं किया है। प्राचीन भाषा-शास्त्री शाकटायन जब कहते हैं कि 'सर्वाणि नामानि आख्यातजानि' अर्थात् हर शब्द के भीतर उसके जन्म की कहानी छिपी होती है। शब्द का मर्म और इतिहास खोजने के लिए उसका क्रियारूप जानना आवश्यक होता है। अर्थ के सभी स्तरों को समझे बिना क्रियारूप नहीं समझा जा सकता है। शब्दों का क्रियारूप जानने की दृष्टि से बोलियां और उनका साहित्य सर्वाधिक

स्रोतपूर्ण माध्यम है। एक उदाहरण से बात अधिक स्पष्ट हो सकेगी। रोटी चाहे बेलकर कर बनाएं या हाथ से थपकाकर, मानक हिंदी में दोनों के लिए 'रोटी बनाना' कहा जाता है, किंतु बुंदेली में हाथ से रोटी बनाने की क्रिया को अलग से 'पै/पइ' कहा जाता है। इस संग्रह के एक पद की पंक्ति है–

'जितै परोसन की बउएं मिल कैं रोटीं पै रइं।'

समझने में मुश्किल तब और बढ़ जाती है, जब इस प्रकार के शब्द हिंदी और बुंदेली शब्दकाशों में उपलब्ध नहीं होते। यह शब्द संस्कृत चर्पटी (हाथों से थपकाकर आकार पाने वाली) शब्द का ही विकसित रूप है।

स्वाभाविक तौर पर किसी रचना में रचनाकार का आत्मवृत्त झाँकता है। इस संग्रह में भी कवि ने अपने बारे में यत्र-तत्र संकेत किए हैं। पारदर्शी ईमानदारी के साथ अपनी सीमाओं, अपने संदेहों, अपनी व्यथा और अपनी निष्ठा को कवि ने ध्वनित किया है–**'नौनी-बुरइ मांग, मांगबे में जौ मन मैलो भओ'।** और **'पैलउं पुरखन नै कै दइं फिर 'मधुप' बेइ पछ्यावं में।'**

कवि के वाग्वैदग्ध्य ने वर्णनों की भावुकता और कविताई के बोझ को रचना में फटकने नहीं दिया है–

'चैते चुका दियौ उदार को नुंगरौ हमें उठा दो।
मुंस की छाती एक बार जे कै रइं बेउ पटा दो'।।

संग्रह में हास-परिहास तो है, लेकिन कलात्मक गंभीरता एवं उद्देश्यपरकता के कारण उसने फूहड़ता और अश्लीलता का स्पर्श भी नहीं किया है, जो बोलियों पर एक आम-प्रचलित आरोप है। कहीं-कहीं चटू, दारी, छिनरा, छाकड़ जैसी गालियों का प्रयोग प्रसंगानुकूल है। दहेज समस्या, पर्यावरण प्रदूषण आदि की समस्या का रोचक प्रस्तुतीकरण हुआ है। मनुष्य के संघर्षशील जीवन में कैसी-कैसी क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं संघटित होती हैं, उनका चित्रण इस संग्रह में पढ़ते ही बनता है। एक बानगी देखिए–

'एक ब्याव में न्यौतें गए देखो दोउ समदी लर रए।
मों माँगे कल्दार गिना लए कोंठा तोउ न भर रए।।
मड़वा तरें बाप बिटिया कौ दो-दो अँसुवन रो रओ।
जित्ती हती हैसियत उत्तौ काड़ दायजौ धर दओ।।
लरका वारौ आँखें काड़ें उचकत नाक फुलाव में।'

इन पदों को पढ़कर हम यह भी कह सकते हैं कि रचयिता ने सजग प्रहरी की भाँति मनुष्य के हृदय को मानवता के प्रति आस्थावान बनाए रखने में अपना योगदान किया है। रचना की प्रतिध्वनि है कि उदारीकरण के इस दौर में गांव और शहर का

भेद समाप्त हो रहा है, शहर में शामिल होने या शहरी जैसा होने में गांव और गांव वाले धन्यता समझने लगे हैं, लेकिन शहरों की भयावहता को देखकर गांव में ही देश का भविष्य सुरक्षित नज़र आता है। इसे कुछ आलोचक नॉस्टेल्जिया मान सकते हैं, पर आख़िर इसके सिवा कोई चारा भी तो नहीं दिखता।

'भइया अपने गांव में' में गांव की विशेषताएं अपने यथार्थ स्वरूप में बिना लाग-लपेट के रखी गई हैं। गांव में इसी संग्रह के अनुसार ऐसा भी होता है-

'ऊपर सें मौ मीठी बातें मन में राखें मैल खों।
अगल-बगल में पाछैं जोतें पैलउं जोतैं गैल खों'।।

ग्रामीण अपनी बात को ठेठ अंदाज में कहने के आदी होते हैं। इसीलिए गांव की बोली और उसके मुहावरे की अपनी पहचान हुआ करती है, बाद के दिनों में गांवों में आधुनिकता का संक्रमण जिस तरह हुआ, उसका चित्रण भी इस संग्रह में दृष्टव्य है। यही नहीं दबे-कुचले वर्ग द्वारा विद्रोह के स्वर भी स्पष्ट रूप से इन मुक्तकों में दिखे हैं, जो रचयिता के युग-बोध का परिचायक है।

गांव में लोक बसता है। लोकमानस चीजों को समग्रता से देखता है। वह किसी की परवाह नहीं करता, उसमें बड़े से बड़े सम्राटों को सिखाने की क्षमता होती है। लोक प्रकृति और जीवन से निरंतर जुड़ा रहता है, वह अनुभव से सीखता है। लोक द्वारा रचित साहित्य ज्ञान की वाचिक परंपरा है। लोक में श्रद्धाभाव का साक्षात्कार होता है। जो विद्वान लोक को अनगढ़, अशिष्ट, असभ्य, अर्द्धसभ्य, जंगली, आदिवासी, मूढ़, अपढ़, गंवार या अज्ञानी मानते हैं, वे वास्तविकता से दूर हैं। यह स्थापित है कि सभ्यता का मूल स्रोत लोक ही है, शास्त्र ने उसका विकास किया है। शास्त्र ने अपना विकसित रूप फिर लोक को दिया तथा लोक में वह फिर आगे बढ़ा। गांव में जो लोक बसता है, वह व्यक्ति के मन को बाँधता है; संस्कारित करता है और उसे सामाजिक बनाता है। इस संग्रह में आईं लोक की उक्तियां व्यक्ति के मन को दुलारती हैं, डाँटती हैं, फटकारती हैं, व्यंग्य-वाणों का प्रहार भी करती हैं तो समझाती भी हैं। व्यक्ति का मार्गदर्शन करने वाले, उचित और अनुचित,, पाप और पुण्य, शुभ और अशुभ, सही और ग़लत के विवेक की प्रतिष्ठा इस संग्रह के पदों के केंद्र में आए 'लोक' द्वारा संभव हुई है। इसीलिए इन पदों को पढ़कर पाठक भावित होता है, क्योंकि लोक उसके भीतर भी बैठा है। उल्लेखनीय है कि लोग शब्द की व्युत्पत्ति 'लोक' से ही हुई है। आधुनिक और उत्तर आधुनिक व्यक्ति में भी अपने परिवेश और परंपरा के योग से युगों के संस्कार बसे होते हैं और जैसे धरती में छिपे हुए बीज अनुकूल ऋतु आने पर अंकुरित हो जाते हैं, वैसे ही आधुनिक मानस में भी वे मूल संस्कार ऐसी रचनाओं को पढ़कर जाग जाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि कोई

व्यक्ति अपनी परंपरा से कट ही नहीं सकता, वरना वह 'लोग' कैसे रहेगा।

व्यक्ति का मूल और आदिगृह गांव ही है, शेष बाहरी और बाद के हैं। शेष तो वैसा ही है, जैसे किसी शरीर पर पहने हुए वस्त्र। गांव संस्कृत 'ग्राम' का तद्भव शब्द है। ग्राम का वैयुत्पत्तिक अर्थ 'समूह' होता है। घरों के समूह को गांव कहा गया। गांव सभ्यता की प्रारंभिक इकाई है। सर्वप्रथम गांव अकृत्रिम रूप से अस्तित्व में आए, किंतु अब 'राही' ग्वालियरी के शब्दों में यदि कहें–'गांव गुम शहर की ज़मीनों में, आदमी खो गए मशीनों में। हर तरफ आग ही आग लगी क्यूं है, देश के सावनी महीनों में। आपका ये सफर ना तै होगा, बैठकर काग़ज़ी सफीनों में। आज पत्थर तलाशता हूं, कल ये गिने जाएंगे नगीनों में।'

फिर भी, गांव में आज भी अपनापा है; सौजन्य है; सौम्यता है; सरलता और सादगी है; सहयोग है; सहकार है; संवेदनशीलता है; संस्कार हैं। दुरभिसंधियां भी हैं, किंतु गांव से जुड़कर व्यक्ति बाहरी विशिष्टताओं के आवरण को उतार देता है और अपने को धरातल से संलग्न महसूस करता है। गांव से मृत्यु-पर्यंत जुड़े रहे बाबा नागार्जुन को अपनी छोटी सी कविता 'सिंदूर तिलकित भाल' में जब अपने तरउनी गांव के एक-एक उपादान की याद आती है तो पाठक भी अपने 'तरउनी' से जुड़े बिना नहीं रह पाता; क्योंकि नागार्जुन की पीड़ा है कि अन्यत्र जीवन भर रह लेने के बाद भी लोग प्रवासी ही कहेंगे। 'गांव' और 'लोक' शब्द दो हैं, किंतु इनकी अंतर्ध्वनि एक ही है। लोक जहां अपने मूल में बसता है, वह गांव ही है। किसी राष्ट्र को चलाने और दिशा निर्धारण के लिए लोक-स्वीकृति अनिवार्य है। इसीलिए अपने देश में लोकसभा और लोकतंत्र जैसे शब्द और व्यवस्था स्वीकृत हैं। भाषाशास्त्री पतंजलि ने भाषा संबंधी विवेचन में लोक को अंतिम प्रमाण माना है। धर्मशास्त्र में लोकविरुद्ध कार्य को अस्वीकार्य कहा गया– ''यद्यपि सिद्धं लोकविरुद्धं नाकरणीयम् नाचरणीयम्''। प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में लिखा है कि जो शास्त्र को जानता है; लोक को नहीं जानता, वह मूर्खतुल्य है ''शास्त्रज्ञोऽप्यलोकज्ञो भवेन्मूर्खतुल्यः''।

लोक में अनेकता और वैविध्य है, फिर भी उसकी अंतर्धारा एकता और समानता की है। विजित और विजेता दोनों का ज्ञान और संस्कृति लोक की व्यापकता में अंतर्भुक्त हो जाती है। यहां तक कि अभिजात चेतना जिसको कहा जाता है, वह भी लोक में मिलकर धन्यता का अनुभव करती है।

प्रस्तुत संग्रह में आए अनसुने-से शब्दों के दिए गए क्रियापरक अर्थ यथासंभव उनकी व्युत्पत्ति से जोड़ते हुए किए गए हैं, जिससे पाठक रचनाकार की भावभूमि से ही काव्य का आस्वाद ग्रहण कर सके। वर्तमान में हिंदी में यों भी सृजनशीलता घट

गई है, हिंदी की बोलियों के सामने तो उनके अस्तित्व का संकट मंड़रा रहा है। बोलियों के साहित्य में सामान्य पाठक तक सहजता से पहुँच सकने वाली ऐसी बोधगम्य भावपूर्ण क़िताबों की कमी है, जो अपने समय और समाज का यथार्थ एवं वास्तविक चित्रण करते हुए साहित्य की श्रीवृद्धि करें। यह संग्रह हिंदी साहित्य में इस अभाव की पूर्ति में किया जाने वाला एक सत्प्रयास सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। अंत में निवेदन कि ''चातक बिचारे सो न चूकनि परेखिए।''

'शब्दार्णव', उरई
गुरू पूर्णिमा, 2011

राकेश नारायण द्विवेदी

अनुक्रम

	अभिमत		5
	जिउ की बात		11
	संपादकीय		13
	अध्याय	*पद संख्या*	*पृष्ठ*
1.	कितै हिरा गए बे नौनें दिन	61	23
	क. गानें पैरें सदा सुहागिन	7	
2.	देस के लाने जियत-मरत्ते	37	43
3.	सरग-नरक सब इतइ देख लो	54	53
4.	किसा-कानियां सुनत-कहत्ते	40	68
5.	होत नांव चलती को गाड़ी	51	79
6.	काम करत उर राम भजत्ते	16	93
7.	देइ-देउता सब मिल मनाउत्ते	19	98
8.	कत्ते हुरयारे 'होरी है!'	4	104
9.	दरसन करत बैठ मन-मंदिर	14	106
10.	जा बुंदेली भूमि इतै की	5	110

सोरा गोटी खेलत ते जब बैठे बर की छांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में॥

ॐ कृष्णं वंदे जगद्गुरुम्

कितै हिरा गए बे नौनें दिन

सोरा-गोटी[1] खेलत ते जब बैठे बर की छांव में।
कितै हिरा[2] गए बे नौनें[3] दिन भइया अपने गांव में।।

जिनके चरनन गंगा निकरीं, सिर पै गंगा धारें।
सांप बिछौना डारे सोवें, और गरे में डारें।।
बेइ काम के बाप, काम खौं तनक हेरतन[4] जारें।
उमा लच्छमी संग 'मधुप' वे सबखों देयं सहारें।।
मां सरसुती सरन हो तोरी कलम न होय रुकाव में।
कितै हिरा गए बे नौने दिन भइया अपने गांव में।1।

राम! धनैयां-बान हात लैं मो मन आन पधारौ।
कलमस[5] भरौ होए जां जितनौं ऊखों दूर निकारौ।।
भैया लखन जानकीजू के सँग अंजनी दुलारौ।
आन बिराजौ मन मंदिर में हो जावै उजयारौ।।
दरसन करै 'मधुप' जब चावै झाँके आतम भाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।2।

हारै खेतै गई मताई कौंसें[6] ओली[7] भर ल्याई।
मूरा, बिएं,[8] खजूरा, खिन्नी[9] गावौं चीज अठाई।।
तेंदू डँगरा कभउं चीमरी ककरी काँद कचइयां।
कभउं जात्रा[10] में घिउ चुपरी परसत भर्त गकइयां[11]।।

---

1. सोलह गोटियों (कंकड़ों) से खेला जाने वाला खेल 2. गुम हो गए 3. अच्छे 4. देखते हुए 5. मैल 6. लंबी फलियां 7. गोदी 8. अमरूद 9. नीम के फलों की आकृति के मीठे फल 10. देवताओं की शोभा यात्रा/पूजन 11. बाटियां

खालै! कत मताई की ममता बसी 'मधुप' के भाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।3।

बूँदें गिरीं झलैंयन[1] खेलत सबखों संग सकेलत[2]।
रेता में घरघोला[3] बनरए कोउ मिटा रए ठेलत।।
खो-खो, बचरी कितउं कबड्डी कभउं चंगला[4] खेलत।
बड्डननो भोरे हलकन जे अपनो भपका[5] पेलत।।
अपनों काम करत ते सबहो रत ते भले सुभाव में।
कितै[6] हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।4।

पड़न जात ते सब हो मिल कें पड़ रए सबइ सकारे।
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः रे।।
क से लिखे कन्हैया-कान्हा, कारी कमरी बारे।
ख से खेल खिलैया खेलत गेंदें नदी किनारे।।
ग से गोकुल की गूजरि[7] कौ भर-भर गोरस खाव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।5।

घ से सब घनस्याम लिखत ते ड. लिखे संवारे।
च से चंद्रमुखी राधापति छ से हरि छलिया रे।।
ज से जमना नदी किनारे झ से झूलबे बारे।
पाटी पै खरिया से लिख रए जं खों बना-बना रे।।
नौंने लिखना 'मधुप' लिखत ते जैसें छाप-छपाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।6।

ट से संकट टारबे बारे ठुमकत-ठुमकत ठ रे।
ड से डोलत डगर-डगर ढ से ढूंड़त राधा रे।।
ण से अड़ जाबें कुंजन में त से ताल बजा रे।
थ से थपरी ठोकत ठांड़े दौर-दौर के द(ा) रे।

1. थोड़ी देर की वर्षा में भीगकर खेला जाने वाला खेल 2. इकट्ठा करना 3. रेत का घर 4. गोटियों और कोंड़ियों से खेला जाने वाला खेल 5. ऊपरी दिखावा 6. कहां 7. अहीर स्त्री

ध से ध्यान भरे मधुबन में धौरी[1] धेन चराव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।7।

न से नटखट जिनने नख पै गोबरधन खों धारे।
प से पीरा हरत दास की फ फोरें मटका रे।।
ब से बगरा-बगरा दइ खा भ भगतन के प्यारे।
म से मदनमुरारी य से यादव कुल उजियारे।।
र से राधारमण लगें नौनें ल लट-लटकाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।8।

बन्न-बन्न की धुनें बजा रए व सें वंसी बारे।
तालब्बी श मोरधनी ष दंतीसा के स(ा) रे।।
ह से हरि क्ष क्षत्रपति उर त्र से त्रास मिटा रे।
जो सबको कल्यान करत है ज्ञ से ज्ञान बता रे।।
ओलम[2] खरिया[3] पड़त गाउत ते सबखों आज सुनाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।9।

सवां-लठारा[4] की रोटी सँग खा भाजी[5] चौलैया।
कनकी, लसुवा, बारामासी, कनकऊवा, बौलैया।।
चौलइ, चैंच, कैरुवा, बथुवा, चंदूला, ललफूला।
पुंवार, ककोरा, त्योरा-त्योरी, डुगरू और करेला।।
रोटी-भाजी नौन की डरिया[6] खा रए बिना तनाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में।10।

लपटा, लटा, गुलगुला, चीला, अदरैनूं बसकारैं[7]।
तिलकूचा[8], रसखीर, इंदरसे[9], मुरका खा जड़कारैं।।

---

1. सफेद 2. वर्णमाला 3. लिखने या पोतने की सफेद मुलायम मिट्टी 4. कोदों/फिकरा की जाति के अनाज, 5. पत्तों से बनाया गया शाक 6. नमक की डली 7. बरसात का मौसम 8. तिली को गुड़ और अदरक के साथ कूटकर बनाए गए लड्डू. 9. चावल से तैयार मीठी मटरी

जेठमास में डुबरी, सतुवा, भूंजा, मयरी खा रए।
खुरमा, बतियां, पुवा, ठड्डूला, दरसन दुरलभ हो गए।।
गलगल-पच्चे[1] खूब उड़त ते रै गए बिसरे नांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 11।

मका जुनइ[2] के पुवा बनत ते और कनक[3] की गुजियां।
सरबत संगै तुरवा[4] खा रए रोटी बरीं पपइयां[5]।।
दूद डरो घोरुवा[6] खात जब फुर्र फुर्र फुर्रावें।
सामें बैठें ललचत ते वे मनई मन गुर्रावें।।
'मधुप' महेरौ, गुड़ला,गुड़का स्वाद हतो फुर्राव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 12।

कोंरीं उर गतकोंइं, पनफतू, पान्नन, लोल कुचइयां।
कुम्हड-खीर, सन्नाटौ, बाबर, मीड़ा, कड़ी, खजुलियां।।
खजरा चना मसूसा, देवली, बरीं, पकोइं, मगौरा।
फरा, कसार, पँजीरी, मीठे लगें खात गनगौरा।।
बेरन की लबदो उर बिरचुन करत कलेऊ चाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 13।

गोदन-बाबा[7] कबै आउत, जब छप्पन भोग लगावें।
मिलै हमें परसाद चाव सें सबहो मिलकें खावें।।
मालपुवा, खीचला, दइबरा, कूचा, मटरी ल्याकें।
फरा, ठेंठरा, लपसी, बबरा, गुना फूल उर फांकें।।
बनै सिंगारपाग तौ हल्ला हो गऔ सबरे गांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 14।

---

1. मौज-मस्ती 2. ज्वार. 3. गेहूं का आटा 4. उंगलियों से बनाई जाने वालीं सिवइयां. 5. बेसन की पतली कुरकुरी पूड़ियां 6. कोदों के आटे को मट्ठा में घोलकर एक प्रकार की गाढ़ी कढ़ी 7. दीवाली के अगले दिन होने वाली गोवर्द्धन पर्वत पूजा

तीन ककौरियां छै ककरा कउं खेलें पड़ा-छिकऊवल।
दुका-दुकउअल खेलत ते कउं ढूंड़ें ढुड़ा-ढुड़उअल।।
सूजा-पाटी, छुआ-छुअउअल खेलें चिंग-हिरल्ला।
चीं बोलत ते कितउं गल्ल की करत-फिरत हो-हल्ला।।
कितउं अठारा गोटी खेलें गुइयां जैसे दाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 15।

बकचा[1] बाँदें जा रए कौनउ खेलत लुवा-लुवउअल।
कउँ रामान महाभारत की बातें सुनत सुनउअल।।
अंडा डावली, कंचा खेलत कोउ-कोउ छुवा-छुवउअल।
कथा भागवत सुनी कितउं तौ मन धर लई धरउअल।।
पथरा धरें करेजे[2] पै अब देख-देख पछतांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 16।

जितै सपरना-घाट[3] ताल में जाकें रोजउं लोरें।
फेंदा, कांद, सिंगारे जाकें भर-भर दोना टोरें।।
कमल-कुमुदनी उर गदूल के डोंड़ी[4] सुंदा[5] फूला।
गोउत[6] चड़ा भोले बाबा खों बना देत ते दूला।।
उनकौ एक उतारन गजरा[7] पैर गरे घर आवं में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 17।

कर रए काम राम खों भज रए झुली-परै[8] भुनसारें[9]।
कौरें-दुपर[10] लौटती-जोरै[11] टीका-टीक दुपारे[12]।।
नईं कोउ सें दगा दिलासो ना कउं झगरा झाँसौ।
नईं कोउ कौ झूठौ सांसो बन रओ कितउं तमासौ।।

---

1. ढीली बँधी पोटली, जिसको कंधे पर लटकाया जा सके 2. हिम्मत 3. स्नान करने का घाट 4. फूल के नीचे की डंडी 5. सहित 6. फूलों की माला को गूँथना (पिरोना) 7. माला 8. संध्या का अधेरा होने पर 9. प्रात:काल 10. पूर्वाह्न 11. अपराह्न 12. मध्याह्न

काम करत ते राम भजत ते सबहो अपने भाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 18।

आईं बरातें नचे काँड़रा[1] कंसाउरी बजाकें[2]।
रवला[3] में रमतूला[4] बज रए फाग राई[5] में गाकें।।
कउं खसिया कउं नचै बेड़नी[6] ढिमरयाउं[7] कउं हो रई।
बन्नागीत बइयरें[8] गा रईं दिल्दिल-घोड़ी[9] नच रई।।
सबई बराती और घराती झूमें अपने भाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 19।

गिल्ली-डंडा कोऊ खेल रए कोउ खेल रए सेरौ[10]।
कितउं दिवारी गा रए मौनी लएं रत ते सब ऐरौ[11]।।
लगा डठूला[12] काजर मौनी मोंगे-मोंगे[13] नच रए।
कितउं ग्वाल ब्रजवासी गा रए कितउं दादरे हो रए।।
कोऊ गा रए, कोऊ बजा रए अपने-अपने दाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 20।

जीलैं, बारामासी, आल्हा, ख्याल और बिलवाईं।
कउं बाबा के गीत कजरियां गोट सोंग उर राई।।

---

1. एक विशेष नृत्य जो धोबियों की शादी में दूल्हा का फूफा या कोई अन्य मान्य व्यक्ति मध्ययुगीन पोशाक पहनकर केंकड़िया बजाता हुआ नाचता है 2. काँड़रा की संगत में काँसे की थाली जैसा बजाया जाने वाला वाद्य 3. बुंदेली लोक-नृत्य 4.अँग्रेजी 'एस' के आकार का फूँककर बजाने वाला वाद्य 5. बुंदेलखंड का प्रसिद्ध लोक-नृत्य, जिसमें नर्तकी नाचते समय राई के दानों की तरह चारों तरफ छितरा जाती है 6. ग्रामीण वेश्या 7. ढीमरों का (राग) 8. स्त्रियां 9.घुड़सवार का स्वाँग रचने के लिए बाँस की कमचियों और कागज़ से बनाई गई घोड़े की आकृति, जिसकी पीठ में बने छेद में कोई व्यक्ति कंधे पर टाँगकर हाथों में लगाम पकड़कर बाजों की धुन पर नाचता है 10. लगभग एक हाथ लंबे लकड़ी के डंडों (चाचर) से किया जाने वाला बुंदेली लोक-नृत्य। मोनियां नृत्य भी चाचर की ताल पर होता है 11. आवाज़ 12. नज़र से बचने के लिए माथे पर बगल की तरफ लगाया जाने वाला काजल का टीका 13. चुपचाप

कितउं सोहरे, आगन्ने, गा रईं नौरता[1] ढिरियां[2]।
भगतैं, भजन, धुरब औ पचरा भतरा उर बमभुलिया[3]।।
कितउं नारदी, हर गंगा कोउ हो रए मगन बधाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 21।

डिड़ खुरयाउ, चौकड़ी, टहुका, झूमर औ सखियाउ।
झूला झुलना, डेढ़ पदी ढप खड़ी फाग छँदयाउ।।
दलबंदी, फड़बंदी फागें बुंदेली की गा रए।
घटा बटा कें अतो-पतो नईं उरझा रए अटका रए।।
कोउ गा रए उर कोउ बजा रए धुन में पने लगाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 22।

डौरू, ढांक, नगरिया, मंबुइ, सारंगी, करताल।
गागर, गनी, कंजीर, गिलबई, खँजरी उर ढपताल।।
तुरइ, नगारौ, बिगुल, बाँसुरी, झांझ, मजीरा, ढोल।
ताँसो, रमतूला सब मिल कें नौ की नोबत बोल।।
नोबत बजी 'मधुप' सुन रए अब बा नोबत[4] कां पावं में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 23।

फाग बुंदेली बना ईसुरी गावे ठाड़े होत ते।
धीरे पंडा भांस[5] भरा रए लफ-लफ[6] आड़े होत ते।।
सुंदरिया गँगिया की ताने टोटे बाड़े होत ते।
फागुन में सुन ठठरी सें उठ मुरदा ठांड़े होत ते।।
गुथना कैसी लोड़ लगत ती 'मधुप' हिए के घाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 24।

---

1. आश्विन (क्वांर) मास की नवरात्रि के दिनों में कुमारी कन्याएं अपना अभीष्ट पाने के लिए गीत गाते हुए गौरी-पूजन करती हैं 2. जगह-जगह छेद किया हुआ मिट्टी का घड़ा जिसके अंदर जलता हुआ दीपक रखकर नोंरता के अंतिम दिन लड़कियां इसे मुहल्ले के हर दरवाज़े के सामने ले जाकर आशीष गीत गाकर पैसा तथा अनाज इकट्ठा करती हैं 3. छोटे छंदों वाले गीत 4. नौ वाद्य-यंत्रों के समूह को नोबत कहा जाता है 5. कंठ-स्वर 6. लचक-लचककर

इत्ते नौनें बोल बुंदेली और कितउं अब नइयां।
लर लओ तोउ मलाल काउ के मन में तनकउ नइयां।।
लरे कजंत कबें ससुरेजू उनने कइ सारेजू।
खुंस[1] काड़ लइ गारी दैकें तोउ पछाइं[2] कबैं जू।।
ब्यावन-काजन[3] रस बरसत तो सुन कें गारी नांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 25।

परी ओसरी[4] ढोर चरा रए जब हो गई दुपाई।
बर के तरें बरेदी[5] बैठे, उतइ राउन[6] बैठाई।।
मोरें नचें, कोयलें कूकें, झांकें लुक्खो[7]बाई।
हिन्नन की झोंटन की झोंटें धौरत देत दिखाई।।
अब तो गदा रेंक रए कउं-कउं, कउवा हैं कंव-कांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 26।

बारासींगा हिरन, मिरग कस्तूरी दै रए- करिया[8]।
बगला, बतख, हंस, जल कुकरी, सारस और लुखरिया।।
खरा, लवा, हरदिया लंगूरा, तीतुर, रोज, लड़इया।
गेंड़ा, सेर, लाल पांड़े, चीतरा, सोरहों गइयां।।
तिंदुआ, हिम तिंदुआ, कछवा, अब गीद न परत दिखाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 27।

चकवा, चकइ, मटामर, मैना, पड़कुल, ढेंक, मुनइयां।
गलगल, ब्या, सिलगिलौ, पिटकुल, लवा, डोंकिया, टुइयां।।
चील, बाज, कठकोला, मउखो, छपका उर केंकइयां।
चंडूला, हारेल, चेंपला, तोता, सोंन चिरइयां।।
नीलकंठ, चकोर, कौंड़ीरा, खंजन कभउं दिखाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 28।

---

1. खुन्नस 2. बाद में 3. विवाह आदि मांगलिक कार्यों में 4. बारी 5. गाय-भैंसों को चराने के लिए ले जाने वाला व्यक्ति 6. पशुओं का हार-खेत विश्राम का स्थान 7. मादा सियार 8. काले मृग का चर्म (कृष्णाजिन्)

कल-कल करैं किलोरें नदियां, झर-झर झिरना झर रए।
हार, रमन्ना, रुख-बिरछ, फल-फूल लदे सब फर रए।।
ढोर-बछेउ हरी धरती पै, चर रए- ऐंन अफर रए।
'मधुप' गोसली[1] करबे बैठे थन अबढाए[2] निचर रए।।
भारत सोने की चिड़िया तो दूद की नदी बहाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 29।

कोंड़ौ लगा अड़ाई लेंड़ी कौ[3] बैठे डींग बगारत।
अरया-तुरया[4] अब्बे-तुब्बे सुन कोउ अँसुवा ढारत।।
आंखें कोउ लड़ा रए सेंकत कोउ नटेर[5] रए बैठें।
इँदयारे में लोड[6] घाल[7] कोउ ठल्ली[8] मूंछें ऐंठें।।
आंखन कौ सनेव कां खों गव 'मधुप' हिए के घाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 30।

'सोन' समदेला लै गाड़ी जबइ लुआवे आवैं।
गांव भरे में घर-घर जाकैं राजी खुशी मनावैं।।
मौंन डरे गुर सने कुदइ के बने इँदरसे भावें।
सब सब रातन किसा कानियां कौंड़न[9] बैठ सुनावें।।
चड़ते नातेदार हते वे सगे के मान मनाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 31।

चौंतइया[10] पै कितउं बैठ कैं बन गए लाल-बुझक्कड़[11]।
माते कक्का के टउका[12] कएं बनकें माते[13] अक्खड़।।
मुल्ला नसरुद्दीन - गुरू दारा के - जान-बुझक्कल।
बिदी देयं निनवार[14] उदेरें[15] बेअक्कल की बक्कल।।

---

1. गायों को दुहने तथा उनको चारा आदि डालना 2. अपने-आप 3. (कहावत) अपनी अलग पंचायत लगाना 4. तू-तड़ाक करना 5. आँखों से क्रोध प्रदर्शन करना 6. पत्थर का टुकड़ा 7. मारना 8. फुरसत में 9. अलाव के पास 10. चबूतरा 11. जानकार 12. कहावत या मुहावरे से संबंधित छोटी कहानी 13. प्रमुख 14. सुलझाना 15. ऊपरी पर्त का अलग होना

अच्छे खां की ता[1] भूलत ती जब वे होवें ताव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 32।

रत्ती-रत्ती रोज खाएं तौ अस्सी मन कौ गँक्कड़ा[2]।
कित्ते दिन में खाय बता दो ऊपै बैठो मक्कड़ा[3]।।
चार लाख चौंसठ बरसैं उर छै दिन मइना तीन।
मक्कड़ गक्कड़ खा कें बैठो पनी बजा रओ बीन।।
बता बतउवल होएं कानियां सुनकें तुर्त बताव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 33।

कैउ तरा की सुन लो उनसें अटकउअल, भटकउअल।
चाय जनउअल, चाय बुझउअल, बतरउअल, उरझउअल।।
हूँका और बिना हूँका के, गा रए भाँस[4] भरउअल।
जुरकें सुनत हते चुटकउअल, उनकी किसा धरउअल।।
हेरें रत ते बाट[5] किलकिला[6] कैसी सबहो गांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 34।

किसा कानियां में पारे की लगाम लगवा कें।
धौ में जब दरयाव छोड़ दओ भगै छमाछम जाकें।।
ई पारै है घाँस और ऊ पारै ठांड़ो घुरवा।
सुद्द-साद[7] मोंगो-मोंगो बौ सऊत[8] जात है कुरवा[9]।।
ऐसें ऐसें सुनौ कानियां हूँका भरौ सुनाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 35।

सदा बिरछ सारंगा गा रए कउं बेताल पचीसी।
गाजे बाजे ढोला मारूं, सिंघासन बत्तीसी।।

---

1. आत्मविश्वास 2. बड़ी गकरिया/बाटी 3. नर मकड़ी 4. कंठ-स्वर 5. प्रतीक्षा करना 6. पक्षी, जो शिकार के लिए पानी में चोंच के बल सीधे गिरता है 7. लक्ष्य केंद्रित 8. सहता हुआ 9. खपरैल घर के छप्पर में लगने वाली सीधी लकड़ी

कउं कबीर टकसाल पंडवां गा रए ठोकत ठुमका।
डौरू बँदे चमाचम चमकत छुम छुम बज रए छुमका।।
ठिलठिलात कड़ जात रात ती अगन फूस और माव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 36।

जीजाजू फूपाजू चाएं कोनउं घर के आवें।
पुरा परौसी जनी-मान्स[1] हलके-बड्डे[2] बतरावें।।
जथा जोग सबसे हिल मिलकै चौलें[3] करें करावें।
बूरौ[4]-बरा[5] सबीदी[6] रोटी लुचई फुलकियां[7] चावें।।
हफता कड़त पतौ नई परवै उनकी बात बनाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 37।

सपरा-खुरा[8] फींच[9] कें उनके पाग-पिछौरा, कुरती।
काड़ ऊजरे लए रीठा के ऐंनइं[10] कर लई फुरती।।
गदरा[11] बेर, मकोरा गागए[12], टोर करौंदी फरती।
कछू खुंटिन[13] में, कछू खलीतन[14], खीसन[15] कर लइ भरती।।
खात जात, बतरात जात ते मीठ- मीठे चाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 38।

माझै[16] खेत मड़इया[17] ऊपर बैठे जुनइ[18] रखावैं।
धर कें लोड़ गुथनियां[19] में जब हम गुथना फन्नावैं।।
जुनइ अगनिया टोर भुंटियां मद्दी आंचन सेंकें।
गुट्टू[20] सें छटवाकें झट-झट हम संग्कन नों फेंकें।।

---

1. स्त्री-पुरुष 2. छोटे-बड़े 3. मसखरीं 4. बिना दाने की शक्कर 5. सिल-बट्टा से उड़द की दाल पीस कर कड़ाही से निकाले गए बड़ा; जो कांजी में गलाए जाते हैं 6. स्वादिष्ट 7. छोटी और फूली हुई पूड़ियां 8. हजामत के बाद किया गया स्नान 9. कपड़े धोना 10. पर्याप्त 11. अधपका 12. गहरे रंग के पके फल 13. अंटी 14. जेब 15. दाँतों के नीचे 16. बीच 17. गोल छत की छोटी झोंपड़ी 18. ज्वार 19. मिट्टी का ढेला रख-घुमाकर ज्वार, मक्का आदि की फसलों पर चिडियां उड़ाने के लिए फेंका जाता है 20. बांस की छोटी टोकरी

ताते-ताते गदा[1] खात ते सब हो संगै चाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 39।

एक पगइया[2] दिन चड़ आयौ संट[3] भए सब खाकें।
खेलै कितै धौर[4] के पोंचे रेंचकुवा[5] नो जाकें।।
छिन्न-मिनईयन[6] दो-दो गुइयां[7] झूलें जब सन्नाकें[8]।
रेंचकुवा रै जात हतो तो कछू देर टन्नाकें[9]।।
नौनों लगे झुलाव झूल जब बजै रेंच टिन्नाव[10] में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 40।

ठकरासी[11] बरात में इक दिन गए बराती बन कें।
भई ऊबनी[12] डेरा पौंचे आई पोनछक[13] भर कें।।
डीलन-डीलन[14] बिटिया बारे चले गए धर-धर कें।
औरए दिना गुटउवा[15] पर गऔ हेरैं खोर-सपर कें।।
लौलइयन[16] खबास[17] जू आए चलबौ होय चड़ाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 41।

भइं कौरातें[18] और बड़ारें[19] सकरे में समद्याने[20]।
हलके-बारे एक बजाऊं[21] अलग बैठ गए स्याने।।

---

1. गदराए हुए ज्वार के भुट्टे 2. बैल बाँधने वाली निश्चित नाप की रस्सी 3. भरपेट 4. दौड़कर 5. बच्चों का एक खेल (सी-सा) 6. हाथों का स्पर्श किए बिना (बिना सहारे के) 7. मित्र 8. तेज गति के साथ 9. असामान्य आवाज़; जिसमें ध्वनि अवरुद्ध हो जाती है 10. बड़ी देर तक आवाज़ निकलते रहना 11. ठाकुर 12. द्वारचार (शादी में होने वाली टीका रस्म) 13. द्वारचार के बाद बारातियों को दी जाने वाली बड़ी पूड़ी, जिसके पौन भाग को खाने से ही बाराती छक जाए 14. स्वयं 15. बुंदेलखंड के ठाकुरों में पुराने ज़माने में प्रचलित एक रिवाज़; जिसमें बारातियों के किसी अशालीन व्यवहार से नाराज़ होकर या बारात के धनी की औक़ात परखने के लिए कन्या पक्ष की ओर से बारात को भोजन-पानी सब बंद कर दिया जाता था। गांव में उन्हें कुछ नहीं मिलता था। वर पक्ष यदि सामर्थ्यवान् होता था तो वह व्यवस्था करता था, अन्यथा बारात भूखों मरती थी 16. संध्याकाल; जब अँधेरा छाने लगता है 17. नाई 18. बारातियों को दिया जाने वाला मिठाई-पूड़ी का भोज 19. भेंटें 20. (कहावत) अभाव होने पर भी पूर्ति करना 21. ओर

पलकाचार भाँवरें हो रइं नैग होय मनमाने।
पौंचे पंच बराती डेरन पंडित बिरद बखाने।।
कुंवर-कलेऊ की कोउ बातें कर रए राछ-बदाव[1] में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 42।

भौं पै परबौ, भूँकन मरबौ, आदी राते खाने।
जम की बैन[2] बरात होत, नइं भूल कभउं मा जाने।।
कोऊ कबै बरात जाबे की, रुवां-रुवां[3] भओ ठांड़ौ।
नाइं करत नइं माने बाँदें गाड़े सें पाड़ौ[4]।।
झक्कू- दैकें[5] सूद- बाँद[6] कें कुर्रू-दै[7] भग जाव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 43।

बर, बेरी औ बेल, बकायन[8], कैंथा, कवा, कुमेर।
आंवरि, जामुन, खैर, रिसल्लो, सौना, बयरो ढेर।।
तेंदू, पीपर, रेंवजा, सेमर, छ्योलौ, सैस, चिरौल।
मिलै न ढूंड़ै पीर पिराते अमरबेल, गुरबेल।।
साँसे पालनहार मान्स के अब कां मउआ पाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 44।

सब-सब रातन मउआ बीनै बैंच दाम घर भर रए।
टोर गुलैंदे[9] गुली[10] पिरा कैं तेल कंसलन[11] ल्या रए।।
इँदयारी रातन उजयारैं घर आँगन मुस्क्या रए।
कलजुग के ई कलप-बिरछ खौं काट कुलरियन[12] खा रए।।
काटो रूख[13] भलौ नईं हुइए मानो तुमें मनाव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 45।

---

1. विवाह में भांवरें पड़ने के बाद वर-वधू को डेरे (जनवासे) में लाकर वधू की ओली भरने और वधू के साथ आई स्त्रियों का स्वागत करने की क्रिया 2. वाहिनी (जम की धार किधों बरियाता- श्रीरामचरितमानस) 3. रोम-रोम 4. (कहावत) ज़ोर-जबरदस्ती करना 5. बेवकूफ बनाना 6. सीधे 7. तेज-दौड़ 8. महानीम 9. महुआ का फल, जिसमें एक या दो बीज (गुली) होते हैं 10. महुए के बीज 11. कनस्टर या टीन का पीपा 12. कुल्हाड़ी से 13. वृक्ष

हर–हरींस, आखता[1], अकुरिया, माझ, खील, मुठखील।
मुठिया, सोट, फरेतौ, कटरा, गाँगरो और गड़ील।।
फार, करे, काँटी दो–दो मिल कला सोरहौं[2] जानो।
सोरा कला कन्हैया जू कीं तुम सब हर में मानो।।
राम भजो कै स्याम न आवै अंतर कोनउ नाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 46।

बखर[3] में बारा कला राम की गिन लो जो मानो ना।
दो डांड़ी, मुठखील, हरैनी, मुठिया, लोट, निजौना।।
दो दतुआ, दो काँटी, पाँचइ पाँस तत्त जे मानो।
बखर राम कौ रूप हमारौ सत्त रूप में जानो।।
खेत–खरैना, कासी मथरा जितै चाव फिर आव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 47।

हारै ना हिम्मत हर में को लगो हरैना[4] कै रओ।
कभउं परै ना सीख हांत को हमें परैना[5] दै रओ।।
उठत भुन्सरां[6] खेत रखावे हलके बारे जा रए।
हे हरि आ! ओ हरि आ! हरिया हरिया टेर बुला रए।।
सरगै बैठे ललचत देवता 'मधुप' मगन निज भाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 48।

एक बेर हम मेला देखन गए ते कूंड़ादेव[7]।
गुट्टा[8] में एक जनों धरैं तो गुलिया–तेल[9] के सेव[10]।।

---

1. हल में अकुरिया और फरेतौ तथा हरींस के संयोजन स्थान पर लगाई जाने वाली पच्चड़ 2. पाँच लोहे के तथा ग्यारह लकड़ी के कुल सोलह पुरजों को जोड़कर हल बनता है 3. खेत का खरपतवार निकालने वाला लकड़ी का यंत्र 4. हल की हरींस में लगी आड़ी डंडी; जिसके सहारे हल को जुएं के साथ बाँधा जाता है 5. लंबी लाठी; जिसके एक सिरे पर कील लगी रहती है। इसे हल–बखर में जुते बैलों के पुट्ठों पर चुभोकर हाँका जाता है 6. प्रात:काल 7. भगवान शंकर का स्थान– कुंडेश्वर (टीकमगढ़) का पूर्व नाम 8. बांस की छोटी टोकरी 9. महुआ–फल का तेल 10. बेसन की बनी हुई तेल में तली नमकीन भुजिया

बुला-बुला कें हमसें कै रओ मनै लगै तौ लेओ।
लैकें खात फिरत ते फूले बरसन लग गव मेओ[1]।।
भींजन लगो गरे कौ गजरा[2] पैरें हतो पुजाव[3] में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 49।

धरो उतार खुटी पै गजरा हो गओ अड़ी-तड़ी[4]।
दुका-दबा लओ ऐन चाँप लओ बगर गईं पँखुड़ी।।
मौड़ी-मौड़न[5] की टोली सब गजरा पैर कड़ी[6]।
आंखन भरी डिमइयां[7] देखै मालिन एक खड़ी।।
भैया मोअ चड़ा आव गजरा एक दऔ पहराव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 50।

लैकें गजरा मंदिर पौंचे भोले बाबा हेरें।
गजरा खों बिरजे गनेस जू भगतन के सुर टेरें।।
हमें ना दिया कोउ ना दिया हते नादिया[8] नेरें[9]।
हमने उने चड़ा दओ गजरा संग के आँख तरेरें।।
जाओ उमर भर गजरा पैरो जो उनसे वर पाव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 51।

हारै[10] गए मकोर[11] की माड़र काट-छाँट घर ल्याए।
धर बदरौट[12] चोइयन[13] ऊपर पानेटा[14] छुलवाए।।
अरा अठारा उर बारा पईं आठ सलौवा पटिया।
गिंडा[15] करे गदेलो काटे भौंरा, भौंरी कटिया।।

---

1. मेघ का पानी 2. फूलों का हार (निर्माल्य) 3. पूजन के समय 4. विकृत हो जाना 5. लड़कियां-लड़के 6. निकली 7. आंखों में आंसू भरे हुए 8. भगवान शंकर का नंदी बैल 9. पास में 10. गांव की कृषि-भूमि या गोचर-भूमि 11. दूसरे वृक्ष के सहारे बढ़ने वाली कँटीली मजबूत झाड़ी, जिसके लंबे मोटे तने (माड़र) का उपयोग लकड़ी के रहँट बनाने में होता है 12. रहँट के खड़े घूमने वाले भौंरा का ऊपर सहारा देने वाली क्षैतिज रूप में थुमियों पर लगाई जाने वाली मोटी लकड़ी 13. छोटे पत्तों की बेलें 14. कुएं पर बीच में रखी जाने वाली मोटी लकड़ी; जिस पर रहँट की भौंरी चलती है 15. टुकड़ा

राँट ढाल मांडर से बाँधी दय पई अरा[1] कसाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 52।

भौंरी धर पानेट की रा में और दूसरौ मूड़ौ[2]।
धरो सोंदनी के मुड़ फोरैं भौंरा छेदौ ढूँड़ौ।।
कटरा लगा सलैया पटिया कौ चकला जो साँधे।
भौंरी के छेदे की कटरी चिपटी चकली बाँधें।।
खोद सोंदनी[3] चकला धरवे पाटें धरीं भराव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 53।

जर छ्योले[4] की थूल[5], पटा[6] कैं धरे बकोंड़े[7] जोरैं।
खजरी काट कनात पटा कैं मांर बैठ कें टोरैं।।
भाँजी गुनी लगाई ओइ में बाँद कुँठी किलवाई।
टन्नउवा कै साड़ेरे की बौलन[8] घरीं बँदाई।।
मार मरउवा मार समारत घरी घाव की घाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 54।

पनरा[9] को मौ छेद मिला कैं बरय[10] नों धरी पनारी।
बना बिरौल[11] बरा बाँदे फिर लामी मेलें[12] डारीं।।
मेल बदल कें राँट हाँक रए बैलन खों ललकारें।
हो रए खुसी खेत भौं देखत स्वापा[13] बँदो समारैं।।
मेलन[14] लगे खबर नई राखी राँट है बिना अमाव[15] में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 55।

---

1. भौंरी पर ठुकने वाले खड़े डंडे 2. सिरा 3. रहँट की भौंरी और भौंरा को संयुक्त रूप से चलाने वाले सलइया-पटिया घूमने के लिए गड्ढा 4. पलाश 5. पत्थर पर कूचकर 6. फाड़कर 7. पलाश की जड़ से निकाली जाने वाली रेशेदार पट्टियां; जिनसे रस्सी तैयार की जाती है। 8. लता युक्त वनस्पतियां 9. इसमें रहँट की घरियों का पानी गिरता है 10. खेतों में पानी ले जाने वाली नाली 11. सिंचाई नहर 12. खेत की सिंचाई के लिए बनाए गए छोटे-छोटे भाग 13. पगड़ी 14. रोकना 15. अवरोधक

भरीं घरीं अर्रानीं[1] पौंचीं कुआ तरी[2] लौं जाईं।
बिचके[3] टोर भगे तरपलिया बैल सैल[4] पंचाईं।।
मोंरी[5] लगी पगइया पकरैं हम सँग कुड़रत जावैं।
लगी खबर सबरे में सबरे धौरे झट्टइं[6] आवैं।।
हीर पीर में सबइ गांव के रत ते साथ-सहाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 56।

सानी माटी काटी-छाँटी बना बगल धर पावैं।
गुल्लू में डंडा डारैं जब चतरे चका चलावैं।।
करवा, कूँड़े-कुड़ियाँ, गागर, हंड़ियां, डार, डबुलियां
घैला, घरी, तौलिया[7], चपिया, दिया, मटकिया, मलिया।।
बनत हते परजापत[8] कै तैं रोजउं खेलन जाव मैं।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 57।

घट, खप्पर, कइले[9] औ तइया[10], तवा बना कें धर दए।
टेड़े चपटे उनें थाप सें ठोकत सूदे कर रए।।
गुरु कुमार घट सिस कबिरा की साखी याद दिला रए।
गागर भीतर हात सहारो ऊपर चोटैं कर रए।।
कच्चौ अवा[11] न रै जाबै कउं आवैं 'मधुप' पकाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 58।

उनें बुरव नइं लगै बनी जो छूमंदे की नाकें।
चीं[12] बोलत ते जरुवा-बरुवा[13] ठल्ले जौन दलाकें।।
नौनी बुरइ बिदनवा कैसउ टूट जात ती गाँठें।
जेइ अहानें[14] कैनातें[15] सुन निपटत तीं पंच्याटैं।।

---

1. भर-भराकर गिर जाना 2. सबसे नीचे (तल तक) 3. भड़क जाना 4. जुएं से बैलों की गर्दन को बाहर निकालने से रोक रखने के लिए लगाई जाने वाली लकड़ी की डंडी 5. बैलों की थूथन के ऊपर सींगों के पीछे तक बाँधी जाने वाली रस्सी। इससे पगइया बाँधकर बैलों को नियंत्रित किया जाता है 6. जल्दी से 7. मिट्टी की छोटी हांडी 8. कुम्हार 9. रोटी सेंकने वाला मिट्टी का तवा 10. मिट्टी की कड़ाही 11. मिट्टी के बर्तन पकाने का भट्टा 12. हार की स्वीकृति 13. ईर्ष्यालु 14. लोकोक्ति को स्पष्ट करने वाली कहानी 15. कहावत

तिरप तुरइयां सीं जो छोंकत[1] हो गए सूद सुभाव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 59।

मोंगा कै[2] मोंगा-मसान कै असल चिमैला, खग्गा।
ठलुआ, मौ न रुकाबें दिन भर, बेइ मुगरें-मुग्गा।।
तिंदुआ मिले सेर मिल जाबे नार चाय बिद जाबे।
'मधुप' करत बिनती हरि मोखों बिद न मुगरों[3] जाबे।।
सबकी संवर जैय पै उनखों का कै[4] कें समझांव में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 60।

कइ नइं करें मुकर जाबे को निठुअइं[5] नइयां ख्याल।
नाक में थूक देय तो इनखों नइयां कछू मलाल।।
कबें- थूक को ताल भरो, हम रोजउं ऊमें पैरत।
तनक देर में सूक जैय, लो नाक पै कित्तो ठैरत।।
इज्जत खों न डरायं 'मधुप' का कै कें का-का क्रावं में।
कितै हिरा गए बे नौनें दिन भइया अपने गांव में। 61।

क. गानें पैरें सदा सुहागिन

हांतन माँदी, गुदना, चुरियां दएं आंखन में काजर।
माँगन सेंदुर बूंदा सोहत, पांवन लगे महावर।।
बेंदी, बीज, दावनी, टिकली, झूमर, केकर, पान।
सीसफूल, सिरबेज, रेखडी, सिर सुहान पहचान।।
सिर की सोभा राखे, ढांके पिया कों प्यार सुभाव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में। 1।

---

1. (कहावत) अस्वाभाविक चंचलता का दिखावा 2. अथवा 3. ऐसा व्यक्ति; जिसकी सामाजिक पृष्ठभूमि तो कुछ भी न हो किंतु हर बात में टाँग अड़ाने का शौक हो, व्यर्थ मुंह उठाए घूमने वाला 4. कहना 5. अत्यल्प (बलवाची प्रयोग)

नाक में पैरें एगर्रा, नथ, डेमनकाठ, दुलरिया।
दुर, कांटौ, बेसर, कसयाऊ, कोऊ जड़ाउ पुँगरिया।।
कानन कन्नफुल उर झुमकी, कोउ कनौटी, ढारें।
लोंग, तरकिया, मुरकी, बिजरी, ऐरन लाला धारें।।
नाकन चना चबा लए दुसमन, जब जे हो गइं ताव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।2।

चंद्रहार, नौलखा, खँगौरिया, लल्लरि मोहन-माला।
कठिया, ठुंसी, हमेल, तिधानौ, हँसली, मटरी-माला।।
गुलूबंद, दुलरी, तिलरी, पंचलरी, सतलरी, छुटिया।
हा, कंठी, सर, सीतारामी, बीजासेन, तबिजिया।।
बनी गरे की हार रअत तीं कउं टकयाउर दिखाव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।3।

ककना, बघवां, बरा, बजुल्ला, बाजूबंद, बखुरियां।
गजरा, नुगरई, दौरी, डारैं, ऐंठीं, गुँजें गुजरिया।।
छन्नी, दस्तबंद, गुस्तानें, चूरा, चरीं, बगलियां।
हांतपोस, कोंचिया, पटेला और अँगूठी, छपिया।।
हांतन-हांतन धरै रहत घर चुरियन के पहराव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।4।

पायजेब, पैजना, टुड़रियां, गुलसन-पट्टे, छागल।
घुंसी, चूरापंखी, बाँकें, गच्छा, लच्छा, पायल।।
जेरैं, तोड़ा, कोऊ माड़र, झांझें, कड़ा, छिंगनियां।
छैल-चूरियां, चौंरीं पट्टीं, ऊपर पहर अनुखियां।।
पांवन की बेड़ी जिन जानो जे सिंगार सुहाव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।5।

पांवपोस, बिरमदी, कटीला, कोऊ टालें, बिछिया।
बोरनदार कितउं बिन बोरा चलतन बजत घुँगुरियां।।

गैल झार कें निगत हती तीं फूंक-फूंक के जांव में।
पांव में कांटो लगबो कैसो हार पौलिया[1] पांव में।।
का मजाल कोउ आंख उठाबे बुरइ नजर कै ताव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।6।

कम्मर पेटी उर करधोना, पेटी, चल, कड्डोरा।
गुच्छा, डोरा, बिछुआ, बजरा, झालरदार, कदोरा।।
नारी की सोभा, पुरुसन की गाढ़े दिन की सातीं।
सेबिंग बैंक किसानन की अब चीजें कितै दिखातीं।।
सोनो, चाँदी, ताँबो, पीतर 'मधुप' गिलट के भाव में।
गानें पैरें सदा सुहागिन भइया अपने गांव में।7।

1. स्त्रियों के पहनने के जूते

देस के लानें जियत-मरत ते

पड़ लिख बन हुसियार देस की सीमा जाएं रखावैं।
कितनउं होबै कठिन काम हिम्मत सें करैं करावैं।।
अपनी मात्रभूम पै दुसमन आँख उठा जो हेरैं।
माटी मिला चटा दएं धूरा फिर न दूसरे पेरैं[1]।।
भारत मां के उन पूतन में कछु इक नाव सुनाव मैं।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 1।

औरंगजेब बास्सा दिल्ली देवी सिंग चँदेरी।
ओइ समै में एक गांव में आन गिरानी[2] घेरी।।
बड़ौ आठ कौ, पाँच को हलकौ, छोड़े बाप मताई।
दो कुंवरन खों भाग भरोसौं कर गई हुलकी-माई[3]।।
अंगद मंगद नांव बुँदेला रत ते गौना गांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 2।

पले-पुसे पाड़े[4] नौ सीखे तीर और तरवारें।
ढाल हांत बत्तीस चलावौ तोमर छै पिरकारे।।
तेरा हात गदा के सीखें, पाँच हात भाला रे।
अड़तिस दांव, पेंच उनतालिस, लरबौ मल्ल अखारैं।।
पटा-बनेठी[5], बंदूकैं उर मुगदर[6] पाँच घुमाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 3।

---

1. परेशान करना 2. अकाल 3. संक्रामक रोग (महामारी) 4. पहाड़े 5. पटेबाजी के अभ्यास में काम में लाई जाने वाली वह लाठी; जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं 6. व्यायाम के लिए प्रयुक्त वजनदार उपकरण

धनुरवेद- उपवेद अथर्व कौ संगै पड़वौ-लिखबौ।
दसइ भाँत सें तीर चलाबौ और धनइयां धरबौ।।
दस सें कैसें लरै अकेलौ हौलदिली[1] सें दिखबौ।
दुसमन कितनउं लोब[2] देय पै कैसो झुकबो-बिकबो।।
रास्ट्रधरम सेवा लच्छन सब रग-रग भर गए भाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में।4।

फौज चँदेरी भरती हो गए दोउ हते हुसयार।
राजा मंत्री सेना रइयत[3] हो गओ सबसैं प्यार।।
अब्दुल समद हतो मुगलन को एक सिपहसालार।
किलौ टोरबे ल्याव चँदेरी अनी[4] पचास हजार।।
सैंद लगी प्रन करो बुँदेला घुसन न दैहों गांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में।5।

तुरकन ने कर दई चड़ाई किलौ घेर लओ रात में।
पाँच हजार सहरिया[5] जुर गए मंगद की इक बात में।।
भरकन[6] दुके, टौरियन[7] चड़ गए, पाछैं लग गए घात में।
लएं बंदूक, धनइयां, भाला, गुपती[8], बरछी हात में।।
देवी सिंग की देत दुहाई मिलौ जिए जो दाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में।6।

मार-काट पर गई अचीती[9], तुरकी सेना छिक गइ।
बाँके बीर सपूतन हातन मुड़ीं[10] खेत में फुक गइं।।
फाटक नौं[11] पौंचीं तीं फौजें परबस हो कें रुक गइं।
भारी भरकम फौज मुगलिया पौ फटबे तक चुक गइ।।

---

1. उत्साह पूर्वक 2. प्रलोभन 3. प्रजा 4. सेना 5. सौंर आदिवासी, जिनकी संख्या उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक ललितपुर जनपद में है 6. काली मिट्टी वाली जमीन में हो जाने वाला गड्ढा 7. छोटी पहाड़ियां 8. गुप्त रूप से छड़ी के अंदर रखी जाने वाली एक किरच या पतली तलवार 9. आकस्मिक 10. सिर 11. समीप

हाय दोइ अंगद मंगद भी पर गए दुसमन दाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 7।

कागद पै लिख हाल एक ने उए बान से बाँदो।
खबर किलै पौंचाबे धनवा चड़ा निसानो सादो।।
गिरो जाय धरनी पै, दौरो पहरे पै तौ माधौ।
चल दए खबर सुनतनइ राजा, आन निसानो सादो।।
खेतन देखें रुंड-मुंड दोउ बीर डरे ते घाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 8।

पाँच हजार उतै का होवैं जितै पचास हजार।
अंगद मंगद अमर भए भव दुसमन बंटाढार[1]।।
बचे खुचे भग गए मुगलिया तुरत छोड़ हतयार।
हो रई आज बुँदेलखंड में जिनकी जय-जयकार।।
पीसत जनी गाउत मंगादे अब नइ आउत सुनाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 9।

नरवर, पवा, चँदेरी, थूवौन, कुंडलपुर, कालिंजर।
ओंड़छा, बेरछा और छतरपुर, झांसी, दतिया, समथर।।
राज अजयगड़ और देवगड़ सबई धराई गैल[2]।
सत्ता केंद्र बुँदेलखंड के जे चउदा ते पैल[3]।।
मंगादे सब गाउत हते, अब भूले बर्रू-राव[4] में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 10।

झाँप[5] राख दए लरका-बारे टाँके[6] करैं स्वा कैं।
चकिया पीसत जनी गाउत तीं, जाते-गीत झुला कैं।।

---

1. नेस्तनाबूद होना 2. रास्ता 3. पहले 4. सपने में 5. आँचल की पर्दा में 6. बच्चों को गोदी में रखकर

उनके बोल सुहाने सुन कैं गैलन के गैलारे[1]।
फरकत बांय फरूरी[2] लै रए नए ज्वान छैलारे[3]।।
देस के खातिर मर मिटबे खौं रत ते बिना दबाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 11।

दिल्ली मुगल साह आलम औ मिरजाफर बंगाल।
अबध सुजाउद्दौला जिनसैं देस भऔ बेहाल।।
कठपुतरी गोरन के तीनउं कर गए देस गुलाम।
लार्ड क्लाइब से डलहौजी तक की-की कौ लएं नांव।।
कैनिंग भऔ गवन्नर- मच गई गदर- सहर उर गांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 12।

दिल्ली, मेरठ, अबध, कानपुर और बरेली खासी।
रानी लछमी बाइ कर गई नांव अमर जा झांसी।।
नाकन चना चबा दए, झांसी रानी ने ह्यूरोज खों।
बकचा बाँदैं, लरी, धरैं करयाई[4] बेटा बोझ खों।।
झलकारी कोरिन रानी की रत ती साथ-सहाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 13।

लछमनराव प्रधानमंत्री ते जज ते श्री भोपटकर।
बहरुद्दीन, गुलाम गौस खां, बख्सी, अली बहादुर।।
मोरोपंत, तातिया टोपे और जवाहर सींग।
रगनाथ सींग, जमां खां भैया, डाकू सागर सींग।।
मंत्रीमंडल में रानी के रत्ते हुकुम बजाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 14।

कासीबाई, जूही, मोतीबाई, सुंदर, मुंदर।
मानवती, बखसिनजू सब मिल करें खुसामद दिन भर।।

---

1. पथिक 2. सिहरन 3. बनठन कर घूमने वाले युवक 4. कमर

मरदन सींग बानपुर राजा जिनैं वे अन्ना कत्तीं।
जिनकी दम पै लछमी बाई बेखटकीं सी रत्तीं।।
हात दायनों बने रहत ते गोरन खों भगवाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 15।

बावन पोलें[1] हतीं बानपुर की सबरे[2] में छानौं।
जौन पोल हो दुसमन जाबै उतइ ढेर भओ जानौ।।
सबइ कुरीं उर सब बिरादरीं नइं कातें[3] कोउ नानौ[4]।
जौ बुंदेलखंड कौ पानी बानपूर सौ बानौं[5]।।
मर्दन मीड़ी[6] फौज फिरंगी मारइ मार मचाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 16।

फौज में भरती भए सौंरिया उनें परेड कराबे।
जान बैपटस कय अटेंसन लैफ्ट राइट चिल्लाबे।।
बे का जाने भोरे-भारे बा अंगरेजी भाखा।
उनै तौ दुसमन मरै, मारबे की एकइ अबलाखा[7]।।
राजा सोसैं कैसें इन खों अब तइयार कराव मैं।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 17।

पांड़े[8] जुगत बता दइ इनसें ठेठ बुँदेली बोलौ।
कओ सबरे हो एक पाँत में हौलें-हौलें[9] हो लो।।
किले ताईं[10] मों कर लो! सब हो तुबक[11] कँदा पै धर लो।
मरदन सींग बिराजे अपने राजा जै-जै कर लो।।
जे रँगरूट ज्वान लरबे-मरबे भए एक जमाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 18।

---

1. गुप्त भेद 2. सर्वत्र 3. काटना-कुतरना 4. महीन 5. बाणासुर, जिसके नाम पर ललितपुर जनपद का सर्वाधिक जनसंख्या वाला गांव 'बानपुर' बसा। आन, बान और शान की त्रियुति में से बान, जिसका अर्थ 'चमक' है 6. मसल दी 7. अभिलाषा 8. ज्ञानी 9. धीरे-धीरे 10. तरफ 11. बंदूक

बातें बना जीत लव पटना, कलकत्ता, मदरासी।
लातें दै लाहौर लूट जब आए फिरंगी झांसी।।
बीर हती ती लछमी बाई जी में गुड़ी[1] न गाँसी[2]।
अँगरेजन खों बन गई रानी झांसी गरे की फाँसी।।
खुद मर गई मार अँगरेजन नइं आई पकराव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 19।

फौज फिरंगी की सागर से चल बरौदिया आई।
उनकी करी कठिन की रन में खड्गन से पौनाई[3]।।
गिनती के लै ज्वान संग जब बाज-झपट्टा मारो।
फौज फिरंगी कुचर पौंच गए जां सागर को द्वारो।।
भूप बानपुर वारे निसदिन बसत 'मधुप' के भाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 20।

नरयावलि, खिमलासा, सागर सुगबुगाट सुन पावै।
भै खा भगीं फिरंगी फौजें भरभरात भर्रावैं।।
गड़गड़ाट तोपन की सुन कें दुसमन गड़गड़ जावै।
थरथर कँपें सुनै जो तड़तड़ धरती नों थर्रावै।।
मरदन सींग सरग राजा भए अमर बानपुर नांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 21।

गांव भोजला, सद्दू कोरी की बिटिया झलकारी।
अकल रूप रंग रानी कैसो पूरन की घरवारी।।
लगा छलाँग किले सें रानी- भगी- फौज ने रोको।
मैं हों रानी! झलकारी ने तुरतइ आकें टोको।।
कड़ गइ रानी गोरे उरझे झलकारी झलकाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 22।

---

1. छल-कपट 2. छुपा हुआ क्रोध या प्रतिहिंसा का भाव 3. आतिथ्य

सिवनी जिला गांव मनकोड़ी राव ते सींग जुझार।
बेटी हती अवंतीबाई लोधी कुल उजयार।।
ब्याव बिकरमाजीत संग भव, बनी रामगड़ रानी।
अँगरेजन संग लरीं-मरीं निज कर गइं अमर कहानी।।
कमल-फूल, रोटी बाँटत ती जाकें गांवन-गांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 23।

कीरत सिंग चंदेल की बेटी, दुरगावति महरानी।
दलपतसाह मरे भइ बिधवा, गड़ा मंडला रानी।।
अकबर, सेनापत आसफखां, जब कर दई चड़ाई।
बेटा बीर खों बकचा बाँदें, दिन भर लरी लराई।।
मरी देसहित अमर हो गई जल नरबदा चड़ाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 24।

कर बसूल बे साहजहां कौ सेनापती सराफत।
दो पहार के बीच हो कड़बो ऊखों पर गइ आफत।।
नाक कटू गड़वाली रानी गंगा चड़ कें घोड़ी।
एक लाख ती फौज सबइ की नाक काट कैं छोड़ी।।
रोउत गाउत नकटा हो लौटे बचे खुचे पछताव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 25।

नचनारी[1] ती नांव अजीजन, कत्ती खुले बजार।
देस के खातिर लरबे मरबे खों जो है तइयार।।
बेइ हमाए और मैं उनकी पइसन नइं दरकार।
''नाना साब कानपूर की जै'' बारांगना[2] पुकार।।
लै तरवार बनी रनचंडी, गोरन मुंड़ी कटाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 26।

1. नृत्यांगना 2. वेश्या

धार राजमाता श्री द्रोपति तुलसी गड़ की रानी।
बीरांगना जैतपुर- राजो- पारीछत महरानी।।
देस बचाबे भइं सहीद, भइ उनकी अमर कहानी।
धरती भर में ढूँड़ौ मिलने नइयां उनकी सानी।।
सुनकें होत रोंगटे ठाड़े अंग-अंग फरकाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 27।

गदर में एक सौ छै खों फाँसी, दइ गोरी सरकार।
हते बानबै उनमें केवल सिक्ख और सरदार।।
सिडनी रोलट ने बनाव तब इक अँदरा कानून।
बिना अपील, दलील, बकील के जेल भरीं दिन दून।।
करो बिरोध देस भकतन ने दुसमन दबे दबाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 28।

बंद करे पंजाबी नेता किचलू (डॉ. सैफुद्दीन) उर सतपाल।
जलियां वारे बाग में जनता जुर गइ भीड़ बिसाल।।
सोरा सो पचास ज्वानन खों डायर हुकुम सुना दव।
तीन सौ तीन नंबर की गोलिन सें सबखौं भुँजवा दव।।
बीस हजार- हते बैसाखी परवी, पुण्य कमाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 29।

एक हजार मरे, घायल भए उनमें तीन हजार।
देस दहल गव सुन कें इत्तौ भारी नरसंघार।।
डरो-भगो रोलट ब्रिटेन गव, बनो मान तलवार।
इमरतसर के ऊधम सिंग खौं नइ हो सकी सहार[1]।।
लेत फरूरी क्रान्तिवीर कय बदलौ लैबे जांव मैं।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 30।

---

1. सहनशीलता

जुगत-जतन सें लंदन पौंचो, करी न देर, सकेर[1]।
मौका पाकें गोली दागीं, दुसमन हो गओ ढेर।।
चलो मुकदमा फाँसी झूलत हँस-हँस कै गओ नामी।
अब मताइ नइ तोय भोगनें, जादां दिना गुलामी।।
अपनों काम हतो सो हो गओ, करौ जिए जो भाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 31।

नेहरू आग सें खेलबो कत्ते गोरी फौज निहार।
अँगरेजन सें लरबौ भइया है दुधार तलवार।।
गाँधी जू अँगरेजन से कंय 'भारत छोड़ो' भग लो।
लोकमान्य कंय नौकर बन कें रनें होय तो रै लो।।
पाछैं कोउ पछलियो जिन[2], हम जीतें कदम मिलाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 32।

कटक में जनमे ते नेता जी नांव सुभास चँद बोस।
जैहिंद कै-कैं अँगरेजन के उड़ा देत ते होस।।
आजाद हिंद फौज में कर लए फौजी साठ हजार।
''खून हमें दो आजादी लो'' कत्ते बे ललकार।।
भारत मां खौं फूल की जाँगा अपनी मुंड़ी चड़ाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 33।

नूर समद खां- रुनियां के नवाब- फाँसी पै लटके।
आंखन की किरकिरी सिक्ख तब अँगरेजन खौं खटके।।
चँदसेखर आजाद, भगत सिंग, बाल, लाल और पाल।
जिनके जिउ[3] के बदलें हम सब आज न भए फटहाल।।
देस धरम बलि बेदी चड़ गए 'मधुप' मस्त गुन गाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 34।

---

1. जल्दी 2. नहीं 3. मन, प्राण, जीव

तेइस फरवरी अट्ठारा सौ छियत्तर मंगलवार हतो।
महरास्ट जनपद अमरावति शेण गांव में जनम हतो।।
झिंगुरी धोबी की पतनी सक्खू सुत डेबू नांव हतो।
सात बरस कौ छोड़ बाप ने सरगवास अपनों लओ तो।।
बे अनाथ बेटा मताइ जा बसे दापरे गांव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 35।

मम्मा चंद्रभान के बेटा बाली के सँग खेले।
सत्तरा साल उमर में डेबू हो गए हते सँगेले।।
धना कमालपुर की बेटी कुंता उनकी बउ बन गई।
करजा बड़ो, जिमीं[1] मम्मा ने लिख कें गानें[2] धर दई।।
कर रए काम चुका रए करजा तौउ न आव चुकाव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 36।

छोड़ भगे घर दोर गांव रिन मोचन कर लओ डेरा।
पूरणा नदी किनारे मंदिर हो गओ हतो खड़ैरा[3]।।
बनवा उतइ सिवालौ रैकें करें समाज सुधार।
गाँधी अंबेडकर के संगै करो देस उद्धार।।
संत गाडगे अमर 'मधुप' मेला हर साल भराव में।
देस के लानें जियत-मरत ते भइया अपने गांव में। 37।

1. ज़मीन 2. गिरवी; जिसमें नक़द धन के बदले भूमि जेवर आदि ऋणदाता के अधीन कर दिया जाता है 3. खंडहर

सरग–नरक सब इतइ देख लो

आज आंख को काजर लेबैं कब तौ आंख दिखावें।
बनबे खौं अगवान[1] आकरे[2] बन कै आँगें आवै।।
कीसैं कितै कनें का कैबें अब्बे–तब्बे काबैं।
कतर–ब्यौंत करकें बिस पादें चड़त बेल चटकावें।।
दूर सदा इनसें रइयो नइं मिले कछू ढिंग[3] जाव में।
सरग–नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 1।

देखत की नौनी बउएं पै राँटा कतै न पौनी[4]।
कबें आँचरन बोझ धरो जो, हैं सुकयार सलोनी।।
नचनारी नौं नाक सिकोरत, खुद फरका रइं कूले।
कौन भरम में राजा भूले, घर–घर मटया चूले।।
आदी राते बेला फूले, कत कै किए चड़ाव में।
सरग–नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 2।

सरग मूंड़ पै धरैं निगैं जे इतरा के खरया[5] कें।
आँग दिखा उन्ना[6] पैरें धर लोक लाज घरया[7] कें।।
जेठन सें अरया[8] रइं गारीं सुनें जिठानी सासें।
अपनइ जाँग उगारौ लाजन–मरों कहौं सो कासैं।।
मोंगे–मोंगे देख 'मधुप' नइं धरो कछू बतयाव में।
सरग–नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 3।

---

1. पहल करने वाला 2. राँटा– रुई कातने का एक प्राचीन यंत्र, पौनी– रुई 3. समीप 4. (कहावत– साधारण काम भी पूरा न कर पाना) राँटा– रहँट, पौनी– सूत कातने के लिए बनाई जाने वाली रुई की वर्तिका 5. उत्पात 6. ऊर्णा (पुराना अर्थ– ऊनी वस्त्र) 7. सुरक्षित ढंग से 8. उकसाते हुए

लवा[1] फसें तीतुर फँस जाते फाँसे जात बटेरैं।
रात भरे वे पेट रीत[2] गए दिन भर आंख नटेरैं।।
खीर न खांय मनायं जायं जे जूँठी पातर चाटें।
कओ तौ भौकें ना दर्रावें मसकइं[3] आ कें काटें।।
बलम[4] आँदरौ कीखौं गुइयां कर सिंगार बताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 4।

स्यानी चकिया पीस, चून टाठी[5] में धर कें लै गइं।
जितै परोसन की बउएं मिल-जुर कैं रोटीं पै[6] रइं।।
जे धरयाईं 'पै दियो मोरीं' फिर पूछन गइ 'पइं'।
गइ अबेर[7] बे कड़ गइ हारै जे कर रइ पइं-पइं।।
पने हात को करो भरोसौ नइ- पइं पइं- पछताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 5।

पिया गए परदेस बचो नइ घर में बासन[8] भाँड़ौ[9]।
उन्ना-कपड़ा भए चींथरा[10] तन हो गओ उगाड़ौ।।
जेठमास बसकारे भोगे कड़ गओ भोगत जाड़ौ।
लौटो घरे लाज से ऊनैं कर लओ मूसर आड़ौ।।
'नंगी भली के मूसर आड़ौ' भइ कैनात कहाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 6।

भौत दिना हो गए सूदे मन अब लौं हमने सइ।
उनकी कुतिया से कुत्तोजू डरा-डरा कें कइ।।
ऊँट बिलइया लै गओ सुनकें हाँजू-हाँजू कइ।
का औकात बिलइया की जो ऊँट खों लै भग गइ।।
हम कमाएं जे लूटखसूटें राज करें इतराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 7।

---

1. तीतुर की तरह का एक पक्षी; जिसकी धूल में लोटने की आदत होती है 2. खाली 3. चुपचाप 4. प्रियतम 5. थाली 6. हाथ से थपकाकर रोटी बनाना 7. देर 8. दैनिक उपयोग के बर्तन 9. भंडारण करने या भोजन बनाने के बर्तन 10. फटा-पुराना कपड़ा

पिठियां सुद्ध[1] काम उनकौ जो अबलौं करा-धरा रए।
चोली कैसौ पान रखा रए कूंड़ में कूंड़ मिला रए।।
खौ[2] गाड़त में निकर जात दिन तौ बे भूकन मर रए।
सूकौ कुआ पतोरन[3] भर रए मौं खौं पने सिएं रए।।
हो गए अब कूं-कूं तुसार नइं तरुवा[4] सीत[5] लगाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 8।

टुड़ी[6] तरे की बात टका-सी[7] उनने कई सुनत रए।
कंडन कें भर देओ पालकी सुनके उए भरत रए।।
चलत बैल खों अरई गुच्च[8] रए कोड़ में खाज बड़ा रए।
पीव में दाँत चबोरत जा रए दच्चउ-दच्चौ[9] दै रए।।
अब तो करों खड़े तोड़े[10] की भर गओ ऐसौ ताव[11] में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 9।

गुर्गन की अथाई[12] पै जाकें ठल्लौ खट्टो खावें।
उने आवली-बावली बकने मोअ मूंड़ चटकावें।।
बनकें गिर्र[13] गरे नो देकें गरें प्रान अटकावें।
चम्मोदर के बनत पावने उल्टे लटकन जावें।।
चूले खाइं मजोटन कड़वें[14] ऐसो करन न जांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 10।

बरयानौ[15] जौ कलजुग आजी[16] सें नाती बुलयाबे।
छै छै छैला छिनरा[17] संगे अब गंगाजू जावें।।

---

1. दृढ़-संकल्पित 2. अन्न एकत्र करने का गहरा गड्ढा (खात) 3. झड़े हुए सूखे पत्ते 4. तालु (मुंह में) 5. अन्न का दाना 6. टुंडी (नाभि) 7. साफ-साफ 8. चुभाना 9. आर्थिक नुकसान ही नुकसान 10. पैरों में पहनने वाला आभूषण 11. क्रोध 12. (मुहावरा-अवसर हाथ आते ही आपस में किसी को हानि पहुंचाने वालों का समूह) गुर्गा-भेद लेने के लिए नियुक्त व्यक्ति; अथाई- गांव में बैठने का सार्वजनिक स्थान 13. घेरा 14. (कहावत-सुविधा के बदले कभी उससे अधिक मूल्य का श्रम करना पड़ जाए) मजोटन- आँगन के पार बने घर के सामने बनी छपड़ी 15. रोकने के बाद भी होना 16. पिता की माता (दादी) 17. लंपट (परस्त्रीगामी)

देसी गदा बिलायती[1] रैकन[2] सुनकें आगे बड़लो।
घाट चीकनो ई पै भैया उतर बैठ कें कड़ लो।।
कथरी[3] छोड़ चीलरन[4] के भय भगौ न डटौ भराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 11।

खुरपी टेड़ौ बेंट चाउने और हरींसे गाँगरो।
सूरी[5] खौं मिल जात मुन्स[6] जो होत कफउवा[7] आँदरो।।
राम मिला दएं ऐसी जोड़ी इक अँदरा इक कोड़ी।
सरे फँपूंदे चना चाव सें खाय आँदरी घोड़ी।।
कौन-कौन को नांव लेएं सब कथरी ओड़े गांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 12।

बे लरका मर जाएं जिएं जो मैतर घरै झराकें[8]।
दस-दस पूतन की मताइ खों भगे बिलैया खाकें।।
बउएं बिटियां जेठ ससुर सें बोलें जो अरया कें।
बौ घर मिटो जान लो जीने लाज धरी घरया कें।।
मौत आउत तब हार छोड़ कें भगे लड़इया गांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 13।

टांड़े में हो लुखरो कड़ गईं सो नैकान क्का रइं[9]।
पूंछ तीन-तेरा में नइयां डेरा ढोल बजा रइं।।
तीन हाँत कौ लाँगा पैरें जाँगें तोउ उगर रइं।
खांय खसम[10] कौ गांयं यार के गीत, न लाजन मर रइं।।
बँदे गरैं मुड़घरे[11] गए नइं हान मरे पछताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 14।

---

1. विदेशी 2. गधे की ध्वनि 3. कई परतों में चिथड़े सिलकर बनाई जाने वाली बिछावन (गुदड़ी) 4. वस्त्रों में होने वाले जूं 5. अंधी 6. पति 7. पूर्ण रूप से 8. भीतर तक का देखना 9. (कहावत) नाम-मात्र को कोई काम करके बढ़ा-चढ़ाकर उसका प्रचार करना; टांड़े- लदाऊ पशुओं का झुंड; नैकान- नायकिन 10. पति 11. सिर के ऊपर रहने वाली साड़ी, चादर या रस्सी

टाली[1] डेड़ बगर[2] टीले पै, फिरे डायनो बाँदें।
ऊपर गोड़े[3] करें सोउत टीटइ[4] कए बादर सादें।।
'बुंदेली लोकोक्ति मुहावरे' 'दद्दा' हमें बता दए।
सो बन्न-बन्न[5] की कैनातें हम टउका[6] कै रए सुन रए।।
कजन[7] राम खाबे खों देबें कुतका[8] जाव कमाव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 15।

घुरवा मरे गदा भए राजा करें चोंखरन दौर।
लूगर[9] बता रहे चूले खों मूंछें रए मरोर।।
इक घर चाने परबे नौनो पांव पसारबे और।
चलनी में गइयां लगायं[10] उर देएं करम खौं खोर[11]।।
भेद-भाव जाने नइं पादैं तौल अड़ाई पाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 16।

एइ मौ सें दुसमनी बदै और एइ से गुइंयां-गुइंयां।
मौ के मीठे बोल, झूल रओ कँदन-कँदन नन्नइयां[12]।।
मौं कौ साफ, घर भरत पइसा धरत, परत ठन्नइयां[13]।
ऐइ मौं सें तो पान मिले उर एइ सें मिलें पनइयां[14]।।
दिन मराझ (सूरज) पै थूकन चाव तौ खुद मौं परे भिड़ाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 17।

नइं हर्रा फिटकरी लगें कएं रंग चोखौ आ जाबे।
लएं लट्ठ अक्कल खों चरबे लुखा-लुखे[15] सें जाबे।।
बे नइ कोउ के मीत होयं कोउ भूल उते ना जाबे।
बाप खों डारें मरो सोंज[16] में चाय लड़इया[17] खाबे।।

---

1. गर्भधारण बंद हो चुकीं (बूढ़ीं) गाय 2. पशुओं के इकट्ठे बँधने या रहने वाला स्थान 3. पैर 4. टिटहरी; लंबी टाँगों वाला जल के किनारे रहने वाला पक्षी 5. विभिन्न प्रकार की 6. कहावत या मुहावरे से संबंधित छोटी कहानी 7. कदाचित् 8. ठेंगा; अंगूठे द्वारा दिखाया जाने वाला नकारात्मक संकेत 9. जलती हुई लकड़ी 10. दुहना 11. दोष 12. जिसका आकार या उम्र बड़ी न हो 13. धातु (पैसे) से टकराकर निकली ध्वनि 14. देशी चमरौंधा जूता 15. उषा पूर्व का समय 16. मिलकर 17. सियार

साँसी हैं जे कैनातें, नइं पर जइयो पतयाव[1] में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 18।

घानी पिरी नार खा जाबे चाय तेली के बैल खों।
ज्योरा[2] टोर भगे डकराबे[3] टोरें जुइयां[4] सैल खों।।
ऊपर सें मौ मीठी बातें मन में राखें मैल खों।
अगल-बगल में पाछैं जोतें पैलउं जोतैं गैल खों।।
पकर उंगरिया चाबैं-आबैं कब कौंचा[5] पकराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 19।

मूरख खों दओ पान लगा कें कए रूखौ[6] नइ चाबैं।
लै जाकें घर उए पनी रोटी के संगै खाबैं।।
कड़ी मुरै नइं हात पसारैं बरा खों लैबे फिरबै।
तेल बरै तेली कौ छाती कए मसालची जरबै।।
छोड़ो गांव हमैं का मिलने लैकें ऊके नांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 20।

छूटत नइं अहीर को गाड़ौ उर बनिया को साढ़ौ।
खाड़ू[7] कित्तउ घरै होय पै करने ड्योड़ो बाड़ौ।।
भीतर आएं मताई मारत बायरे कुत्ता काटै।
रोजउं दोर ककाजू ठांड़े और साव नौ हाटै।।
अपनो भात[8] पराए मड़वा के तरें न खाबे जांव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 21।

गदै मौसिया कनै परत है अपने अटकें जाकैं।
जात मायकैं[9] सौत के संगै खुद खों सजा-धजा कैं।।

---

1. विश्वास करना 2. रस्सा 3. पेट भरा होने के कारण डकारें लेना 4. बैलों के कंधे पर रखा जाने वाला पुरजा 5. कलाई के नीचे का हाथ 6. बिना सहयोगी खाद्य-वस्तु के 7. व्यापारिक कारवां 8. पके हुए चावल 9. विवाहिता स्त्री के माता-पिता का घर

मोंइ-मोंइ[1] दए जात पूंछ रए रोउत काए हो आकैं।
उनने कइ हमने सुन लइ पै रै रै जात सुसाकैं[2]।।
तनक चोंटिया[3] लेओ न उनके बकटें[4] परैं भराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 22।

फूल-फूल कें कुप्पा[5] भए जब हम क्राउत ते पापा।
नाती पंती पूत सबइ के संगै कटै बुड़ापा।।
आज पकर लइ खाट सोस रए बिसर गए सब आपौ।
मोंगे-मोंगे कड़त जात सब लिगां[6] कोउ नइं झाँपौ[7]।।
नांय गिरों तौ कुआ मांय है खाई फिर कित जांव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 23।

सब खों हिल्लें[8] लगा थान खूँटा सें करकें साँपो[9]।
जीने जितै तको[10] भओ ठांड़ौ[11] बौ हल-हल[12] कें काँपो।।
धरती की तौ बात कनें का जीनें बादर नापो।
एक दिना उनखों लगने जौ लगना रोग बुड़ापौ।।
आज 'मधुप' की का गत हो रइ कैसें मन समझांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 24।

हात पांव पसरत नइं जैसें लोअ[13] लगी जंगाल।
पुँजी सौंप खा मिटा आज हो गए मानो कंगाल।।
सरग तरइयां[14] टोरत ते बौ नौनों समव कितै गव।
औरन की का बात कनें अब अपनन सें डर लग रव।।
पदमसंखिनी[15] हात छोड़ का संख-ढपोल[16] बजांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 25।

---

1. मुंह ही मुंह में मारते जाने पर भी 2. सोने के लिए व्यंग्यात्मक प्रयोग 3. चिकोटी 4. फैली हुई उंगलियों से भरी हुई मुट्ठी 5. (कहावत) अति प्रसन्न होना 6. पास में 7. खिड़की-दरवाज़े के सामने से 8. ठिकाने से 9. कार्य को पूर्ण कर मुक्त होना 10. देखा 11. खड़ा होना 12. तेजी से 13. लोहा 14. तारे 15. निधि-प्रदायक 16. निकम्मा किंतु बातूनी

भूलें भइं सबसें हो जातीं लगो सिलसिलौ कब कौ।
बालापन ज्वानी फिर आनें जेउ बुड़ापौ सब खों।।
तिंदुअन की छुछकारें भीतर नागिन की फुसकारें।
बायरें और भीतरै एकउ सो फिर किऐ पुकारें।।
मड़ा[1] में खाट बिछत ती पैलउं अब आ गइ गलयाव[2] में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 26।

रोटी पै रोटी धरकें जां जितै मिली सो खालइ।
मौं भर आइ रांग सी ऊखों हौले सें ढंड़का दइ[3]।।
राम नाम है सत्त कबै का होबे की कौ टेरा।
संगइ रअत बुड़ापे के तौ आफत और अबेरा।।
हूला-दच्ची[4] में नइं बीदौ 'मधुप' राम गुन गाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 27।

हलकी बड्डी होय छांयरी संगइ संगै राबै।
उजयारौ दिन रात रबै तौ दूर कभउं ना जाबै।।
इँदयारे में बेइ छांयरी संग छोड़ भग जाबै।
आव बुड़ापौ अरकें-करकें[5] पनौं न एक दिखाबै।।
घर के कुरवा आंख फूट रइ[6] ऐसे परे घिराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 28।

बारे[7] हते कभउं बर्राटन[8] कैसीं लग रइं बातें।
ज्वानी बा देखी दिन जैसीं लगी सुआनीं रातें।।
पतौ न परो बेइ ज्वानी अब कांहो कैसें कड़ गइ।
छिन भर कितउं न टरत बुड़ापौ ईनें बांह पकर लइ।।
कै रओ- राम, रुपइया, लठिया- सब संगइ लै जांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 29।

---

1. चारों तरफ से पूर्ण सुरक्षित कमरा 2. गलियारा 3. (कहावत) किसी महत्वपूर्ण या चुटीली बात को अत्यंत सहज ढंग से कह देना 4. उठा-पटक 5. आस-पास 6. अपने ही व्यक्ति से नुकसान उठाना 7. छोटी उम्र में 8. स्वप्न में

बारें खेलत हते रामजू जैसें भइयइ भइया।
ज्वानी खों संवार दव उनने रए साँसे संवरइया।।
का कर लैअ बुड़ापौ मोरौ रामजू हैं रखवइया।
राम होयं रखवारे जीके ऊकौ कोउ न मिटइया।।
तीनउ पन कड़ गए का चिंता चौथौ पन कड़ जांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 30।

भौंतेरे[1] में बिदे मरगटा टेरें कूका दै रव।
रै गए माटी मोल बने बैठे माटी के माधव।।
मूंड़ जेउरिया बांद परे पाछें पै मौं की खा रए।
कुतिया बने रैन ककवारे की लारें टपका रए।।
लुगरयाए हो गए लड़इया हारै जांव कै गांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 31।

हांतन में कौ पिल्ला[2] छोरौ कूर-कूर करवाबै।
तनक भोंकबौ सुनो सुनतनइ तुरत सुट्ट[3] रै जाबै।।
हिय की फूटी तौउ फिरें जे सरगै गैल लगावें।
छिदना ढिंगा सोउत बर्रइयन[4] खों रौराबे[5] जावें।।
चैंथी[6] आंखें लगीं कओ तौ तुरकी झेलैं ताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 32।

बना धजी[7] कौ साँप, धिंगानों[8] दै रए, धन्नो[9] देबें।
धनी मरे कौ टिया[10] धरें उर धुंआ काड़बे फिरबें।।
नाक नों अफरे, नाग नचा रए, निमुआं नोंन चुआ रए।
नकुवन में रुइ बरै[11], देख कें अरे पनपना[12] हल रए।।

---

1. संकट 2. कुत्ते का नर बच्चा 3. चुपचाप 4. चींटे की सी बनावट वाले लाल पीले रंग के डंक मारने वाले कीड़े 5. छेड़ना 6. सिर का पिछला नीचे का भाग 7. कपड़े की पतली लंबी पट्टी 8. लड़ाई-झगड़ा 9. किसी मांग को लेकर अड़कर बैठने की क्रिया 10. कार्यपूर्ति के लिए दी गई निश्चित अवधि 11. जलती हुई 12. आकस्मिक भय से सिहर उठना

डरे गाँगरे बिदै लेत फिर को निनवारै गांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 33।

बाप कौ कड़बै धुँआ मोय जीनैं ई घर में पटके।
कछू लिआवे की कई मैने जे पइसन खों अटके।।
कभउं न होत परौसी के तै नइं पारे सें खटके।
हम तौ गिरे रूख पै सें उर 'मधुप' डार पै लटके।।
नरक में परे रुंआयटे[1] जैसे बे हो गइं डिड़्याव[2] में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 34।

बेटा के भीतर को दानौ तिंदुआ बनो दलाकें।
पुतरा के अँसुआ भर रोबें जब मताइ की आंखें।।
बिना जुवांन, बाप को जिउ, रै जाबे सुसा-सुसा कें।
अँसुअन की स्याई सें मन के कागद पै रो गाकें।।
गत भइ, कत की नइ, सो लिख लइ, सब हो सुनो-सुनाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 35।

नास्तिक, दारू पिएं, अधरमी, आलस, भ्रस्टाचारी।
अनाचार, पइसा कौ लालच, अत घमंड, बिभचारी।।
जे नौ नइं जी में बौ मा नव मइं साँसी मा नवता।
दया, दान, दम जितै न, जानौ उतइ भरी दानवता।।
जे नवता न बता पाइं सो 'मधुप' की आंख रुआव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 36।

लरका भए स्यानें तौ भ्यानें[3] भग गए दूर दलद्दर।
सुनत हते पै हम तौ अपनों बाँदें संग मुकद्दर।।
लल्ला भए पुचकार पड़ा रए करत ते मन की बातें।
सोने जैसौ दिन कड़ जावै चाँदी जैसी रातें।।

---

1. रोना-धोना 2. ढाड़ मारकर रोना 3. आगामी कल

दूबर हो रओ आज उनइं सें बातें करत डराव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 37।

लरका कौ जब ब्याव करो बहु आइ छमाछम करकें।
साद-साद कें बोलत तीं उर निगत हतीं थम-थम कें।।
अब तौ राज भरे कौ थौना[1] डारें अधरन बमकें।
धम-धम चलत अटारी छपरी घर आँगन सब धमकें।।
चंदा तीं सूरज अब भइं बे ज्वालामुखी सुभाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 38।

लरकें भए सो लरका-मरका बउएं हो गइं बैसइं।
हम मौं सिएं सुनें, बे गारीं तानें दिन भर दै रइं।।
देख-देख जा दसा बरस रइं आँखें बनीं बदरिया।
कलम घसीटत आँखें फोरत मैली भई चदरिया।।
भोगें सला[2] बिथा घर घर की कीखों कितै सुनाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 39।

कत ते स्याने चुपकें-चुपकें बात कने जा आप सें।
मानों नै मानों पै अपने बेटा नक[3] गए बाप सें।।
पुतरा[4] बेइ खाट टूटी पै डरो देख रए दद्दा।
बिलखें रोएं मताइ सोंय जे बिछा कें कोरौ[5] गद्दा।।
नक्कूखां बे उतै क्का रए कैसें नाक बचांव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 40।

पैलउं तो कंडा पाथत ती अब काड़त हैं कंडा।
कान उठायं कितउं लरबे की सुनी उठा लओ डंडा।।

---

1. (कहावत) खीझ होना 2. सलाह 3. आगे निकलना 4. पुत्रों (बालकों) के लिए प्यार भरा संबोधन 5. बिना प्रयोग किया हुआ

कोऊ आव उननें जो देखो तिंदुआ घाइं[1] दलाकीं।
पूँछी कजन कोउ ने उनने लामी चौरीं फाँकी।।
चैंचा-रोरौ[2] मचो हर घरै कीखों कितै सुनाव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 41।

नैनूं से नोंने सुभाव की हेरन हिन्नी-नैनीं[3]।
धरती में ढूंड़ौ नइं मिलने जैसी मोइ घरैनी[4]।।
जो मोरी बा ऊ की मनसा का लैबौ का दैबौ।
मौत आय जब तकैं हमन कौ संगइ संगै रैबौ।।
ऊको हियौ पसीजै छोड़े! नइं तौ धता बताव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 42।

जसरथजू से ससुर सास हैं जाँ कौसल्या मइया।
गुर बसस्ट से पंडत गियानी राम लछन से भइया।।
सास-ससुर खों चाबे बारीं बउएं सोन चिरइयां।
ऊ घर में है सुरग जान लो और कितउं है नइयां।।
'मधुप' झगरबौ मरबौ कैसौ नौनों सब बरताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 43।

गलयारन में खोरन-खोरन[5] जे यारन खों ढूँडें।
छींक आइ तौ लगा छिनारौ मूँड़ और के मूँड़ें।।
हलके-बड्डे जनी जने चाय ज्वान होंय कै बूड़े।
जो कैनात सुनत की नइं सुन अपनों हियौ कसूंड़े[6]।।
छै-छै छिनरा संगै घूमे अब गंगाजू जाव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 44।

---

1. जैसे 2. शोर-गुल 3. हिरणी जैसे नेत्रों वाली 4. गृहिणी 5. गली-गली 6. काँस की गुँजी से रगड़कर मिट्टी के बर्तन को अंदर साफ करना

एक ब्याव में न्यौतें गए देखो दोउ समदी लर रए।
मों माँगे कल्दार गिना लए कोंठा[1] तोउ न भर रए।।
मड़वा तरें बाप बिटिया कौ दो दो अँसुवन रो रव।
जित्ती हती हैसियत उत्तौ काड़ दायजौ[2] धर दव।।
लरका वारौ आँखें काड़ें उचकत[3] नाक फुलाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 45।

इत्तौ तनक दायजौ दै मोरी बदनाम करा रए।
देखौ तौ बरात वारे सब लगा गुड़इयां[4] कै रए।।
भुक्कड़ और कंगला कें का लरका आए बिआबे।
पूरौ हैंसा नइं दे रव बिटिया कौ धारन[5] खाबै।।
'मधुप' दायजौ दो पूरौ नइं लरका लै भग जांव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 46।

फँदकौ[6] नइं समदीजू जितनौं चुन्ना-पुन्ना[7] जोरौ।
बौ सब अपने सामें है कर कुन्नस[8] हातइ जोरौं।।
बिटिया छोड़ देंओं की खों तुम बोल न ऐसे बोलो।
खेत चनन कौ खोंट-खाँट[9] कें रातौ-रातौ[10] लै लो।।
समदी सुन सन्ना[11] कें सनकें तनफनात[12] रए ताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 47।

बँदरा नइं दोरन दोरन जो नचबें खूँदें फँदकें।
आए न बिना बुलायं गए ते मोरें नाक रगड़ कें।।
बातन-बातन बातें बड़ गईं लमया[13] गव बतकारौ।
कछु बिटिया कछु लरका वारे ठट्ट जुरो अबढारौ।।

---

1. आंतरिक पेट 2. दहेज 3. उछलना 4. गोल बाँधकर बैठना 5. हिस्से की संपत्ति 6. दबे हुए क्रोध को स्फुट शब्दों और काम-काज में उठा-पटक से प्रकट करना 7. दान-पुण्य के लिए संकल्पित उपभोग सामग्री 8. कोर्निश; बहुत हीन होकर प्रार्थना करना 9. आंशिक ग्रहण करना 10. धीरे-धीरे 11. मदमत्त होकर 12. अत्यधिक क्रोधित होकर 13. बढ़ जाना

नंगइ-नंगा जुरे नरक के नंगा नाच-नचाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 48।

बेंड़ा[1], कुरवा, लट्ठ, डेंड़का[2] जीखों जो मिल पावैं।
कौन बराती कौन घराती मार-मार चिल्यावैं।।
मड़ा में रोयं मताइ बिटिया पै को समझावे जाबै।
पीरौ और हरीरौ मड़वा लालइ लाल दिखाबै।।
मनसा मरौ होत तौ जो कउं 'मधुप' न उतै बचाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 49।

एक जनें घर गए सपरकें उनने देखों जाई।
बे खर्राटे लै रइं पति ने जगबे टेर लगाई।।
दिन चड़ आव उठौ तौ- सुनकें फँदकीं लै ऐंड़ाई।
चटकत-मूंड़[3] रात भर मो खौं ऊँग[4] तलक नइं आई।।
मोए बनाव लुगाइ ना जाने कैसो पाप कमाव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 50।

खानें होय बना लो खा लो कै कें फेंको कंडा।
उनने जाकें तुर्त तड़ातड़ जड़ दए दो ठउ डंडा।।
बासन ठनकन लगे नरक में जैसें बजें नगारे।
दोइ जनें जब लरें परौसी तकें मुहल्ला वारे।।
जमराजा होते कै देते नरक सें कितै भगाव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 51।

सास घरी भर इँदयारे सें उठकें चकिया पीसै।
परी बिछौना में घुरिया सी दाँत उतइ हो मींसै।।

---

1. दरवाज़े को अंदर मजबूती से बंद करने के लिए लगाई जाने वाली आड़ी-तिरछी लकड़ी 2. कम लंबी मोटी लकड़ी 3. सिर दर्द 4. नींद

अब आ रइ संगै पिसवाबे सास गाउत उर हींसै[1]।
'मधुप' परे भोंतेरे में अब का बतायं कयं की सैं।।
कितउं चींथरा कितउं साँप घर घर हैं कियै सुनाव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 52।

इस्नो, क्रीम, लिपिस्टिक, सेंपू, पउडर मोव बड़ा[2] गओ।
जाओ बजारै खर्रा लिखकें पति के हाँत ग्वा[3] दओ।।
करी जेब की कइ सो उनने पउडर ल्या पकरा दव।
और कभउं ल्यावे की कै कें बातन में टरका दव।।
मन मरजी की हतीं 'मधुप' सो गरजन लग गइं ताव में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 53।

तुमें जेब की कइ करनें तौ लै लो एक तमूरा।
पउडर हतो मँगाव सड़क की लै कें आ गए धूरा।।
हेंम कजन होतौ मोपै तौ हीरा पिसवा ल्याते।
गाने-गुरिया की कइ होती तो बातन टरकाते।।
मोइ छोर छुट्टी कर दो फिर मनपुसाय[4] तां जांव मैं।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 54।

अनबोलनो[5] सास बउअन में लरें नंद भौजाई।
बेटा-बाप, बैन-भइया जां लर रए लोग-लुगाई।।
बौ सांसौ मुरदाघर जीमें चलती फिरती लाशें।
का करनें मसान में जाकें 'मधुप' न कितउं तलाशें।।
लरें जिठानी उर देवरानी पुरा परोसी दावं में।
सरग-नरक सब इतइ देख लो भइया अपने गांव में। 55।

---

1. कामातुर होने पर पशुओं का विशेष प्रकार से सांस छोड़ना; जैसे वह अपनी उपस्थिति जता रहा हो। 2. समाप्त होना 3. प्रदान करना (बलवाची प्रयोग) 4. मनपसंद 5. संवादहीनता

किसा-कानियां सुनत-कहत्ते

कभउं-कभउं रुखीं रोटीं ठांड़े कोदन की खाकें।
रोजउं खात घोरुवा इक दिन सोसी ती उकता कें।।
चलो आज सुसरारे चलिए खाबूं ऐन अघा कें।
बूरो-बरा, कड़ी-कालोनी, दूद-फुलकिया- जाकें।।
कछू दिना पइपौनइ करबूं छके घोरुवा खाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।1।

भुंसारे सें सपर-खोर कें धरो घोरुवा खाकें।
कुरती पैर, चले फुरती में, सुरती ओंठ दबा कें।।
डार घुटन्ना, खुटी खुर्स फिर झब्बू पैर पनइयां।
चर्र-चर्र हो रईं निगत में, पौंचे जा लौलइयां[1]।।
पैले पुरा[2] पौचतन आंखन तरें न परै दिखाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।2।

जीजाजू कोउ कुंवर साब कत पांव परत आ-जा रए।
मोंड़ी-मोंड़ा आकें पानी दै कें खाट बिछा गए।।
सास और साराजें उदना हार सें आइं अबेरुं।
थानन देखे भैंस पड़ेरु गइयन संग बछेरु।।
सेंट[3] बजी नइं, सबइ चुखा[4] गइं, दूद चाय कां पावं में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।3।

---

1. सांध्यबेला 2. गांव के एक छोर पर 3. दुधारू पशुओं से निकलने वाली दूध की धार 4. पशुओं के बछड़ों द्वारा चुपके से अपनी मां का दूध पी लेना

पेट में कुंवर साब के भूकन, इतै बिलैयां लोटें।
आँतें कर रइं कुन्न-कुन्न खटिया पै लोटें-पोटें।।
हेरें बाट- ब्याइ की बेरा हो गइ, अब कोउ टैरै।
रोटी वारे घर कुदाउं[1] बे आंख बाँद कें हेरें।।
आइं बड़ी साराज ल्वा गइं चौका पै बैठाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।4।

हांत-पांव धो, गड़इ भरी, चौका पै भई ठिठोली।
खबर-दबर पूंछत लौरी[2] सारी बीचइ में बोली।।
करीं भूंक लगी होबे तो अब्बइ चूलो बारत।
माँज करइया झारौ जीजा घिउ की लुचइं निकारत।।
बे बोले जो धरो होय सो ल्याव बेउ अब खावं में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।5।

टाठी भरो घोरुवा आ गओ इनने गड़इ बजाई।
हात जोर टाठी के गेरउं फेरीं तीन लगाईं।।
हे पनबेसरे! बता घोरुवा! कब को? कां हो? आ गओ।
नरवा-नदी नाँक कें हारो- भओ हिमार[3]- सुस्ता लओ।।
हँसे सबइ मौ में दै उन्ना 'मधुप' परे पछताव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।6।

फुर्र-फुर्र फुर्राव घोरुवा टाठी में को पूरौ।
राते परे, सोस रए भ्यानें- मिलै बरा उर बूरौ।।
भैंस ठोकरी पड़ा खों टिनकी, भुंसारे के पारै।
हुर्रयानी, खूंटा उचका कें, भग गइ गिरमा डारें।।
जँगन-तँगन सब लगे ढूंड़बे 'मधुप' बिदे उरझाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में।7।

---

1. ओर 2. छोटी 3. ठंडा

लौरै[1] भैंस चिमानी[2] बैठी, खचा में उखरै-बूड़ै।
अगल-बगल के सब गांवन में हलके-बड्डु ढूंड़ें।।
हम रै गए अकेले घर में कै परोस के बूड़े।
साँकर लगा उतइ जा बैठे, आँतें पनी कसूंड़ें।।
छरछरात दिन रओ नइं कोनउं पंत[3] कितै का खावं में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 8।

बब्बा जू के दाँत न ते, सो उनें बनत तौ घोरुवा।
आइं परोसन हमें परस गइं, बेला भर कें घोरुवा।।
घरै रनै तौ खाव घोरुवा, सुसरारै तौ घोरुवा।
गए परोस में तौ संटारौ, भर-भर बेला[4] घोरुवा।।
चंट-फंट उर संट रत हते 'मधुप' घोरुवा खाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 9।

एक गांव में चलन हतो दिन बूड़ो काम सें निपटे।
'फिर आ गइ इँदयाइ[5]'- भगाबे लग गए सब हो चिपटे।।
बारा, गुट्टा, सूपा कोउ ने पिरिया पनी उठाई।
झारत, भरत टिपरियन में कत- भग दारी[6] इँदयाई।।
तोउ न भगै कड़ें सब रातें, रोजउं भाग-भगाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 10।

इँदयाई कौ भूत लगो घर में से कैसें काड़ें।
जेठमास कै बसकारें चाय जड़कारे के जाड़े।।
बुला नावते-गुनिया[7] कउं-कउं बैठक कोउ लगा कें।
देखें दिया धरें सूपा में, खोंचक गोंउं मँगा कें।।

---

1. पानी में तैरती हुई 2. शांत 3. आश्रय मिलना 4. बड़ा कटोरा 5. अँधेरा होने पर एक मानसिक बीमारी, जिसमें अँधेरे को भगाने के लिए अंधविश्वास से लोग झाड़ू लगाकर अथवा अन्य काम करते थे 6. एक गाली 7. ग्राम-देवताओं के पुजारी, जिन्हें संबंधित देवता का आवेश आता हो

घंटा दोक 'मधुप' कड़ जाबें, खाँतर-धरम[1] मँगाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 11।

एक दिना सब जुरे नावते-गुनिया जाने-माने।
इँदयाई खों बुला पूंछ लो, भगबे को का चाने।।
पल्टू लेत फरुरी नच रए इँदयाई भर आई।
हात जोर कछु ठांड़े कै रए माफ करो इँदयाई।।
भूल-चूक गोड़न तर दाबो घर न रबे इँदयाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 12।

पड़ी-लिखी मोंड़ी बउ बनकें पल्टू के 'तै आई।
दिन बूड़ो, भर तेल दिया में, बाती डार जलाई।।
अबढारी इँदयाई भग गइ मड़ा में भओ उजयारो।
मूरखताई की जो रूड़ें उनखों दूर पवारो।।
धुँदुआ[2] में धर दिया, 'मधुप' मन चाबे सो मा जावं में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 13।

बउ को नांव धरो उजयारी, उजयारौ तौ कर दओ।
हौलें-हौलें गांव भरे को इँदयारो सिमटत गओ।।
जनी-जनें दो टिड़के-बिचके, एक रूख पै चड़ गए।
लटकीं भइं चम्मोदर[3], आंखें मीच घुआरा[4] बन गए।।
अपने मौइं मियां मिट्ठू बन और न देख सुआव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 14।

उजयारे लाला बन कै रए- सुन लटकारी भौजी।
मूरख भरे धरे दुनिया में को है अपनी तौजी।।

---

1. नावते-गुनियों द्वारा एक सूप में अनाज के कुछ दानों को रखकर देवी-देवताओं से बात करने की क्रिया 2. धुंआं निकालने के लिए विशेष रूप से बनाया जाने वाला ताक या छेद या चिमनी 3. चमगादड़ 4. उल्लू

सबहो कत- सूरज ऊँगत उर होत भौत उजयारौ।
नइं दिखात बौ कभउं अपन खों लगो रअत इँदयारौ।।
इनके कयं का होय 'मधुप' सब करो तरक्की गांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 15।

सबने कर लइ खूब तरक्की सरगै गैल लगा लइ।
पानी गओ पाताल फोर कें धरती पोली कर दइ।
चकाचौंद आंखन खों फोरत कान खों हल्ला-गुल्ला।।
जितै देख लो उतइ प्रदूसन हो रओ खुल्लम-खुल्ला।
धरती उगले आग, परत ओजोन की भई फटाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 16।

एकइ से बसकारे जाड़े घामें[1] में कै छांव में।
औरइ जगां सरकबे तरसत बैठे एकइ ठांव में।।
हितू हते बे आज हेर रए, सकुनी कैसे दाव में।
इतै खात उर उतै अचै[2] रए कउअन की कंव-कांव में।
हातन की तौ बात कने का बेड़ी डर गइं पांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 17।

दिन असड़ोयं[3] हते समदी जू लैकें आए रिसाल[4]।
किचकंदे[5] की गैल निगे सो भूंकन भए बेहाल।।
समदी आए सुनी समदन नें हाली-फूली[6] फिर रइं।
रोटी हती दार ती थोरी करबे खों अलस्या रइं।।
भियानें करों समूँदी[7] रोटी अबै न कछू बनांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 18।

---

1. धूप 2. आचमन करना; खाने के बाद हाथ धोना 3. आषाढ़ मास का समय 4. एक प्रथा; जिसमें विवाह के बाद आमों के मौसम में वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष को भेजी जाने वाली आमों तथा अन्य फलों की भेंट 5. कीचड़ भरी भूमि 6. उत्साह एवं प्रसन्नता 7. समूची

गइया-गोसली सें निपटे फिर मड़ा में उनें लुआ गइं।
थोरी दार मांगियौ नइं तुम तरन-तरन[1] समजा रइं।।
समदी दोइ बिआइ खों बैठे संगइ एकइ दार[2]।
रोटीं पाँच-पाँच हतपउ[3] पै तनक तनक ती दार।।
टाठीं आइं होत बतकारौ बिआइ करैं दोउ चाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 19।

खबर न राखी माँगन लग गए रोटी संग खों दार।
लिआव दार! रूखी खा रए हैं समदी परसौ दार।।
बची दार समदी नों परसी मिसमिसात[4] गुर्रात।
घूँगट में हो करें इसारे बता-बता कें हाँत।।
अबै अकुस[5] समदी की ठैरौ तो खों अबइ बताव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 20।

पौर हती ओछी[6] सो ऊमें बिछ गइ हलकी खाट।
दो कथरिन कौ करो बिछौना बे समदी के ठाट।।
घरया कें परदनी[7] गिजी[8] कर बना मुड़ीछौ[9] धर दव।
हतो पिछौरा उठा धरउअल उनें ओड़बे ल्या दव।।
राजी खुसी पूँछ रए कै रए दोइ मगन बतकाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 20।

खुंसयात[10] कछु बड़बड़ात बे बासन माँजत जाबें।
जितै परौ हम उतइ आउत बौ नागन घाइं सुसाबें।।
समदी के सामें तैंने मोरी बदनाम करा दई।
समदन सुनें कैअं वा कैसी जी की दार बड़ा गई।।
हंड़िया में सें काड़ डेउन्ना[11] धरो बगल में दाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 22।

---

1. आधिपत्य में लेते हुए 2. बार (आवृत्ति सूचक) 3. हाथ से बनाई गई 4. दाँत पीसकर क्रोध प्रकट करना 5. संकोच 6. आवश्यकता से कम 7. मर्दानी धोती 8. तह बनाना 9. तकिया 10. क्रोधित होना 11. कड़ी-महेरी आदि टारने की लकड़ी की लंबी चम्मच

अपनन-अपनन की बातें को का-का जानत नइयां।
समदी भले ढिंगा बैठे पै बिगर-बिगर रइ मुइयां।।
अपनें होयं असास[1] जांव में सोवे औरए ठौर में।
बगदर[2] भौत मान्सखाना[3] हैं समदीजू ई पौर[4] में।।
समदी सोसें का बगदर सें पूरी रात चिथांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 23।

फिर सें कइ समदी जू हारे हौ असास तौ होबें।
ढबुआ[5] डरो बगल में हम तौ खर्राटे लै सोबें।।
धुआं धरो रत सबरी रातन बगदर लिगां न फटकै।
अपने राम तौ उतइ सोउत हैं रोजीना बेखटकैं।।
समदी कंय तुम परौ इतइ उर ढबुआ आज रखाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 24।

समदी कौ जो हतो बिछौना ऊपै तौ जे पर[6] रए।
ढबुआ में उनकी कथरी पै समदी जाकें डर रए।।
परतन लग गइ आंख जे उठीं हाथ डेउआ लैकें।
मिसमिसात ढबुआ नों पोंची कै रइं गुलचा[7] दैकें।।
बिआइ करत रौंपतया[8] रओ तौ अब्बइ तोय बताव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 25।

लै लै दार! और लै लै! तें कित्ती चानें दार
कत जा रइं उर मारत जा रइं लै लै! खा लै दार।।
हड़बड़या कें समदी जू ने जब मौं पनौ उगारो।
मुइयां तकी भगी दै कुर्रू रुकी जायं पिछवारो।।

---

1. राजाओं के शयन के लिए प्रयुक्त शब्द 2. मच्छर 3. आदमखोर; निर्दयी 4. घर का पहला कमरा 5. घास और छप्पर का गुंबदनुमा घर 6. लेटना 7. बँधी हुई मुट्ठी से अंगूठा और तर्जनी की तरफ से गाल पर हल्का आघात 8. जिस काम के लिए रोका जाए, जान-बूझकर वही करना

अरे ठरगजे[1] परो पौर में 'मधुप' उतइ अब आंव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 26।

बे बोले समदी जू जग रए काए ऊँग नइं आबै।
इतै आन कें पर रौ जो कउं अपनी मनसा चाबै।।
समदी आकें परे पौर में जे ढबुआ में पर रए।
ठुन्यानी[2] जे आइं पौर में डेउवा चार मसक दए।।
समदन जब समदी खों मारै को आबै बरकाव[3] में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 27।

हात जोर समदी भए ठांड़े रात मोय पर लन दै।
कभउं न तोरौ मौ देखों बस आज रात भर लन दै।।
समदन सरम गईं उदना सें मौं नइं पनौ दिखाबैं।
समदी दिखे भगी समदिन लै ओट तुर्त दुक जाबें।।
'मधुप' न समदिन कौ मौं देखें उनै न पनौ बतांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 28।

हतो भतीजे कौ बिआव सो फाजू[4] पोंची पैलें।
घी चपिया[5] लयं अइयौ उनखों समजा दइं सब गैलें।।
जिदना ती बिआव की पंगत भोरइं उठ कें कूपा।
तारे-बेंड़े[6] लगा सँवारे धरे टिपरिया[7] सूपा।।
होत खुसी पंगत के पैलें घिउ चपिया पौंचावं मैं।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 29।

बाँद धरउअल उन्ना बकचा घी चपिया धर मूंड़ पै।
निगे गैल हारे जा बैठे उतइ डरे इक डूंड़[8] पै।।

---

1. तिरस्कार सूचक 2. क्रोध में उन्मत्त 3. बीच-बचाव 4. बुआ के लिए आदरसूचक संबोधन 5. मिट्टी का लोटे के आकार का पात्र 6. दरवाज़ों को बंद कर ताले इत्यादि लगाना 7. टोकरी 8. ईंधन की अधिक मोटी लकड़ी

एक बजाउं जंट[1] कठवा की एक डरी ती डुड़िया।
आगर, खील डरी ती ऐंगर[2] उतइ बटइया-लुड़िया।।
डुड़िया डरी न देखी ती सो मिल गइ आज दिखाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 30।

चपिया धरी रुपाई[3], बगल में छोरो बकचा धर दओ।
डरत होंय कैसें डुड़िया में डरबे खों मन कर रओ।।
डुड़िया में गोड़ौ डारौ फिर खील लोड़ सें ठोकी।
भाबइ[4] और बिदनवा[5] आवै सो नइं जाबै रोकी।।
कुत्ता एक आव चपिया नों लग गव घिउ के खाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 31।

लेंड़ा-लेंड़ा[6] कइ नइं मानों खिच्या[7] कें दइ लुड़िया[8]।
लोड़ लगत घी बगरो कुत्ता भगो फूट गइ चपिया।।
जे डुड़िया में डरे गैल के गैलारे पूंछत रए।
की कसूर की सजा मिली जे मोंगे-मोंगे सुन रए।।
हेरें बाट बिआवता घर के कुंवर साब कब आंव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 32।

झिलमिलात उन्ना पैरें बे फिर रइं फूलीं गजतीं[9]।
मूंछें होती कउं फाजू कीं बे फूपा जू बजतीं।।
पंगत भइ बिन्नायकी[10] होकें दुबन[11] लगी सपटौनी[12]।
गइ बरात बेरा[13] सें पोंची उतै घलै आगौनी[14]।।
दूला के फूपा बरात में कितउं न परत दिखाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 33।

---

1. मजबूत 2. पास में 3. स्थिर कर देना 4. विपत्ति; जिसे भोगने की अनिवार्यता हो 5. व्यवधान 6. कुत्ता 7. आवेश में 8. कंकड़ से थोड़ा बड़ा पत्थर का टुकड़ा 9. सौंदर्य सूचक 10. बारात निकलने के पूर्व दूल्हा बाजों तथा महिलाओं के साथ मंदिरों में तथा बिरादरी और व्यवहारियों के यहां आशीर्वाद लेने जाता है 11. दिया जाना 12. शीघ्रता 13. समय से 14. आतिशबाजी

डुड़िया डरे सोस रए मन में कितै आज हम बिद गए।
नए उन्ना बनवाए हते बे सबरे घिउ में सन गए।।
गैलारन सें कै रए मोरी खील खोल दो भइया।
खील न खोल पाव तौ मो खों डरी उठा दो लुड़िया।।
पै की खों बीदी राजा की डुड़िया खोलन जांव मैं।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 34।

एक चिनारू[1] उनें देख कें कै रए आकें सामें।
घर के जान बरातै गए जे इतै डरे कठवा[2] में।।
बिना पते के कामन खों तुम भइया दूर पवारौ[3]।
साँप की बामी में तुम जाकें बिरथां हात न डारौ।।
मंतर बिच्छू कौ नइं जानें जौ बिस कां उतरांव मैं?
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 35।

हती गांव में लरो फुआ बिन लरैं चैन नइं पावै।
तनकइ बोलो कोउ सबइ दिन लरबै और लराबै।।
सबने करो बिचार एक दिन, कोउ न बोलौ इनसें।
गदा पै धर सामान चलीं अब बे लरबैं किन-किन सें।।
फुआ कितै खों चलीं, एक ने पूछी सादा भाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 36।

गदा सें बोली छोरत जा रइं पटक दो बेटा छइ[4]।
अब नइं जानें अंत[5], लराई घरइ बैठ कें भइ।।
लरैं लरावें बिना पते[6] में जिनें बान पर गइ।
बेल बौंड़[7] अपनी जा भइया ऐसइं बिगरत गइ।।
उखरी में दइ मूँड़ मूसरन खौं फिर काए डरांव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 37।

---

1. परिचित 2. काष्ठ 3. अनिच्छापूर्वक किया गया काम 4. सामग्री 5. अन्यत्र 6. आशयपूर्ण 7. आगे बढ़ना

डुक्को हतीं साव बनवे खों सौक उनें चर्रानौ[1]।
घर-घर जाकें करें तकाजो[2] मिल गओ हतो बहानौ।।
हते पुरा में छाकड़[3] उनने बउवा[4] को मन जाने।
लए कल्दार[5] पचास पाँच धरता[6] के दए मनमाने।।
हो रईं खुसी 'मधुप' घर-घर जा सबखों जाय बतांव मैं।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 38।

औरए[7] दिना दूसरे खों कलदार पाँच दै आईं।
मइना भर कौ टिया एक धरता में बापस लै आईं।।
एक जनै लै गए एक और टका ब्याज में दै गए।
टका हांत में बचो पुँजी के सबरे बाँट[8] बड़ा गए।।
कैउ टिया कड़ गए नइं दैबे वारे परे दिखाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 39।

सोसन रोज दूबरी[9] हो गइं बात न कोऊ पूंछै।
करैं कजन काऊ सें माँगत बेऊ उमेंठत मूंछैं।।
पाँच पचासें लै डूबे उर पाँच खों लै गओ एक।
टका के लोबन[10] एक चलो गओ परी-परी दिन लेख।।
ठेंकें पुँजी में गुँजी लगाकें कीखों कितै सुनाव में।
किसा-कानियां सुनत-कहत्ते भइया अपने गांव में। 40।

---

1. व्यग्रता 2. उगाही 3. छंटा हुआ बदमाश 4. वृद्ध महिला 5. चाँदी का रुपया 6. सूदखोरों द्वारा ब्याज पर दी जाने वाली राशि में से पहले से ही एक वर्ष के ब्याज के बराबर काटी गई राशि; जिसका सामयिक ब्याज की गणना में समायोजन नहीं होता 7. दूसरे 8. वितरित करना 9. दुबली 10. लोभ में

होत नांव चलती कौ गाड़ी

एक खेत उकसा[1] में सूको मसरी[2] मांउ[3] तुसार[4] में।
मूड़ मुड़ाउतन ओरे पर गए गिरुवा[5] ले लओ हार में।।
कैसें होय गुजारों आसों[6] साव[7] तकाजौ कर रए।
मौड़ी फरिया[8] ओड़न लग गइ गेर[9] बिबूचन[10] बिद गए।।
'मधुप' स्यानपन सबइ सिरा[11] गओ अब का करों उपाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 1।

बिलगइयां[12] लै साँप घुसे तौ बारा जँगा छुलावे।
आए साँप के घरै पावने फन में फनइ मिलावें।।
गदा-गदा सें मिलै दुलत्ती घालै और घलावै।
जनवा सें जनवा मिलबै तौ सार बेद को पावै।।
जल्दी परी मौत घर देखौं नईं फिकर मर जांव मैं।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 2।

ताती-ताती[13] नइं उचेलियो[14] सिरा-सिरा कैं खइयो।
नईं कोउ की उल्टी-सूदी तना-तनी में परियो।।
कछवारें बगार[15] जिन दइयो उड़त चिरइया चीनों।
नहीं कभउं गलयारे फारो नइ करियौ मन हीनों।।
होत सड़ैरन[16] के उजयारे कउं साकिन[17] के ब्याव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 3।

---

1. फसल आने से पहले ही कच्चे पौधों के सूखने का रोग 2. मसूर 3. पौधों के फलों में लगने वाला रोग 4. अतिशीत के कारण फसल को लगने वाला रोग 5. गेहूं की फसल का एक रोग; जिसमें फसल पर गेरू जैसा चूर्ण पैदा हो जाता है 6. इस वर्ष 7. साहूकार 8. दुपट्टा 9. सब ओर से 10. उलझन 11. शांत 12. सँपेरा 13. गर्म-गर्म 14. तवा पर रोटी सेंकते समय रोटी पलटना 15. तड़का 16. छिलका उतरा हुआ सन या अमाई (जूट प्रजाति के पौधे) का डंठल 17. राजा शालिवाहन

कथरी ओड़े खूब पियो घी सबसे हिल-मिल चलियो।
नईं कोउ की औनी-पौनी[1] ठिया सें कभउं न हिलियो।।
परिया[2] कभउं फोरने होवे कुठिया[3] में जिन फोरो।
काईं सी उतारियो जिन तुम, बनो सनेव न टोरो।।
दूद करूला[4] करो 'मधुप' नइं परियो घाल-घलाव[5] में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में।4।

जियत रबै जीवन बंधन सें कैसउ बँदो न होय।
जीवनमुक्त बेउ है साँसौ लोक सुधर गए दोय।।
ग्याता-ग्यान-ग्येय की तिरयुति, जितै होत है सांत।
मैं तोरो! तैं मोरो! सोहं, ब्रह्मोह, बेदांत।।
भूल करी बे भूल जाओ सब जी लो बिना तनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में।5।

राग रोस सें हीन बिरागी बे रागी बैरागी।
कोउ पराव नईं सब अपने मानै बौ बड़भागी।।
सर्वम् यद्यम् आतमेति[6] हरि हिरदै गुफा बिहारी।
'मधुप' जान लेओ जीनैं ऊसैं सबरी दुनिया हारी।।
जे जीवन सुधार की बातें अब कां परत सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में।6।

सेंत-मेंत[7] में दाँत निपोरत काड़ देत बत्तीसी।
ठिलठिलात[8] उर थपरी ठोकत झुका देत छत्ती[9] सी।।
लिखे तीन सौ छंद बैठ छपरी में जे छकड़ी से।
जियौ जियन दो हँसी हँसौ जो लगबे हँसे हँसी से।।
गाँस गुड़ी नइं रैबें मन में सुनी जो सबै सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में।7।

---

1. गुण-दोष 2. गुड़ की भेली 3. अनाज भंडारण के लिए कच्ची मिट्टी का बड़ा पात्र 4. कुल्ला 5. मारना-मरवाना 6. सबको आत्मवत् देखना 7. मुफ्त में 8. खुलकर हँसना 9. भवन की छतों के आधार के काम आने वाला पत्थर

इतै-उतै मन बमकत[1] डोलत बिना लगाम बछेरा[2]।
काम क्रोध मद लोभ मोह सब डारैं अपनौ डेरा।।
मूल रतन जो ग्यान चाउनैं बाँधौ अपने मन खौं।
मन के बँदतन 'मधुप' तरै उर तारै सब संग्कन खौं।।
गीता गंगा लगा कें गोंता हो जै मुकुति नहाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 8।

माँजै खेत बमूरा[3] ठांड़ो जी में असली सार।
गाड़ी बनवाबे खों काटो बनवा लइं दो नार[4]।।
एक नार में बारा नग छै पूठे उर छै चूलें[5]।
बारा फापस[6] पूठन छेदे ठुकवाबौ नइं भूले।।
चौबीसउ औतार के दरसन पूठा नगन छिदाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 9।

पाँच तत्त की तरा दन्न[7] इक दो आवन दो अंदा।
बिरमा बिसनू चक्कर काटत चौरासी कौ फंदा।।
बारा सूरज बारइ मइना बारइ-बारा रासें।
ई गाड़ी में हमें दिखा रइ कितउं न जाव तलासें।।
छैइ रितन में रात दिना जे चल रए चका घुमाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 10।

संकर जू के तीन नैन हैं तीन छेद मजिया के।
कित्तौ नौनों लगे बिराजें माँजै दोउ पइया के।।
दो धुर दो धुर पटे पाँच बौ मजिया पाँचइ मौं हैं।
धुर में लगी चखील तरकुली चकन मँजारें सोहैं।।
बिरमा बिसनू संकर दरसन 'मधुप' करत निज भाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 11।

---

1. उछलना-कूदना 2. घोड़े का बच्चा 3. बबूल 4. बैलगाड़ी या रथ के पहिए का धुरी पर घूमने वाला भाग 5. खाँचा 6. पतली पच्चड़ 7. लकड़ी के चाक पर चढ़ाई जाने वाली लोहे की हाल

सादें जात धुरार सजी जो धौकर मँज पटली सें।
एक सींक दो धुरा बरीं दो पटलीं उर पछलीं सें।।
तीन-तीन खुड़ियां बरिया[1] कीं झाँजी[2] दोइ लगाई।
दो-दो पचरा सैल जोत सज नावट में बाँद जुआई।।
आगें-पाछें तीन-तीन पटिया बिछवाए भराव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 12।

धरम, अरथ उर काम, मोच्छ की चारउ ठेलें डारी।
नैचें ऊपर कड़ो बिनैका भौंरावटी मँजारी।।
सुद्द साद नइं ऐरौ-चालौ[3] जैसें लग गइ तारी[4]।
गाड़ी मम्मा ने बनवा दइ हमने उए सँवारी।।
लगो हरैना के करकें जो ठांडी रअत सिपाव[5] में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 13।

फट्ट बिछा पछिया बाँदें फिर ऊपर तान चिटाई।
गड़इ[6] डोर खुड़िया पै टाँगी खुरसी तरें कुलाई।।
चौरासी चोटिया[7] बैलवन खों घंटी पैराई।
सबखों बिठा बैल नैकें[8] फिर हँकनी[9] पनी उठाई।।
कोउ न बैठन पाव धुरोरे 'मधुप' गड़ोई[10] गांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 14।

बिंधवासिनी, राख, भोंरसिल, ओंरछा, देवामाता।
तुवन, अमझरा, कुड़ी, दुनातर, देवगड़, अंजनी माता।।
मोती, सिद्ध, बगाज, सदन सा, मां अबार, कूंड़ादे।
झूमरनाथ, पपौरा जा रए मेला लाल महादे।।

---

1. बरगद 2. बैलगाड़ी की बगलों में लगाई जाने वाली रोक 3. शोर-गुल 4. समाधि 5. बैलगाड़ी का टेका (स्टेंड) 6. लोटा 7. बैलों की सजावट के लिए उनके सींगो और मस्तक पर पहनाया जाने वाला कोंड़ियों से सजा हुआ मोटा वस्त्र 8. बैलों को जोतकर 9. बैलों को हाँकने वाली लकड़ी 10. गाड़ी हाँकने वाला

'मधुप' सावनी गड़ियां दैबे गाड़ी नैकें जावं मैं।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 15।

घर में अबै हैसियत नइयां जे ठल्ली भन्ना[1] रइं।
तुनतुनात[2] बासन मांजत में पटक-पटक ठन्ना रइं।।
थोंना[3] डारें गानों[4] चाने बात करत तुन्ना रइं।
चमचमात चमकें चमकुल सी चम्मोदर चुन्ना[5] रइं।।
अपनें घर की बात 'मधुप' अब की खों जाय सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 16।

घर में हती पुरानी पल्ली[6] बनवा ल्याए और नइ।
दोइ अरगनी[7] टाँग दईं सो नइ सें ऊनें दै कइ।।
रूप देख कें नइं इठला मैं सोउ ऐसइ भइ रइ।
हाँतन-हाँतन धरी फिरत ती जितै चाओ मइं गइ।।
सबके संगै जड़कारे भर अगन फूस उर माव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 17।

बूड़े स्यानन के संगै मैं बड़े जतन सें रइ।
बड्डुन के ज्वानन जनियन[8] के हाँतन जो पर गइ।।
जीने जितै चाव में तानों तानइ-तानें गइ।
देखा देखी मोंड़ा-मोंड़िन दऔ दौंदरा[9] दइ।।
उननैं जा हालत कर डारी की खों जाय सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 18।

बीचन खूँटन पिल्ला[10] पर गए ऐसी गत कर दइ।
जानइं सोसत्ती मैं जित्ती अड़ी तड़ी की भइ।।

---

1. क्रोध से व्याकुल होना 2. एकाएक उत्तेजित होना 3. मुंह (व्यंग्यार्थ, विकृतिसूचक) 4. जेवर 5. चमगादड़ की आवाज़ 6. रजाई 7. कपड़े टाँगने के लिए बाँधा जाने वाला बाँस 8. स्त्रियां 9. शैतानी 10. रजाई की रुई कहीं इकट्ठी तो कहीं खाली होने से पड़े झोल

जँगन-तँगन लग गए थैगरा[1] चिंथत चिरत फट गइ।
बड्डे भाग 'मधुप' जा जीनें जइं की तइं धर दइ।।
'दास कबीर जतन सें ओढ़ी' भइ कबीर के भाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 19।

घर में नइयां चून चनन कौ ठाकुर बरीं[2] मँगाबें।
मो दुखिया नों धुतिया नइयां कुतिया झूल सुभाबें।।
घर के मान्स[3] समातइ नइयां रोज लठैंगर[4] आबें।
घोकिया[5] घोकत रबै धौर कें अतफरया[6] लै जाबें।।
'मधुप' बीद गइ गुट्ट[7] किऐ जा कैसें किते सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 20।

एक बेर हलके में काजर दयं मौसीजू आ गइं।
बैनौता[8] खों चूम-चूम कें सूकौ लाड़[9] दिखा रइं।।
बेर-बेर छिनका[10] कें दिन भर ऊकी नाक रगड़ रइं।
नकुआ कर दए लाल आंख में उए डिमइयां भर रइं।।
हैं मौसीजू रोक न पावैं नइ आ सकें रुआव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 21।

मां मरबै मौसी सी होबै हमनें पैल सुनी ती।
पै जे तौ छिनका-छिनका कें नकुआ ताते करतीं।।
कैसौ लाड़ करें झोला में लएं केरन की घार।
निठुंअइं[11] दै न सकीं ऊखों वे देतीं एक पवार।।
सूकौ लाड़ करैं मौसी जा भइ कैनात कहाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 22।

---

1. फटे कपड़े पर अलग से कपड़े का टुकड़ा सिलना 2. पकोडी 3. मनुष्य 4. लट्ठबाज 5. विचारक 6. अवांछित व्यक्ति 7. दुर्निवार समस्या 8. स्त्री की बहन का पुत्र 9. प्यार जताने का व्यवहार 10. प्रश्वास का बल लगाकर नाक का बलगम निकालना 11. अत्यल्प (बलवाची प्रयोग)

सरम लगी सो बरा फँपूंड़ौ[1] ल्या गुर धर दै दओ।
पुरा-परौसी सब जुर आए उतै ठट्ट[2] सौ लग गओ।।
एक जनौं उनमें सें आँगें आकें सबसें कै रओ।
मौसीजू कौ जिउ तौ कब के फरा[3] पै घिउ तौ धर दओ।।
'मधुप' नें मूंड़ हिला दइ साँसी कइ हामी भर भाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 23।

भोली भले लगें मौसी पै उनइं कुदाईं[4] तक रए।
फिर नइं नाक पकर लेबें जा मन में सोस भबक[5] रए।।
हम तौ अपनी लोबन मौसीजू की देखें मुइयां।
मौसी कौ काजर निरखत का ठांड़े कै रए गुइयां।।
साँसी कएं मौसी कौ काजर भइ कैनात कहाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 24।

कभउं अकेले कभउं सँगेले गए जब-जब मौसी कें।
बड़े लाड़ सें बना गकइयां फोर देयं भर घी कें।।
हम गुर संगै खाएं तकें[6] मौसी बैठीं मौं सीं कें।
साँसी मां सी मो सी मौंसी हुइए का की-की कें।।
मां के मरें होय मौंसी जा भइ कैनात कहाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 25।

एक बात जा हमने अब तक कितउं समज नइं पाई।
गदै मौसिया कनें परै तौ फिर मौसी को क्काई।।
मो सी नइं कोउ मौंसी कै रइं आकें कत मैं आंव।
में आंउ में आउं झट्टइं बोलै सो बौ मौसी कौ नांव।।
उनने कइ बे रेंचत सुनकें ढेंचू-ढेंच[7] मचाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 26।

---

1. फँफूंदी लगा हुआ 2. तमाशबीनों का झुंड 3. पानी में उबाली हुई सूख, बासी पूड़ियां 4. पक्ष 5. फूट-फूटकर रोने की इच्छा दबाने पर भी उसका बार-बार प्रकट हो उठना 6. देखें 7. गधे की ध्वनि

काम-कूत बसकी[1] नइयां उर ठल्ले ऐंठा[2] टोरें।
गदा सें जीत न पांय रेंगटा[3] के बे कान मरोरें।।
मौं में दाँत बचो नइ एकउ, भौंकें- जैसें काटे।
कुतिया जाए पिरागै घर की हंड़िया फिर को चाटे।।
कड़ गइ रात पीसतन चकिया पारे[4] में भर ल्याव मैं।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 27।

पइसा कौ सोरहवौ हैंसा अड़की[5] जौन कुआबै।
चार कोंड़ियन[6] की बा अड़की कितै ढूंढ़बे जाबै।।
मिल रओ ऊँट एक अड़की में अड़की काँसें पावें।
डुकरो[7] सें अड़की मांगे में टका खरच हो जाबैं।।
बिना ऊँट के निगबौ[8] साजौ करन उदार न जांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 28।

ऊँगत हती भाग सें खाटें बिछीं-बिछाइं मिल गइं।
ऊँट पै चड़कें देखौ कैसी बे मलकइयां[9] लै रइं।।
हाती पीर गदा खों दागें टोटो[10] परै कै घाटौ[11]।
बैठी बैठी ऊँट पै कै रइं मोए कुत्ता नें काटो।।
कैसें उतै पोंच गव ऊपर का मिलनें समझाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 29।

ऐन डाट[12] कें ऊँट खों जौ लों अच्छौ नईं चराबें।
कुन्न-कुन्न आँतें कर रइं उर भूंकन में नर्रयाबें[13]।।

---

1. सामर्थ्य में 2. अकड़ 3. गधे का बच्चा 4. मिट्टी के दिया (दीपक) से थोड़ा बड़ा बर्तन; जिससे बर्तन ढंके जाते हैं 5. लेन-देन की एक पुरानी बहुत छोटी इकाई 6. कपर्दिका; कैल्शियम की एक प्राकृतिक संरचना, जो पहले लेन-देन के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती थी 7. बूढ़ी स्त्री 8. पैदल चलना 9. ऊँट की सवारी में ऊँट की चाल के साथ सवार की पीठ के साथ सवारी की कमर की लचक का तालमेल 10. अभाव 11. आर्थिक नुकसान 12. भरपेट से अधिक 13. मरणांतक पीड़ा से चिल्लाना

खूँटा बँदे पाँव सँदना[1] सब खाबे तनक चुआवे।
ऊँट के मौं में जीरौ फिर कब बौ का स्वाद बतावै।।
नाक में नकली डारें रओ पै राखौ पेट भराव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 30।

बे चिटाइ कौ लाँगा पैरें बनी फिरैं एनइं[2] सुकयार।
बे रिजाइ कौ कसैं लँगोटा धर रए डगैं[3] संवार-संवार।।
गतके[4] की उदार नइं राखत भलीं परीं चइयां-मइयां।
उनसें कभउं बनत नइयां पै उनके बिना सटत[5] नइयां।।
माते[6] दुके पियांर[7] में साँसी कै नइं रार बढ़ांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 31।

है नगरी अंदेर जितै के चौपटया हैं राजा।
भाजी टकइं सेर बिक रइ जां टकइ सेर में खाजा[8]।।
अँदाधुंद दरबार लगो जां गदा पँजीरी[9] खा रए।
हात पांव सुन कुठिया जिनके पेट मटुकिया[10] हो रए।।
अफरे[11] की बिआइ[12] कउं कोउ खों माँगें मिलै न गांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 32।

बैठक हंस बरन होबै जां सुआ बरन किलकोटें।
गरजें सिंघन की नाईं जा गदा बरन हो लोटें।।
जुरैं सराबी होयं जुआड़ी जितै मुँगाड़े-मुँगरा।
उतै न जइयौ भूल बिसर जां होबें लबरइ-लबरा[13]।।
करें किसोरे कुटें कड़ोरे उतै मिलै का जाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 33।

---

1. भागने से बचाने के लिए किसी जानवर के आगे के दोनों पैर थोड़ा अंतर देकर बाँध दिए जाते है। इसी बंधन को सँदना कहते हैं 2. पर्याप्त 3. क़दम 4. मुक्का 5. निर्वहन 6. जाति का प्रमुख 7. धान-कोदों-समा-फिकरा के कुचले हुए डंठल (पुआल) 8. खस्ता और कुरकुरी पूड़ियां 9. थोड़ा घी डालकर भूना हुआ शक्कर मिला सूखा आटा 10. छोटे आकार का मटका 11. (भोजन करके) तृप्त होना 12. रात्रि का भोजन 13. झूठ बोलने वाले

साँसी कबें सटोले सबकी नजरन सें उतराबें।
मूरख नों जा पनी अबेरा[1] जाकें काए सुनाबें।।
कोदन की रोटी सों चुपरौ नाहक घीउ नसाबें।
साँसे पै फाँके परबैं जां लाबर लड्डुआ खाबें।।
पथरा सी पराइ मानें जे मूंड़ न उतै पचांव[2] मैं।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 34।

भय कौ भूत पौन कौ जाड़ौ ठाड़ौ होय अगारू[3]।
भूत और फगवाए लगें, जो उनके होएं चिनारू।।
लातें सउत बाँट[4] देबें जो गइया होयं दुदारू।
और कौ जाकें पीसै का जब घरै लगी पिसनारू[5]।।
भग गए भूत बचीं चौंतइयां उतै न पूजन जांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 35।

गिरदौला[6] गोपीचंदन[7] खों बिरजो-बिरजो[8] फिर रओ।
कल्लो घर-घर मांगत फिर रइं काजर उनें न मिल रओ।।
बे का करें लगा कें काजर खुद तौ लग रइं काजर सीं।
बिन गुन चम्मोदर की मौसी लटकत हैं बे डाँगर[9] सीं।।
बिना अकल के पूत लठेंगर का कै कें समझांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 36।

मनधरया[10] तौ लोग होय उर घर में चटू[11] लुगाई।
ऊ घर में जा मान लेओ कै ठलुअन की बन आई।।
लेबा-देबा सें का करनै बीच के जो बलदेवा।
और काउ खों मिलै ना मिलै चानें उने कलेवा।।

---

1. कम समय के कारण उत्पन्न परेशानी 2. (माथा) पच्ची 3. सम्मुख 4. पशुओं को दिया जाने वाला अवशिष्ट एवं बासी भोजन 5. चक्की पीसने की मजदूरी करने वाली स्त्री 6. गिरगिट; जिसका रंग क्रीम एवं गुलाबी होता है 7. पवित्र नदियों की रज से बना चंदन 8. किसी वस्तु को पाने के लिए हठ करना 9. बूढ़ी भैंस 10. दुविधा में रहने वाला 11. एक गाली (जिसके बचपन में ही मां-बाप मर गए हों)

बिद-बिचार सें चलियो भइया निज परबार बनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 37।

आय कजंत अबेरा-आफत तौ घबरानै नइयां।
नल पै बिपता परी खूँद गइं दौ में भुँजीं मछइयां।।
रत है बन में पनी रूँद[1] कौ इतइ रखा रए चारौ।
जैसउ जेठमास फिर ऊसउ कड़ जानै बसकारौ।।
गाँज[2] बरें पूरन[3] के लेखे[4] अंत न जाय करांव मैं।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 38।

अपने चना और की सारै[5] लै नइं जायं चवाबे।
खुद कमांय खुद खांयं काउ सें बिरथा नाइं डराबैं।।
अपनों भात पराए मड़वा[6] में नईं खुआबे जाबें।
ताल में जायं मुरार[7] खोदबे उर पानी लै जाबें।।
उतइ मुरार खोद कें धो-धो पिरियां[8] भर-भर ल्यांव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 39।

भाँड़न[9] कें बराइं[10] होबें उर खसियन[11] घरै लुगाईं।
बाबा जू कें घी की चपिया भूतन कें अठवाईं।।
देन कबें बातन नइं परियौ मिलइ जायं तौ छोड़ौ।
नेव[12] न टोरौ मौ नइ मोड़ौ नइं तुम नातौ जोड़ौ।।
गुट्ट बिदी जो इनसें बीदे नइं परियौ उरझाव में।
होत नाव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 40।

---

1. खेत; जो घास के लिए रक्षित किया गया हो 2. घास का व्यवस्थित स्तूप जैसा ढेर 3. कटी घास का बँधा छोटा बोझा या पूला 4. हिसाब करना 5. पशु आवास 6. मंडप 7. मोटे कमल-नाल, जो शाक बनाने के काम आते हैं। 8. बांस की मझोले आकार की टोकरी 9. वेश्या संतानों की एक जाति; जो गाने-बजाने तथा वेश्याओं की दलाली का काम करती है 10. गन्ना 11. स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला पुरुष या पुरुषों जैसे स्वभाव वाली स्त्री (लक्षणार्थ) 12. स्नेह

जायं कितउं बातें मठोलबें[1] बैठें पौर रखा कें।
और काउ की सुननें नइयां लांमी चौंरी हांकें।।
धरती की तौ बात कनें का अतफर सरगै नाकें।
पिरान सटंगै[2] चड़ें सुनें बे फाँके और दलाकें।
नइं पूछौ तौ उपत[3] पंच बन ठाड़े रअत बताव में।
होत नाव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 41।

बातन के भन्ना[4] जे मूतें मगरे[5] पै हो चड़कें।
भारे[6] कौ जे करें पवारौ तिरपत हैं बड़चड़ कें।।
काम परै तौ होंन लगें जे कभउं दायने-डेरे[7]।
भीतर होंय बोलने नइयां उनखों टेरे-टेरें।।
ऐसन सें बचियौ नइं परियौ इनके बीच-बचाव में।
होत नाव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 4।

नौनी के नौ जँगा मायके गलन-गलन सुसरारें।
माँजै मड़ा मसखरा बैठे पांड़े ठांड़े दुआरें।।
अँदाधुंद दरबार में बैठे गदा पँजीरी खा रए।
हात-पांव सुन कुटिया जिन के पेट मटुकिया हो रए।।
अफरे की बियाइ कउं कोउ खों मांगें मिलै न गांव में।
होत नाव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 43।

ललना कौ लच्छन पलना में दिखा परत अबढारौ।
हंड़िया[8] में कौ सीत[9] टटो लओ हात न ऊमें डारौ।।
साउन में भव जौंन आँदरौ सदइं दिखात हरीरौ।
गुर न मिलो खाबे जी खों है मउवा उए गुरीरौ[10]।।
बरा धरो पराइ[11] पातर पै सब खों बडौ दिखाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 44।

---

1. मीठी-मीठी बातें करना 2. ताजी तोड़ी हुई पतली तथा लचीली लकड़ी का ऊपरी सिरा 3. स्वत: 4. बड़े सिक्कों के बदले प्राप्त होने वाले छोटे सिक्के (मुद्रा भुगतान) 5. खपरैल के ऊपर का वह शीर्ष भाग, जहां से छप्पर दो पलानियों में बँटता है। 6. उत्तरदायित्व 7. दाएं-बाएं 8. भोजन पकाने का मिट्टी का पात्र (हांडी) 9. पके हुए चावल का दाना 10. मीठे 11. दूसरे की

बिना मताइ के बिटिया बिगरें बिना बाप के लरका।
बारे नईं सँवारे जीनें ओइ के हो गए मरका[1]।।
बकबकात ठोकत जी-ती खों कउं हो जात ठुकाई।
बुकरा की मताइ कब तक नों नचै अधाइ-बधाई।।
जिदना छुरी चलै घिचकी[2] पै उदना[3] कियै सुनाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 45।

अंड-गंड[4] नइं कितै का कनै कैसी मौ हो कड़ गइ।
लइ उठाइ उर जीब जितइ तरुआ लौं उतइ पटक दइ।।
गैल झारकें निगौ लगै नइं कभउं पांव में कांटौ।
गेंवड़े[5] डरी बरात होय तुम नइं बोंड़ारें[6] बाँटौ।।
सबकी नजरन ऊँचे रइयौ समझ-बूझ बरताव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 46।

तिली उरेला[7] जायं पिरावे देखें कोलू लाँटे[8]।
कबै हाँकवे टेरत कक्का हेरें रत ते बाटे।।
घानी[9] पिरत संवारत जौ लौं बैल तुरत भओ ठांड़ौ।
टिटकारें[10] नइं निगै हतो पै ऐंन आकरौ[11] चांड़ौ[12]।।
आँखन पट्टौ बँदो बैल खों हाँकत ते मन चाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 47।

घानी के ऊपर मूड़ा पै गरओ[13] टँगो तो पथरा।
गरओ गदेलो[14] खिचै घूमतन बैल जात तौ चकरा।।

---

1. सींगों से मारने की आदत वाला (पशु) 2. गर्दन 3. उस दिन 4. समझ-व्यवहार 5. गांव की आसपास की भूमि; जिसका उपयोग ग्रामीण शौचादि करने के लिए भी करते थे 6. विवाह में भेंट के रूप में लाई गई साड़ियां 7. पौधों को उड़ेल कर निकाली गई तिली 8. तेल पेरने के कोल्हू में तिर्यक रूप से चलने वाली लकड़ी; जो तिलहन को कुचलती हुई चलती है 9. तिलहन की उतनी मात्रा; जो कोल्हू में एक बार में पेरी जा सके 10. हाँकने का स्वर 11. (ज़रूरत से ज़्यादा) तेज चलने वाला 12. उतावला 13. भारी 14. धनुषाकार लकड़ी; जिसे बैलों द्वारा खींचा जाता है

लुखा-लुखे सें नै देबै बौ लौटी जोरै मेलै।
मोरा[1] नइं बँद जावै जौ लौं घान डाट कें पेलैं।।
हम हाँकत ते खर[2] की लोबन 'मधुप' खों मिलै हँकाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 48।

डरी पकोइं[3] पिड़ी[4] हंड़िया में बा तौ कड़ी कुआबै।
कौनें में जो गड़ी मड़ा में उखरी[5] उए बताबें।।
डबला[6] में से तेल काड़बे रात दिना जो ठांड़ी।
ऊखों कै रए परी, चलत जो उए बता रए गाड़ी।।
रोउत-गाउत हँस खेल सबइ के चल रए चका घुमाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 49।

साउन लगे आम की डारन डारकें झूला-झूलत ते।
पनी बजाउं तान रए ज्योरा टाँग सें पटली ठेलत ते।।
ठांड़े-ठांड़े कोउ झूलबे ललचत हेरत[7] कूलत[8] ते।
जो झुलाउत ते घाल-मिचक्की[9] मन में भारी फूलत ते।।
नौनों लगत हतो, बे झूला भरे 'मधुप' के भाव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 50।

पनी-पनी गाड़ी संवारियो तन की होय कै मन की।
बनी रबै चंगी चौरंगी प्यारी सबइ जनन की।।
खिलकट[10] भइ, चैंकें[11], ढक्का[12] दयं फिर नइ चलै अगारी।
जँजर-पँजर[13] भइ तौ हो जाबे सबरन खों कुप्यारी।।
'मधुप' पगइया डोर हात में लयं रइयो बरताव में।
होत नांव चलती कौ गाड़ी भइया अपने गांव में। 51।

---

1. छिद्र 2. तिलहनों से तेल निकाल लेने के बाद बचा फोक 3. पकोड़ीं 4. प्रविष्ट 5. ओखली 6. मिट्टी का लोटे के आकार का पात्र 7. देखते हुए 8. पीड़ा के कारण 'उंह' का स्वर; जो सांस के साथ बार-बार निकलता है। 9. झूले की पेंग 10. जिसके कील-पुरज़े ढीले हों 11. चिकनाई की कमी के कारण घर्षण या घूर्णन वाले स्थान पर चूं-चें की आवाज़ होना 12. धक्का 13. जर्जर-(अस्थि) पंजर

काम करत उर राम भजत ते

बुड़की[1] लैबे, मेला देखन चाय बरातन जा रए।
सोंक साइ की गाड़ी पै मन कइअन के ललचा रए।।
भर-भर फट्ट नाज अँगने में बनी खौड़ियन[2] भर रए।
तीन साल नौ कुठियन में बिन घुने कनूका[3] कड़ रए।।
गोबर की बा खाद डरत ती नाज न आउत घुनाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।1।

बगर भरो रत तौ गउअन के कंडा खूब पथा रए।
घूरे भरे लबालब खेतन में डरबे मुस्क्या रए।।
खूँट पोतनी[4] लगें सुआंने गेर-गेर पुतवा रए।
गोबर सद्द[5] ल्यान कें रोजउं घर आँगन लिपवा रए।।
सुगर सलोनी के हाँतन सें अरे खूंट परवांव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।2।

बाँद नेंतना फूल[6]-मथानी ल्याकें डुब्ब उठा रइं।
दइ सें भरी मटकिया जी खों दो-दो जनी[7] भुमां[8] रइं।।
फुलक-फुलक कें मठा भांय नैनूं[9] लौंदा[10] उतरा रए।
नन्नइया नव नैनू मांगत खाकें मौं मिठया रए।।
होंय जसोदा लिंगा कनइया जैसे लगत दिखाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।3।

---

1. मकर-संक्रांति के त्योहार पर लेने वाली डुबकी 2. अनाज रखने का भूमिगत बखार 3. अनाज के दाने 4. सफेद मिट्टी; जिससे दीवारें आदि पोती जाती हैं 5. सद्य (ताज़ा) 6. मथानी में संयुक्त फूल के आकार का चाक 7. महिलाएं 8. मटकी में रखे दही को मथानी से गोल-गोल घुमाना; जिससे उसका घी उतरा जाए 9. नवनीत (मक्खन) 10 जमे हुए मक्खन का पिंड

मठा तीसरौ धौंन[1] बुँदेलन बासन लैकें आ रइं।
मोरी गइया बियानी[2] नइयां बैठी बिथा सुना रइं।।
लैकें संग भरा के चपिया बतरा-बतरा[3] आ-जा रइं।
नाइं न कोउ सें करत बनत ती चाय बे रोजउं आ रइं।।
औसर आंय भावनों[4] पुजरओ फूल मथानी भाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।4।

मांगे से नइं दिऔ काउ खौं हर में लगी हरैनी।
किलम, पोतला[5], घरी, चौंरिया[6] कौनें टिकी परैनी।।
'अबइ देत' कै नइं लै जाबैं घर में लगी निसैनी[7]।
पै अबतौ बुइ[8] में दै डारत घर की भली घरैनी।।
बुइ कौ बैल बसत आचारौ चरनैं परै दबाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।5।

एक बेर खा जाय गुलेंदौ गइया लपकइ जाबै।
धौर धौर कित्तउ भगाव पै बा मउआ तर आबै।।
मउआ-मेवा बेर-कलेवा गुलगुच[9] मिलै सुभीतें।
रीत जायं दिन-रात भरत इन पेटन ने जग जीतें।।
साजी 'मधुप' झुपड़िया अपनी जो मिल गओ सो पाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।6।

---

1. धोने से निकला पानी या अन्य तरल पदार्थ 2. पशुओं का बच्चा होना 3. इठला-इठला कर बात करना 4. दही विलोते समय मथानी को सीधा खड़ा रखने के लिए सहारे को गड़ी हुई लकड़ी। मथानी एक रस्सी से इससे संयुक्त रहती है, ताकि वह घुमाने वाले की ओर न खिंचे 5. गोल पेंदी की चपटी सुराही; जो बगल में टाँगी जा सकती है। किसान इसका उपयोग हार-खेत में करते हैं 6. खजूर के चीरे हुए पत्तों से बना छोटा चंवर; जो मक्खियां उड़ाने के काम आता है 7. सीढ़ी (लकड़ी या बांस की) 8. एक पद्धति; जिसमें चारे पानी की उचित व्यवस्था न हो पाने के कारण बैल किसी दूसरे व्यक्ति को निश्चित अवधि के लिए इस शर्त के साथ दे दिया जाता है कि वह उसे खिलाए-पिलाए तथा जोते। ऐसी स्थिति में लोग उसे खिलाते-पिलाते कम है और जोतते अधिक हैं 9. महुआ का पका हुआ फल (महुआ-मेवा बेर-कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाई, जे सब चीजें चानें होय तो बुंदेलखंड में करो सगाई)

मोअ राम ने का कर लओ मर गओ सो औरओ कर लओ।
चट्ट राँड़[1] पट्टइ ऐबाती[2] होकें करम नसा दओ।।
चैते[3] चुका दियौ उदार कौ नुंगरौ[4] हमें उठा दो।
मुन्स की छाती एक बार जे कै रइं बेउ पटा[5] दो।।
चैंथी आँखें लगीं कबें तौ तुरकी झेलें ताव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।7।

गुर के संगै खर खा रए उर कभउं खायं खर मूरा।
तेंदू, मउआ, आम, चिरोंजी, इमली, ताड़, खजूरा।।
फाँद खोद कें भूँजत खा रए कउं खजरी के गावे[6]।
मीठी लगत हती गुमची की जर जो कउं मिल जावै।।
रोग दोख सब दूर रअत ते बैद घरै नइं जांव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।8।

भले कोउ कए का कै रए तुम जी कौ अंड न गंड है।
देस हमारौ जिला ललितपुर विस्व बुँदेलखण्ड है।।
संसद सबइ अर्थाइं, परिसद बैठक अपनौ मंच है।
सरस साहित्य संगम में बैठत बेइ हमाए पंच हैं।।
पैलउं पुरखन नै कै दइं फिर 'मधुप' बेइ पछयावं में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में।9।

सहसानन[7] खों डार गरे में बैठे ते पंचानन[8]।
चेला हतो दसानन[9] देखत हँसन लगे चतुरानन[10]।।
एक बगल में हँसे गजानन[11] औरइ बगल षडानन[12]।
बैल चोंखरौ[13] मोर खुसी भए मस्ती में सिंघानन।।

---

1. जिसका पति मर गया हो (विधवा) 2. सधवा (स्त्री) 3. विक्रम संवत् का पहला माह; जिसमें किसान रबी की फसल प्राप्त करता है 4. लहँगे के साथ ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी 5. यहां 'पटा' द्वयर्थी है; एक का अर्थ चुका देना है तो दूसरे का अर्थ फाड़ देना है 6. तने का भीतरी मुलायम भाग; जिसे लोग खा लेते हैं 7. हज़ार मुंह वाले (शेषनाग) 8. शिव 9. रावण 10. ब्रह्मा 11. गणेश 12. स्वामि-कार्तिक 13. चूहा

तकैं मोइं मों रबैं मोइ मों सबके 'मधुप' सहाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 10।

बिरमा जू की बेटी सीता सावत्री ती जौन।
बनस्पती के तिलक सोम खों सौंप दई ती तौन।।
संकरजू की हती असोक सुंदरी कुंवारी बेटी।
ऊपर बन गव टीलौ नैंचे करें तपस्या बैठी।।
जमो उतइ असोक कौ पेड़ौ उतई भजें हर भाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 11।

राम जपत कइलास गिरी पै बैठे हते महेस।
स्वामि कारतक के संगै मइं खेलत हते गनेस।।
हाती सौ मों देखे कै रए देखौ तौ जा सूरत।
एक दाँत उर हाती जैसे कान बिकट जा मूरत।।
बे चिड़कें[1]-चिड़काउत जायँ बे उनके बारा नाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गाँव में। 12।

मौ मिठया भर पीक[2] गनेसजू ने जब सूंड़ पसारी।
छै मों बारन ने आँखें सब एक एक गिन डारीं।।
गुर्[3] भरी छै मों बारू ने उनके कान उमेंठे।
बे चिल्याने ओ मताई! हेरंब[4]! रायं मइं बैठे।।
कत हेरंब धौर कें आ गइं पारबतीजू ताव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 13।

रो रओ काए? गनेसजू ने कइ ईनें कान उमेंठे।
बारइ पुरा भिड़ा दए तुरतइं छै मौं बारे ऐंठे।।

---

1. किसी के प्रति घृणा या क्रोध का भाव प्रकट करना 2. तरल पदार्थ 3. बदले की भावना 4. गणेश का अपर नाम

आंखें काए भिड़ाइं बता? बे बोले – नाव बिगारे।
बारइ नाव आज सें सबके बिगरे काम संवारें।।
मइया की ओली में बैठे गनपति मन मुसकाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 14।

सुमुख, कपिल, गजकरन, बिनायक, गणाध्यक्ष, गजआनन।
धूम्रकेतु उर बिघन बिनासन, लंबोदर, बिकटानन।।
भालचंद्र उर एकदंत जीने जे नाव उचारे।
हलके-बड्डे काम सबइ गनपत जू आन संवारे।।
'मधुप' नाव जो लै लेबें नइं रैबें कभउं तनाव में।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 15।

अंतस में तुम हौ जब तक सो दुनिया सें सौ नाते।
रोजउं घर में चलें कुनैते[1] चकिया चूले जाते[2]।।
हाँतन धरे फिरत सब कै रए दाऊ दद्दा माते।
जेठ के चिलचिलात[3] घामें हो जात सीयरे[4] साँते।।
हे परमात्मा सबके संगै रइयौ 'मधुप' सहाव मे।
काम करत उर राम भजत ते भइया अपने गांव में। 16।

---

1. इसके दोनों पाट मिट्टी के होते हैं। नीचे के पाट के बीच में लगा लकड़ी का कीला ऊपर के पाट के बीच में लकड़ी की जइ में फंसा रहता है, जिसे हाथ से चला कर धान इत्यादि दला जाता है 2. जतरिया; जिसके दोनों पाट पत्थर के होते हैं और दाल दलने के काम आता है 3. प्रकाश का परावर्तन (चमकना) 4. दोपहर ढलने के बाद अपेक्षाकृत हुआ ठंडा वातावरण

देइ-देउता सब मिल मनाउत ते

एक राच्छस तारक कौ जब बड़ गव उतलाचार[1]।
बिरमा ने देवतन के संगै मिलकें करो बिचार।।
भोले बाबा बिना कोउ नइं बिपत टारवे बारौ।
पौंचे सब कइलास अगन देवता ने जाय पुकारौ।।
भोले उठे बायरें[2] आए पारबतीं भइं ताव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में।1।

दई सराप देवतन खों तुम बिन संतान के रइयौ।
आइं जितेक देवतन संगै बे सब बांझ कुअइयौ।।
हांत जोर देवता बोले मां! जा बिनती सुन लइयो।
'मधुप' बुड़ापौ और मौंत इन दो सें हमें बचइयो।।
अमर भए उदना सें देवता इमरत पान करात में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में।2।

देवतन सें जा कला सीख सब इमरत पान करत ते।
पैदा होएं मांस धरती पै मरत न कभउं हते ते।।
बिना बुड़ापौ मौंत मांस सब देवतन जैसे हो गए।
इमरत के कारन भूमा देवी पै भार बड़त गए।।
बिरमा जू सें तब संकर जू लगे उपाव बताव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में।3।

बूड़ो जब तक होय न ऊकी मौत कभउं नइं आवै।
बिना अन्न के खांय बुड़ापौ लिंगा तलक नइं आवै।।

---

1. अत्याचार 2. बाहर

धान रूप में संकर जू ने धरो अन्न औतार।
गोंउं-रूप[1] में पारबती भइं करन भूम उद्धार।।
बिसकरमा धरती जोते खों भए औजार बनाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 4।

गांवन-गांवन बने चौंतरा चौथ-जात्रन[2] जावें।
बैसादुर[3] नों गड्डुआ[4] ढारत, फिर हम होंम लगावें।।
कारसदेव देव कत कोऊ, कोउ देहरे[5] मना रए।
भर कैं भाव घोलना[6] खूँदत दै डिड़कारी आ रए।।
बिंतवार[7] ठांड़े हो पूंछत मनसा पूरत चाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 5।

बलदाऊ जू भए कलजुग में सवाई सूरजपाल।
कमल कनइया फूलन देव कौ रूप धरो गोपाल।।
बेंदामन गोटिया जनम लै आ गए दामा ग्वाल।
सहोदरा सरनी की बेटी ऐलादी जग ज्वाल।।
मनसुख हीरामन दादा भए भगतन के बस भाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 6।

जुरे गोटिया[8] तान सुरीलीं भरकें गोट सुनाबें।
मन मोरा पै बैठ कनइया घोलना भाव भराबें।।
लीलागिर चौकी पै बैठत सेली हात घुमाबें।
ढोर[9], बछेरू, गाड़र[10], छिरियन के सब रोग मिटाबें।।
सुनत फिराद[11] घोलना दै रए सबै भबूती[12] भाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 7।

---

1. गेहुंआ वर्ण 2. भाद्रपद माह की चतुर्थी तिथि को आयोजित होने वाला वार्षिक पर्व 3. वैश्वानर; पूजा में होम लगाने के लिए अग्नि 4. बड़ा लोटा 5. देवगृह 6. व्यक्ति; जिसे किसी ग्राम्य देवता का आवेश आता हो 7. देवता से विनती करते हुए याचना करने वाले लोग 8. देहरे पर चतुर्थी तिथि को गांव के लोग इकट्ठे होकर कारसदेव की प्रशस्ति (गोट) गाते हैं और पैरों पर ढांक रखकर छोटे से टेढ़े डंडे से बजाते हैं 9. पालतू पशु 10. भेड़ 11. फरियाद 12. होम की हुई अग्नि की पवित्र राख

कोड़ी और आँदरे मंगल की जब सुरत करावें।
जीनें देव खों बना दऔ तौ ऊ घुरवा पै आबें।।
मनसा पूजें जो चौतइया पै जा होम लगाबें।
अनबियानी बाँजन गइयन में हेरत दूद कड़ाबें।।
खीर गुर डरी और खुरोरू[1] भादों-चौथ चड़ाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 8।

करनाटक कौ कासमीर जो मलेनाडु में भई ती।
निरमल सुमति सुता इकलौती देवी अक्क हती ती।।
भजों दिगंबर रहों दिगंबर जो प्रन नइं टोरत तीं।
सिर के जटा और तन ढाँकें रत्तीं सिव भकतन तीं।।
महादेवि यक्कनपुरान की जा सत कथा सुनाव में।
देइ-द्योता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 9।

रामसाह झांसी की पतनी नें दो बिटियां जाईं[2]।
हो गइ धन्न बाथरी माई पा कें करमा बाई।।
पदमाजू सिवपुरी खों ब्या दइ बेपारी[3] हरसाई[4]।
रामसींग राठौर खों छोटी धरमा दइ पौंचाई।।
आइ अचीती आफत घिर गई करमा भई घिराव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 10।

नरवर के राजा ने ऊखों कर डारो हैरान।
भगे नैतरा गांव रन लगे जाकें राजस्थान।।
पती पूत ने संग छोड़ दओ बन गई ती बैरागन।
पुरी ओड़िसा के मंदिर में लगा लई ती आसन।।
जगन्नाथ आकें माँगत ते कर मां खिचरी खांव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 11।

---

1. नारियल की गरी 2. पैदा की हुईं 3. व्यापारी 4. प्रसन्न चित्त

गोरख, नामदेव, गुरुनानक, तुलसी, सूर, कबीर।
धन्ना, मीरां, कूवा, गोरा, सेना, नरसी धीर।।
तुकाराम, नाभा, सुंदर, दादू, रज्जब, रैदास।
चोरवां मेला, ज्योतिबा फुले, सदनशाह, हरिदास।।
जे अभंग[1] गुरुग्रंथ साब, रामायन सुनी-सुनाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 12।

बीर सींग ओड़छा के बेटा जू हरदौल हते ते।
भइया बड़े जुझार की रानी चंपा ढिंगां हते बे।।
चुगलयाए[2] भइया के कए पै भौजी[3] बिस दै दए ते।
खाली हांत हिमाचल भइं उर बिजय बाप बिन भए ते।।
फूल बाग में बनो चौंतरा फिर हो गए हर गांव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 13।

भानैजन कौ ब्याव बिचारें ते कुंजा के भाई।
बेरछा राजा देवी सींग सें हो गइ हती सगाई।।
न्यौतौ धरो चौंतरा पै जा अँसुअन झरी लगाई।
आपउं सब सामान पोंच गव कुंजा गइं हरसाई।।
चीकट[4] लै हरदौल पोंच गए भानेजन के ब्याव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 14।

राजा पिथवी सींग ने अपने नांव पै गांव बसाऔ।
पनें सिपाइ राजेंद गिरी खों झांसी में पौंचाऔ।।
बदलो नांव अनूप गिर उननें झांसी किलौ रखाऔ।
पुरा गुसाइं बसा कें जिननें राज मोंदहा पाऔ।।
उनकी आज गुसाइंन माता नांव है पुजे-पुजाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 15।

---

1. संत नामदेव द्वारा रचित पद 2. इधर की बात उधर कहने का आदी 3. बड़े भाई की पत्नी 4. शादी या उत्सव में बहन, बहनोई के लिए कपड़े, आभूषण आदि

उनके कुल में भए नरेंद गिर मोंड़ी मोंड़ा नइं ते।
एक दिना उनकी चौंतइया लोग-लुगाई गए ते।।
करी निगा[1] गुसाइंन माता ने भइ आँगन किलकारी।
ओइ दिना सें पूजन लग गए बनो चौंतरा भारी।।
दूद पूत मंदर में जाकें मांगे मिलै सो पाव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 16।

कछू हिरानो कछू पिरानो[2] कै कोउ कितउं डरानौ।
चौंतइया नो धन्नौ धर दऔ सो मिल जाबै जानौ।।
आज दबाइं[3] चलीं जितनी उतनीं बेजारीं[4] बड़ गइं।
संजम करौ बिना औखद[5] के ताप तिजारीं[6] मिट गइं।।
दूद पिअत ते भर भर बेला रोटी घी चुपराव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 17।

मड़इ पीर, नट कुंवरसाब उर रक्कस गोंड़ बुँदेला।
मेंतर बाबा बिरम देव उर बूड़े बाबू दूला।।
नारसींग तेजार अंजनी गौरइया हिंगलाज।
मंछामाता मरी खोंखरी अछरू सिद्ध बगाज।।
नानादेइ 'मधुप' मैलावर कित्ते देव मनांव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 18।

रायसेन, मंडला, उदयगिर, ऐरन, गड़कुण्डार।
गड़ा कोटरा, गैबिनाथ, सरभंगा, पथर कछार।।
पन्ना, झांसी, पवा, छतरपुर, दतिया नचनाहार।
चित्रकूट, कालिंजर, महुआ, मारकुड़ी, औ (अ)हार।।
रिसियन बेलाताल धारकुड़ी, मन के दरसन पांव में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 19।

---

1. दृष्टि 2. पीड़ा होना 3. दवाएं 4. बीमारियां 5. औषधि 6. दो दिन के अंतराल पर आने वाला मलेरिया बुखार

बटिया गड़, देवगड़, चंदेरी, ओड़छा के सरकार।
टीकमगड़, भेलसा, ललतपुर 'मधुप' सुनगर बिजाउर।।
मइहर और अमरकंटक उर भीमकुंड की धार।
मड़खेरा, ऊमरी, पपौरा तीरथ इतइ हजार।।
और कितउं नइं जांव पनौ जिउ इतइ बैठ बिलमांव[1] में।
देइ-देउता सब मिल मनाउत ते भइया अपने गांव में। 20।

1. व्यतीत करना

कत्ते हुरयारे 'होरी है।'

हिलक-मिलक[1] की सौगातें सब मिलत हती तीं।
जम कें होत हतीं बरसातें भर पिचकारी होरी में।।
रस में भींजत निचरत जा रए दोरन-दोरन होरी में।
कंसुर[2] बजे कोउ के बाजे समर जात ते होरी में।।
बिदे गाँगरे[3] निनुर जात ते सब अथाई पै गांव में।
कत्ते हुरयारे 'होरी है' भइया अपने गांव में।1।

कैसउ होय दुसमनी सब हो ताप लेत ते होरी में।
गाँस गुड़ी कै लगी फाँस सब बार देत ते होरी में।।
कजन गिलाव[4] छबाव काउनें धो डारत ते होरी में।
मन कौन मैल औ तन कौ तैल न तनकउ रत तौ होरी में।।
अब तौ 'मधुप' दलाँकत अपनै आंखें काड़त ताव में।
कत्ते हुरयारे 'होरी है' भइया अपने गांव में।2।

गांव में कोउ की भई लराई तो ओई नै दोरै होरी में।
फागै गाउत बजाउत नगरिया ढोल मजीरा होरी में।।
लइ गुलाल मिल-मिला कें मल दइ बचो मलाल न होरी में।
का मजाल उफ करी काउ ने चार जनन नों होरी में।।
मोंगे मोंगे 'मधुप' माँग रए बे दिन फिर कां पांव मैं?
कत्ते हुरयारे 'होरी है' भइया अपने गांव में।3।

चंगा-मंगा-रंगा-गंगा जे हुरदंगा होरी में।
लरत फिरत बीदत बिदऊत जे कउं अड़बंगा[5] होरी में।।

---

1. हिलना-मिलना 2. हल का एक पुरज़ा 3. बेसुरे 4. कीचड़ 5. अटपटा

अरौ जौन घर कौ होबै सब हुरयारे मिल होरी में।
कत ते मानत ते रत ते सब नौने-नीके होरी में।।
बर्राटन कैसी बातें अब आ रइं 'मधुप' सुनाव में।
कत्ते हुरयारे 'होरी है' भइया अपने गांव में।4।

दरसन करत बैठ मन-मंदिर

जनवा लिखे लेख लख[1] लाखौ लख-लख लिखना-लिखना!
लखे लेख उर लिखे न लिखना तौ लिखना का लिखना।।
लिखे लेख खों लाखन लखबें, लिखना ऐसे लिखना।
लखें न लेखें, लिखे-लिखाए, लिखना ऐसे लिख ना।।
लिखना लखबे लिखबे बारे 'मधुप' न लखत-लखाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।1।

को मैं? सो मैं! तो में सो में सब में उनकी झलक अपार।
त्वम् ब्रह्मासि[2], अहं ब्रह्मास्मि[3], तत्वम् असि[4], त्वं तदसि[5] विचार।।
चारउ महावाक्य की व्याख्या जोगी अनूचान[6] कौ सार।
चार जनैं मिल-बैठ करत ते सुन कें अपनो आत्म सुदार।।
मंदिर में बैठे मन थिरकर 'मधुप' मस्त निज भाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।2।

जौ संसार ढिएं[7] नइं जीमें ऐसौ भरो समंदर।
कितउं भौंर[8] तौ कितउं लहरिया चल रए आँदी-अंदर।।
मगरमच्छ हलके-बड्डे जां जिए चाय सो कर रए।
हँस रए, गा रए, लर रए, मर रए कोउ हिलकियां[9] भर रए।।
बूड़[10] जात, कोऊ उतरा रए, कोउ पैरत[11] 'मधुप' भराव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।3।

---

1. देखकर 2. तुम ब्रह्म हो 3. मैं ब्रह्म हूं 4. वह तुम हो 5. तुम वह हो 6. अनिर्वचनीय; जिसके लक्षण आदि अवर्णनीय हों 7. किनारे 8. भंवर-जाल 9. सिसकियां 10. डूब 11. तैरते हुए

सांवरिया तोरे दरसन खों मोरी तरसत रइं आंखें।
सोचत-सोचत रात-दिना बादर सी बरसत रइ आंखें।।
भली रबें दुनिया वारन की आंखन पै मोरी आंखें।
कबै किरपा की कोर करें मोरे ऊपर तोरी आंखें।।
बे आंखें मुस्कान भरीं इन आंखन दरसन पाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।4।

जिन आंखन में सब दुनिया है उर दुनिया भर की आंखें।
सब की आंखन में हो झांकें जिनकी आंखें बे आंखें।।
रोउत रबें हम, गाउत रबें पै देखत रैबें बे आंखें।
दुइ की दुनिया मिट जाबे सब एक बनी रेबें आंखें।।
'मधुप' सफल हो जाय जनम इन आंखन दरसन पाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।5।

और काऊ की आंखें देखें लिड़याबें[1] नइं जे आंखें।
लड़याबें[2] कै लाड़ करें तो जे आंखें कै बे आंखें।।
लड़ आबें कउँ और सें आंखें लुड़याबें[3] नइं बे आंखें।
अँसुवा भरे रबें जे आंखें पै मुस्क्याबें बे आंखें।।
आंखन को सनेव नइं टूटे भाव में और कुभाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।6।

हँसी हेम औरन खों देकें अब सिड़यान[4] लगीं आंखें।
नफरत रोम-रोम में भिद गइ हिलकीं भरन लगीं आंखें।।
आंखइ-आंखें अखया-अखया[5] जब लिड़यान लगीं आंखें।
अरे सांवरे! तनक डार दो 'मधुप' की आंखन में आंखें।।
आंखें काड़ें कोउ नटेरै मूसर नइ पलटाव मैं।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।7।

---

1. (संकोच से) लज्जित होना 2. लाड़-प्यार के कारण मुंह लगाना 3. (मुहावरा) आंखें पथरा जाना 4. विवेकशून्य होना 5. देख-देख कर

पलकन के पांवड़े बिछा कें बाट हेर रइं जे आंखें।
दोइ पुतरियां डार बिछौना अगवानी कर रइं आंखें।।
कांहो? कैसें? कबे-आउत! अब मीच न पा रए जे आंखें।
एक बेर आ बैठ जाओ बस 'मधुप' धन्न हो गइं आंखें।।
आंखन-आंखन मिटे लराई आंखन दरसन पांव मैं।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।8।

कोउ कै रए कै जे घर अच्छे कोउ कै रए बे घर अच्छे।
जे घर अच्छे, बे घर अच्छे, घर से घर तो घर अच्छे।।
मन थिर हो न सके, का मंदिर? फिर तो फूटे घर अच्छे।
जी घर में तुम हो सो घर है, नइं घर सें बेघर अच्छे।।
'मधुप' के घर के दो दोरे हैं, आव एक सें, जावं मैं।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।9।

जित्तीं सांसें बचीं बड़ी अनमोल हैं उनें बचा लो।
उतनइ में गीता गाबे बारे के गीत तो गा लो।।
दिन में ऐसे काम न करियो रात ऊँग नइं आबे।
रात न ऐसो करियो दिन में मौ बताव न जाबे।।
को मैं? सो मैं? तो में! मो में! 'मधुप' झांक निज भाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।10।

संगत करी गीत गा लए पै गीता गाइ न जौ लों।
गीता में गोता लगाए बिन मन मल गरो न तौ लों।।
'मधुप' जुगल जोरी श्री राधे कृपा-सुधा नइं जौ लों।
संत-महंत सबइ कत जिउ की गत सुधरै नइं तौ लों।।
आराधे राधे! आ राधे! गीता तागी भाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में।11।

मांगत रए उमर भर जित्तो हतो भाग में मिल गओ।
मिल नइं पाओ तौन के सोसन काए दूबरौ हो रओ।।

नौनी-बुरइ मांग, मांगत जौ मन पूरौ मैलो भओ।
मांगत, पाउत, बूड़-बूड़त, तन 'मधुप' ने बूड़ो कर लओ।।
अब मांगत हरि चरनन की रज मगन राम गुन गाव मैं।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में। 12।

मैं को आंव? कितै सें आओ? भ्यानें कां खों जानें।
जेउ न जान पाव मैं अब लों, माने कोउ न मानें।।
मैं को? हों मैं! ऐसइ सोसत बैठो रहत बिचारत।
कोउ कितउं सें आय बताबे देखों आंखें फारत।।
बीच-बीच में कूत-खांड़[1] बिन लिख लओ मन समझावं में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में। 13।

सांवरिया आकें संवार लो बाट हेर रइं जे आंखें।
गेर-गेर जग हेर-हेर हरि! हार, हेर रइं जे आंखें।।
देर-सकेर आइं चरनन में डरीं टेर रइं जे आंखें।
फेर परो सब दूर करो जो नजर फेर गइं बे आंखें।।
'मधुप' की बिगरी संवर जाय सब आंख में आंख मिलाव में।
दरसन करत बैठ मन-मंदिर भइया अपने गांव में। 14।

1. जानकारी

जा बुंदेली भूमि इतै की

भेदभाव सब जनै भुला कें अंतस के पट खोलौ।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ॥
जमना, सिंध, पहूज, केन उर बाघिन, बीला, पतनइ।
उर्मिल, रेवा, हिरन, धसान उर नदी उटारी, बानई॥
सजनम औ सहजाद, रोहिणी, जामनी संग जो बै रईं।
नदी सोनार, बेतवा, सुखनई सबई कछू तौ दै रई॥
गंगा जैसो नीर सबई कौ अपने कलमष धो लो।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ।1।

ललितपुर बनगुवां लहचूरा झांसी खोदें कड़ रए।
जो पाषाण काल की बातें आंखन देखी कै रए॥
सबई जुगन में ई भूमी पै बीर बलाकारी भए।
भस्मासुर के भय से भोले छिपे पचमढ़ी में रए॥
सरगै बैठे देउता ललचत ई धरती पै हो लो।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ।2।

जरासंध के डर सें भग कें छोड़ दुआरका आ रए।
जीराखों तक भगे कन्हैया हैं रनछोर कहा रए॥
एक साल अज्ञातवास में धरम पंडवन रै रए।
व्यास, पराशर, तुलसी जैसे ज्ञानी कवी इतै भए।
सुन पुरान इतिहासन के उर उन पन्नन खों खोलो।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ।3।

जमना नदी नर्बदा चंबल टोंस नजर दो मानो।
छत्रसाल, आल्हा-ऊदल की बीर भूमि सब जानो॥
कालिंजर, दतिया, चंदेरी, नगर ओरछा, ढानो।
पन्ना, सागर, गुना, छतरपुर, बानपूर, कालपी नो॥
लक्ष्मीबाई की झांसी जा इतई बसेरो लै लो।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ।4।

जिला इकईस बुंदेलखंड के कोउ-कोउ तेरा कै रए।
बुंदेलखंड को राज सलोनों जी में सब हो रै रए॥
बीस महल छत्तीस किले उर गढ़ इकईस दिखला रए।
दो सौ इकसठ गड़ी खंडहर अपनो हाल बता रए॥
जनम-जनम लौ 'मधुप' इतइ सब हिल-मिल खेलौ-डोलौ।
जा बुंदेली भूमि इतै की सब हो जय-जय बोलौ।5।

•••